सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 3 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2010 ★ चैत्र, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी।
गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी
एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...
॥स्वर्णतीर्थ॥
प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक
रतनलाल सी. बाफना
ज्वेलर्स
सोने • चांदी हिरा • मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव • औरंगाबाद • नासिक ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

कोबा (गांधीनगर) पि.३८२००९

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तओ से दंडं समारभइ,
तसेसु थावरेसु य।
अट्ठाए य अणट्ठाए,
भूयग्गामं विहिंसइ॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.8

त्रस या स्थावर जीवों पर फिर वह,
करता दण्डप्रयोग मुदा।
निरर्थक हो या सार्थक फिर वह,
प्राणिहिंसारत रहे सदा॥

मार्च, 2010

वीर निर्वाण संवत्, 2536

चैत्र, 2067

वर्ष 67 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	समणेणं भगवया महावीरेणं	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	गुरु सम दूजा घड़त नहीं	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	दर्शन विशुद्धि से पवित्र एक ज्ञान-पुंज चारित्र	-मधुर व्याख्यानी जी गौतम मुनि जी म.सा.	17
नाटिका-	अध्यात्म चेतना के उन्नायक	-डॉ.रमेश 'मंयक'	21
प्रासङ्गिक-	आधुनिक विश्व के परिदृश्य में जैन धर्म-दर्शन	-डॉ.धर्मचन्द जैन	29
	स्कूलों में महावीर जयन्ती	-डॉ.दिलीप धींग	52
शोधालेख -	भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(8)	-प्रो. सागरमल जैन	35
	विपाक सूत्र में वर्णित दुःख विपाक की कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन	-डॉ. हुकमचन्द जैन	55
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (3)	-श्री सम्पतराज चौधरी	40
	श्री हस्तिमल्ल शतक (3)	-श्री सुमन्त भद्र	45
	हस्ती-गुणसौरभ (3)	-श्री कस्तूरचन्द बाफना	48
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (56)	-श्री धर्मचन्द जैन	62
उपन्यास-	सुबह की धूप (13)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	65
युवा-स्तम्भ-	युवाशक्ति और समाज	- श्री पदमचन्द गाँधी	70
नारी-स्तम्भ-	क्या खोया और क्या पाया? (3)	-श्री पारसमल चण्डालिया	73
स्वास्थ्य-विज्ञान-	स्वर और स्वास्थ्य	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	77
बाल-स्तम्भ -	संयम की सीख	-श्री सुभद्र मुनि जी	82
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (3)		86
परिणाम -	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (24) का परिणाम		88
	आ.शिक्षण बोर्ड परीक्षा परिणाम		98
संस्मरण-	भावी घटनाओं को जानते थे आचार्य हस्ती	-प्रो. चाँदमल कर्णावट	28
कविता/गीत-	महावीर के भक्तों जागो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	27
	बारम्बार प्रणाम	-श्री हरकचन्द ओस्तवाल	64
विचार-	शिक्षा का उद्देश्य	-सौ. कमला सिंघवी	16
	स्ट्रेस को स्ट्रेन्थ में बदलें	-श्री रचित भण्डारी	61
	अनमोल वचन	-श्री प्रमोद हीरावत	81
	Happiness	*-Meenu Surana*	93
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	96
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		106
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		119

सम्पादकीय

समणेणं भगवया महावीरेणं

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

'समण' शब्द का प्रयोग हम साधु के लिए करते हैं, किन्तु आगम में भगवान् महावीर के लिये भी 'समण' शब्द का प्रयोग हुआ है। भगवान् महावीर भी समण थे। बौद्ध परम्परा में भी बुद्ध के लिए 'समण' विशेषण का प्रयोग होता है। प्रत्येक तीर्थंकर समण होता है। उनके द्वारा प्रवर्तित तीर्थ अथवा संघ के अंग साधु एवं साध्वी के लिए भी 'समण' एवं 'समणी' विशेषण का प्रयोग किया जाता है। 'समण' शब्द प्राकृत भाषा का है, संस्कृत एवं हिन्दी में इसके तीन रूप बनते हैं, जो तीन अर्थों के सूचक हैं- (1) श्रमण अर्थात् श्रमशील (2) समन अर्थात् समभाव का साधक (3) शमन अर्थात् कषायों को शान्त करने वाला।

'श्रमण' शब्द पुरुषार्थ का द्योतक है। तप-संयम में जो पराक्रम करता है वह श्रमण है। श्रमण अहिंसक होता है, आत्म-साधना के उद्योग में लगा रहता है। श्रमण को भाग्य पर नहीं अपने कृत-पुरुषार्थ अथवा उद्योग पर विश्वास होता है। वह यह मानता है कि दुःख स्वयंकृत होता है और उसका निवारण भी व्यक्ति स्वयं ही कर सकता है। श्रमण के इस अर्थ में साधु-साध्वी तो श्रमण होते ही हैं, किन्तु जो इस साधना के माध्यम से साध्य को प्राप्त कर चुके हैं वे भी श्रमण ही कहे गए हैं। वे जन्मगत जाति, वर्ण आदि के आधार पर मनुष्य को नहीं बाँटते, अपितु अहिंसा, तप एवं संयम की साधना के द्वारा आत्मोन्नति को स्वीकार करते हैं।

'समण' का दूसरा अर्थ 'समन' है। यह समभाव का सूचक है। अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में जो साधक समभाव में रहता है अथवा उसके लिए प्रयत्न करता है वह समन अथवा समण कहलाता है। आचार्य हस्ती के शब्दों में वह त्रस एवं स्थावर सब प्राणियों के प्रति अन्तःकरण में हितकामना रखता है। समण भगवान् के रग-रग में, अणु-अणु में संसार के सभी प्राणियों के प्रति यही हितकामना रहती है कि वे सुखी हों एवं रोगमुक्त हों। समण के बाईस परीषह उसे समभाव की साधना में रहने के लिए निमित्त बनते हैं। वह बाह्य आधारों से प्राणियों में हीनता एवं उच्चता का भाव नहीं लाता, अपितु सबके प्रति हितकामना से आप्लावित रहता है।

'समण' शब्द का तीसरा अर्थ 'शमन' है। यह कषायों के शमन का सूचक है। जो साधक क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय को शान्त कर लेता है अथवा करने के लिए प्रयत्नशील रहता है वह शमन या समण है। वह राग-द्वेष को जीतने के लिए तत्पर होता है। अप्रमत्तता उसे प्रिय होती है, हर पल सजग एवं सावधान होकर आत्म-विकारों का निवारण ही उसका लक्ष्य होता है। क्षमा, मार्दव, आर्जव, निर्लोभता, निर्भयता, अनाकुलता, शांति आदि गुण उसके जीवन के अंग होते हैं। समण के दूसरे एवं तीसरे अर्थों में विशेष भेद नहीं है।

समण का मार्ग आत्मविश्वास का मार्ग है, आत्मशोधन का मार्ग है, आत्म-स्वतंत्रता का मार्ग है, सतत उद्योगशीलता का मार्ग है, आत्मजय के लिए संयम का मार्ग है, दुःखों से तात्कालिक मुक्ति का नहीं अपितु शाश्वत मुक्ति का मार्ग है। इस मार्ग पर स्वयं चलना होता है तथा चलने के लिए सर्वप्रथम अपनी अन्तःदृष्टि को सम्यक् बनाना होता है। पदार्थों के संग्रह में शाश्वत सुख मानने की भ्रान्त धारणा को त्यागना होता है। स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञान-चक्षुओं को अनावृत्त करना होता है। फिर ज्ञान के अनुरूप आचरण को अपनाना होता है। यही दुःखमुक्ति का मार्ग है। प्रभु महावीर स्वयं दुःखमुक्त हुए तथा उन्होंने अनन्त करुणा कर हम दुःखी प्राणियों के लिए दुःखमुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उसे ठीक से समझने एवं चलने का पुरुषार्थ हमें करना होगा।

समण आचार्य हस्ती सरल शब्दों में हमें हमारे सामर्थ्य से अवगत कराते हुए कहते हैं- "आपके पास दुःख से मुक्त होने की कुँजी तो है, लेकिन उसको घुमाना नहीं आता। यही कारण है कि संसार के लाखों, करोड़ों, अरबों मनुष्य दुःखी के दुःखी रह जाते हैं और दुःखमुक्त होना तो दूर रहा अपने दुःख को और बढ़ा लेते हैं।" दुःख-मुक्ति का मार्ग क्या है ? इसे समण आचार्य हस्ती ने सरल शब्दों में कहा है- हित का मार्ग जानो, पहचानो, पकड़ो और तदनुकूल आचरण करो।

समणेणं के साथ प्रभु महावीर के लिए 'भगवया' विशेषण का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है-भगवान् के द्वारा। जैन धर्म में भगवान् शब्द का प्रयोग हुआ है, किन्तु वह जगत् के रचयिता, पालन-पोषण कर्ता एवं संहारकर्ता ईश्वर का द्योतक नहीं है। भारतीय परम्परा में 'भग' शब्द के अनेक अर्थ है, जिनमें उत्कर्ष, ऐश्वर्य, पूजा, सामर्थ्य, मोक्ष, इच्छा का अभाव आदि अर्थ प्रमुख

हैं। तीर्थंकर महावीर में ये सभी अर्थ फलित होते हैं। वे अनन्त ज्ञानवान् होने से उत्कर्ष को प्राप्त हैं, अतः भगवान् है, मनुष्यों, देवों एवं इन्द्रों द्वारा पूज्य होने से भगवान् हैं तथा अन्तराय कर्म का पूर्ण क्षय करने से एवं किसी प्रकार का अभाव न रहने से अनन्त ऐश्वर्यवान् है, इसलिए भी भगवान् हैं। चार घाती कर्मों के क्षय रूप भावमोक्ष को प्राप्त होने से भी भगवान् हैं। उन्हें अन्य गुणों के कारण भी भगवान् कहा जा सकता है। भगवान् शब्द का प्रयोग किसी अलौकिक शक्ति के लिए नहीं, अपितु विकारों से रहित पूज्य पुरुष के लिए हुआ है। तीर्थंकर महावीर इस अर्थ में भगवान् थे। वे अनन्त कृपालु होने के कारण भी भगवान् थे। संसार के प्राणी किस प्रकार दुःखमुक्त हों, यह करुणा भाव उनके रोम-रोम में व्याप्त था।

सूत्रकृतांग सूत्र के षष्ठ अध्ययन में भगवान् ज्ञातपुत्र महावीर को लोक में उत्तम श्रमण कहा गया है- **लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते**। वे क्रोध, मान, माया और लोभ रूप आत्मिक दोषों को त्यागकर अर्हत महर्षि हुए। वे स्वयं न पाप करते हैं और न ही दूसरों से पाप कराते हैं। इस अर्थ में जो क्रोधादि पापों से पूर्णतः रहित है,वह भगवान् है। उसे देवता भी नमन करते हैं-**जं देवा पंजलिं नमंसंति**।

भगवान् की विशेषता बताते हुए समण आचार्य हस्ती कहते हैं कि भगवान् अपने जैसा दूसरों को बनने के लिए प्रेरित करते हैं। संसार के प्राणी ऐसे देखे जाते हैं कि किसी को कोई अच्छा या ऊँचा पद मिल गया, श्रीमन्त सेठ बन गया, अधिकारी, नायक या नेता बन गया, पण्डित बन गया तो वह सोचेगा कि अपने पास आने वालों को कुछ सिखाऊँ। सेठ देखता है कि मुनीम को कुछ ज्ञान दूँ, लेकिन वह यह भी सोचेगा कि मुनीम सीखते-सीखते मेरे जैसा सेठ नहीं बन जाय, इसलिए वह उसको पूरी विद्या सिखाता हुआ घबरायेगा। पण्डित सोचता है कि छात्र को सिखाऊँ, पढ़ाऊँ, लेकिन कहीं ऐसा न हो कि यह मेरे से भी आगे बढ़ जाय और मेरा शिक्षक पद ले ले, कुलपति या चांसलर बन जाये। ऐसा मौका नहीं आवे उतना ही उसका अभ्यास देना चाहिये। लेकिन आप आश्चर्य करेंगे कि जिनेश्वर महावीर के जीवन की एक विशेषता है कि वे स्वयं जिन बने और दूसरों का इस ओर ध्यान आकर्षित किया तथा कहा- "मानव! आ जाओ, तुम भी मेरी तरह राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करके जिन बन जाओ। तुम भी इस मार्ग पर चलोगे, पुरुषार्थ करोगे तो कर्म का आवरण टूटेगा और तुम भी जिन बन जाओगे।"

लोगस्स के पाठ में लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे आदि विशेषण एवं नमोत्थुणं के पाठ में आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं.......अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं आदि अनेक विशेषण दिए गए हैं। ये सभी विशेषण तीर्थंकरों के विशेषण हैं, अतः यह सभी भगवान् महावीर के भी विशेषण हैं।

'महावीरेणं' शब्द का अभिप्राय है महावीर के द्वारा। 'समणेणं भगवया महावीरेणं' इन तीनों पदों का अर्थ है- समण भगवान् महावीर के द्वारा। इन तीनों पदों के साथ जब 'एवमक्खायं' पद जोड़ दें तो पूर्ण वाक्य हो जाता है। 'एवं' का अर्थ है इस प्रकार तथा 'अक्खायं'शब्द का अर्थ है कहा गया है। भगवान् महावीर के द्वारा जैसा कहा गया है उसे उनके शिष्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बूस्वामी को सूत्रशैली में निबद्ध करते हुए वैसा ही फरमाया था। वह वाणी आज भी मानवमात्र के कल्याण के लिए उपयोगी है। ज्ञातपुत्र वर्द्धमान महावीर की शरण में अनेक प्राणी आए तथा ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन का कल्याण करने में समर्थ हुए। अंतगडदसा आदि सूत्र इसके साक्षी हैं। सम्प्रति हमारे समक्ष साक्षात् महावीर तो नहीं हैं, किन्तु आज भी उनकी वाणी को हम तक पहुँचाने वाले शास्त्र एवं सद्गुरु विद्यमान हैं। उनकी वाणी ही हमारे लिए पावन औषधि है। भगवान् का एक वाक्य या शब्द भी यदि हमारी चेतना को झंकृत करने में समर्थ हो जाए तो वह हमारे पापिष्ठ जीवन को धर्मिष्ठ बना सकता है। हम पतित से पावन हो सकते हैं।

भगवान् की वाणी हमारी चेतना में वह चमत्कार उत्पन्न कर सकती है, जिसका अनुमान हम इन्द्रियजन्य ज्ञान से नहीं कर सकते। किन्तु, उसके लिए श्रद्धा के साथ सही समझपूर्वक आत्म-विकारों पर विजय के लिए प्रस्थान करना होगा। राग और द्वेष के संस्कारों के साथ तटस्थतापूर्वक जूझना होगा। ममत्व और अहंत्व पर कुठाराघात करना होगा। आर्द्र और रौद्र चिन्तन को त्यागकर ज्ञान और ध्यान को अपनाना होगा। समण आचार्य हस्ती के शब्दों में कहें तो स्वाध्याय और सामायिक को जीवन का अंग बनाना होगा। स्वाध्याय जहाँ हमारे विचारों का शोधन करता है वहाँ सामायिक हमारे मनोमालिन्य को दूर करती है। यह सामायिक और स्वाध्याय ज्ञान और क्रिया के पर्यायार्थक शब्द हैं। समण आचार्य हस्ती कहते हैं- ''हजारों वर्ष पहले भी दो ही साधन थे, आज भी दो ही हैं और आगे भी दो ही रहेंगे। बाहरी तौर-तरीके में और कहने में अन्तर हो सकता है।''

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा-आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं-णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।

चउव्विहे माणे पण्णत्ते, तं जहा-आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं-णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।

चउव्विहा माया पण्णत्ता, तं जहा-आभोगणिव्वत्तिता, अणाभोगणिव्वत्तिता, उवसंता, अणुवसंता। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।

चउव्विहे लोभे पण्णत्ते, तं जहा-आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं-णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।

अर्थः-

क्रोध चार प्रकार का कहा गया है। जैसे-

1. आभोगनिर्वर्तित क्रोध- बुद्धिपूर्वक किया गया क्रोध।
2. अनाभोगनिर्वर्तित क्रोध- अबुद्धिपूर्वक किया गया क्रोध।
3. उपशान्त क्रोध- उदय को अप्राप्त, किन्तु सत्ता में स्थित क्रोध।
4. अनुपशान्त क्रोध- उदय को प्राप्त क्रोध।

मान चार प्रकार का कहा गया है। जैसे-

1. आभोगनिर्वर्तित मान- बुद्धिपूर्वक किया गया मान।
2. अनाभोगनिर्वर्तित मान- अबुद्धिपूर्वक किया गया मान।
3. उपशान्त मान- उदय को अप्राप्त, किन्तु सत्ता में स्थित मान।
4. अनुपशान्त मान- उदय को प्राप्त मान।

माया चार प्रकार की कही गई है। जैसे-

1. आभोगनिर्वर्तित माया- बुद्धिपूर्वक की गई माया।
2. अनाभोगनिर्वर्तित माया- अबुद्धिपूर्वक की गई माया।
3. उपशान्त माया- उदय को अप्राप्त, किन्तु सत्ता में स्थित माया।
4. अनुपशान्त माया- उदय को प्राप्त माया।

लोभ चार प्रकार का कहा गया है। जैसे-

1. आभोगनिर्वर्तित लोभ- बुद्धिपूर्वक किया गया लोभ।
2. अनाभोगनिर्वर्तित लोभ- अबुद्धिपूर्वक किया गया लोभ।
3. उपशान्त लोभ- उदय को अप्राप्त, किन्तु सत्ता में स्थित लोभ।
4. अनुपशान्त लोभ- उदय को प्राप्त लोभ।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- तप और त्याग के वातावरण में त्यागी पुरुषों के जीवन का मूक प्रभाव लोगों पर पड़ता ही रहता है और उनकी जीवनचर्या से भी प्रेरणा मिलती रहती है। जैसे पुष्पोद्यान का वातावरण मन को प्रफुल्लित करने में परम सहायक होता है, वैसे संत-संगति भी आत्मोत्थान में प्रेरणादात्री मानी गयी है।
- देश और समाज को घर में व्याप्त अनैतिकता आदि के दंश एवं समाजघाती कीटाणुओं के दुष्प्रभाव से मुक्त कराने में, दुष्प्रवृत्तियों से सत्प्रवृत्तियों की ओर देशवासियों का मन मोड़ने में त्यागी सन्त-सतियों का आचारनिष्ठ चरित्र ही समर्थ है। शस्त्रधारी सैनिक डण्डा मार सकता है, मन को नहीं मोड़ सकता। मन मोड़े बिना इन बुराइयों को जड़ से दूर नहीं किया जा सकता।
- जो परोपकारी, त्यागी-विरागी एवं तपस्वी सन्त-समाज सारे देश के कोने-कोने में फैला हुआ है, उसके सत्संग में, उसके समागम में आने वाले कितने ही युवक, बाल, वृद्ध और दुर्व्यसनों में फँसे लोगों के जीवन में सुधार होता है। बहुतों का हुआ है, हो रहा है और होता रहेगा। प्रत्येक नगर में, ऐसे अनेक बालक हैं, जिनको धूम्रपान का व्यसन लग गया है और वे अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों के भी शिकार हो गये हैं। क्या उनका सुधार शस्त्रधारी सैनिकों से हो पायेगा? नहीं, उनके लिये शस्त्रधारी सैनिक उपयोगी नहीं, अपितु सन्त-सती जन ही उनके मन को मोड़ सकते हैं। वे ही लोगों में फैले दुर्व्यसनों को जड़ से मिटा सकते हैं और उनकी शक्ति की दिशा को देश एवं समाज के अभ्युत्थान के कार्यों की ओर मोड़ सकते हैं।
- साधना करने वाले साधकों को तीन रूपों में रखा जा सकता है:-(1) चेतनाशील और स्वस्थ (2) चेतनाशील किन्तु अस्वस्थ और (3) चेतनाशून्य-मात्र वेष को धारण करने वाले। प्रथम चेतनाशील साधक वे हैं जो बिना किसी पर की प्रेरणा के कर्तव्य-साधन में सदा जागृत रहते हैं। आचार या विचार में जरा भी स्खलना आई कि वे तत्काल संभलकर इष्ट मार्ग में प्रवृत्त होते हैं और अनिष्ट से निवृत्त होते हैं। विषय-कषाय पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं। एक बाई आई और कहने लगी-''महाराज'! मेरा पुत्र मेरा कहना नहीं मानता। आप उसे समझाओ'' मैंने उससे पूछा-'बेटा किसका है?' तो वह बोली 'मेरा है'। यहाँ सोचना है कि जो अपने बेटे-बेटियों को नहीं सुधार सकते वे समाज को सुधारने की जिम्मदारी कैसे ले सकते हैं?

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

गुरुसम दूजा घड़त नहीं, सीखे आचरे बिन बढ़त नहीं

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा शनिवार, दिनांक 6 फरवरी, 2010 को जैन स्थानक, बाड़मेर (राजस्थान) में फरमाए गए प्रवचनामृत का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया है।-**सम्पादक**

संसार के जीव-मात्र के मंगल, उत्तम शरणदाता, पंच परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-काटि वन्दन!

भूतकाल में जितने जीवों ने आत्म-उत्थान किया है, वर्तमान में जितने जीव श्रद्धा और साधना के बल पर आगे बढ़ रहे हैं और भविष्य में जितने जीव आगे बढ़ेंगे वे इन्हीं पंच परमेष्ठी देवों की वाणी का आधार लेकर आत्मोत्थान करेंगे। जिन्होंने भी शांति-समाधि प्राप्त की है, जो भी पर से हटकर स्व में आए हैं, चंचलता मिटाकर स्थिरता को प्राप्त हुए हैं वे सब इसी वीतराग वाणी से और समता की साधना से आगे बढ़े हैं। शास्त्र का वचन है- '**जे के वि गया मोक्खं, जे गच्छन्ति जे गमिस्संति, सव्वे वि सामाइयपभावेण मुणेयव्वं**''

जितने भी मोक्ष गये हैं, जा रहे हैं, जायेंगे वे सब इसी सामायिक से, वीतराग-वाणी से एवं स्वाध्याय से गये हैं, जा रहे हैं, जायेंगे। वे पुरुष अनन्त - अनन्त भाग्यशाली हैं, पुण्यशाली हैं, जिन्हें परमात्मा-स्वरूप अरिहन्त भगवन्तों का संयोग मिलता है। पंचम काल में आज हम ऐसे भाग्यशाली नहीं जिन्हें साक्षात् अरिहन्त भगवन्तों का संयोग मिल सके। पर हम इतने भी हीन पुण्य वाले नहीं हैं, क्योंकि आज भी पंच महाव्रतों की साधना करने वाले संत भगवन्त सत्य का पथ दिखाने के लिए मौजूद हैं। गीता हो, रामायण हो, शास्त्र हों वे यदि आलमारियों में बन्द हैं, मन में नहीं तो तिरना सम्भव नहीं होगा।

आचार्य भगवन्त(पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) फरमाते थे कि भव-कूप में पड़े प्राणी को रस्सी ऊपर तक दिखाई देती है, लटक रही है वह नहीं कहती कि मुझे पकड़कर बाहर आ जाओ। रस्सी कहती नहीं लेकिन उसे पकड़ कर कोई बाहर निकलना चाहे तो बाहर निकल सकता है। ऐसे ही वीतराग-वाणी

इस भव समुद्र से निकालने के लिए रस्सी का काम करती है। आप शास्त्रों को अलमारी में बन्द करके रख दो, ताले में बन्द हैं तो वे शास्त्र तार नहीं सकते। ताले में बन्द नहीं, हाथ में हैं तो भी चाहे जितने समय हाथ में लिए बैठे रहो, हाथ में रखा शास्त्र पार नहीं उतार सकता। भोजन बनाने वाले ने भोजन बनाया, परोसने वाले ने परोसा लेकिन जब तक भोजन करोगे नहीं, ग्रास गले से नीचे नहीं उतरेगा भूख मिटने वाली नहीं है। कपड़े एक नहीं, कई-कई हैं पेटियां और अलमारियां भरी पड़ी हैं, पर जब तक कपड़े पहनोगे नहीं, सर्दी दूर नहीं होगी। आपने बहुत सुना, बहुत समझा, संगति में भी बहुत आए, पर साधना-मार्ग में जब तक कदम नहीं बढ़ाओगे तब तक सुनना-समझना क्या अर्थ रखता है।

गच्छत्पिपीलिका यान्ति, योजनानां शतान्यपि
अगच्छन् वैनतेयोपि पदमेकं न गच्छति

चींटी भी चलते-चलते सैकड़ों योजन पार कर सकती है। गरुड़ हवाई जहाज की तरह आकाश नाप सकता है, पर वह यदि उड़े ही नहीं तो.......? आपने सुना होगा- कछुआ और खरगोश की दौड़ हुई। कछुआ धीरे-धीरे गति करता है जबकि खरगोश हवा से बातें करता है, लेकिन कछुआ अपनी गति से चलता हुआ मंजिल तक पहुंच जाता है और सरपट दौड़ लगाने वाला खरगोश यह सोच कर बैठ जाय कि मैं तो कभी भी रास्ता पार कर लूँगा और वह चलता नहीं, दौड़ता नहीं तो पीछे रह जाता है।

आपने आज आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का जीवन-चरित्र सुना। आप सत्संग में आए हैं तो महापुरुषों का जीवन चरित्र सुनने को मिल रहा है, पर सुनने मात्र से तिरना नहीं होगा। गंगा जल की बूंद के रूप में ही सही, सुनी हुई बात को जीवन में ग्रहण कीजिये। किसी के अठाई का पारणा है, किसी के तेले का पारणा है, उकाली पास में पड़ी है, पास में पड़ी उकाली तपश्चर्या की गर्मी शान्त नहीं कर सकती। उसे सेवन करने से ही गर्मी शान्त होगी, उबासियां कम होंगी और शरीर में शक्ति स्फूर्ति का संचार होगा।

आप इन उदाहरणों से परिचित हैं। मैं उदाहरणों के माध्यम से आपको खयाल दिलाना चाहता हूँ कि आप वीतराग वाणी को बूँद-बूँद ही सही, आचरण में लायें। वीतराग वाणी को आचरण में लाने वाला ही अपना जीवन उन्नत बनाता है।

गुरु का जीवन में यही महत्त्व है। गुरु प्रेरणा करता है, गुरु घड़ता है। घड़ने वाले और भी कई हो सकते हैं, लेकिन गुरु जैसा घड़ने वाला दूसरा नहीं हो सकता। गुरु के प्रति श्रद्धा रखकर जीवन में आचरण करने वाला सुख प्राप्त करता है। गुरुदेव पूज्य आचार्य हस्ती अपने भजन में यही सीख दे रहे हैं-

घणो सुख पावेला, जो गुरु वचनों पर प्रीति बढ़ावेला,
वचन प्रमाणे जो नर चाले, चिंता दूर भगावेला।
आप मति आरति भोगे नित, धोखा खावेला।।
एकलव्य लखि चकित पांडुसुत, मन में सोच करावेला।
कहा गुरु से हाल भील भी, भक्ति बतलावेला।।
देश भक्ति उस भील युवा की, वनदेवी खुश होवेला।
बिना अंगूठे बाण चले यों, बर दे जावेला।।
गुरु कारीगर के सम जग में, वचन जो खावेला।
पत्थर से प्रतिमा जिम वो नर, महिमा पावेल।।
कृपा दृष्टि गुरुदेव की मुझ पर, ज्ञान शांति बरसावेला।
'गजेन्द्र' गुरु महिमा का नहिं कोई, पार मिलावेला।।

पाँच पदों की वन्दना में कई लोग घड़ने वालों की महिमा गाते हैं- गुरु को कई तरह की उपमाओं से उपमित किया जाता है। वह चाहे कारीगर हो, सुनार हो, दर्जी हो, माली हो इस तरह की कई उपमायें देकर गुरु की महिमा गाई जाती है। किन्तु कारीगर, सुनार, दर्जी, माली ये तो आकृतियाँ घड़ने वाले हैं। ये अजीव को घड़ते हैं। दर्जी कुर्ते की कटिंग करता है। वह कपड़े को कैंची से कांट-छांट कर तैयार करता है। कुम्हार मिट्टी को चाक पर चढ़ाकर जैसी चाहे वैसी आकृति घड़ता है। दर्जी हो, कुम्हार हो ये सब अजीव को घड़ते हैं। अजीव को घड़ना सरल है। अजीव कुछ बोलता नहीं, लेकिन चेतन को घड़ना सरल नहीं है। मांड़ने मांड़ना सरल है, चित्रकारी करना सरल है, किन्तु छोरे (लड़के) को समझाना सरल नहीं है।

गुरु जड़ को नहीं, चेतन को घड़ते हैं। चेतन में जो भी अवगुण हैं उन्हें हटा कर, चेतन की चंचलता मिटाकर उसे घड़ना बहुत कठिन है, पर गुरु ऐसा कारीगर है जो चेतन को घड़कर तैयार करता है। यही कारण है कि गुरु ने छोटे-

छोटे बच्चों तक को घड़ दिया और वीतराग पथ पर लगा दिया। सात-आठ वर्ष के बच्चे को शास्त्र वाणी का अभ्यास करवाकर उसे मन-वचन-काया से साधना-मार्ग में जोड़ दिया। आज छोटे-छोटे बच्चों को आप कपड़े पहनाते हैं, मौजे और अण्डरवियर पहनाते हैं। बच्चे को कपड़े पहनाना सरल है, किन्तु उसे संयम-मार्ग पर बढ़ाना सरल नहीं है।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज ने आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज को बचपन से घड़ना चालू किया। उसका मधुर फल हमने देखा है। बाड़मेर वासियों को उन्हीं आचार्य श्री हस्ती जन्म की शताब्दी के प्रसंग से संतों की सेवा का सुअवसर मिल रहा है। बाल ब्रह्मचारी आचार्य भगवन्त ने हजारों लोगों को व्रत-नियम के प्रत्याख्यान करवाकर, शीलव्रत के खंद करवाकर न जाने कितने-कितने लोगों को घड़ा एवं साधना-मार्ग में आगे बढ़ाया। उनकी महिमा को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

• पूज्य गुरुदेव एक बार नागौर चातुर्मास पश्चात् विहार करके धनारी पधारे। धनारी में जैन समाज के कुछ घर हैं। अधिकतर लोग चौधरी समाज के हैं। चौधरी जिन्हें आप जाट कहते हैं वे भी पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में आते। व्याख्यान में सेठ सुदर्शन की कथा चल रही थी। कथा सुनकर दो जने खड़े हुए और ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया। गुरुदेव ने कहा- जब तक रोज दो शीलव्रत के खंद होते रहेंगे, यहाँ रुकना संभव होगा। दो-तीन दिन इसी तरह प्रत्याख्यान होते रहे। मुझे याद है- व्याख्यान में एक चौधरी खड़ा हुआ और बोला- "बाबजी! म्हाने लोग जाट कैवे। कहावत भी है- आगल बुद्धि बाणिया, पाछल बुद्धि जाट।" वह भाई बोला- "महाराज! हूँ तो मैं जाट, पर हमारे बेटे के बेटा होता है तो हमारी खाट पोल के बाहर आ जाती है। बेटे के बेटा यानी पोता हो जाने के बाद घर में सोना तो दूर, अन्दर जाना भी हम ठीक नहीं समझते।"

अभी हम झोंटड़ा गाँव होकर आये हैं। वहाँ अर्जुनसिंह जी राठौड़ हैं। उन्होंने भी बताया- "महाराज! हमारे बेटे के बेटा हो जाता है तो फिर कोटड़ी से खाट बाहर आ जाती है, ठकुराइन के पास नहीं जाते। आप हमको नहीं समझायें, समझाना ही है तो आप इन महाजनों को समझायें।

आज आपकी क्या स्थिति है? आपका जातिगत कोई नियम नहीं, इसी लिये घर में बेटी भी सुआवड़ पर है और बहू भी। माँ और बेटी सासू और बहु

दोनों सुआवड़ पर हो तो.........? क्या आपका रिटायरमेंट का समय है? सरकारी नौकरी में कोई पचपन, कोई अठावन और कोई साठ साल में रिटायर हो जाता है आप महाजनों का रिटायरमेंट का कोई समय है?

आप जरा चिंतन तो कीजिये। सोचिये कि क्या यह जीवन केवल भोग के लिए ही है या योग के लिए भी है? क्या यह जीवन केवल वासना के लिए ही है या उपासना के लिए भी है? आज हम दो, हमारे दो की बात क्या ब्रह्मचर्य-पालन करके की जाती है

ब्रह्मचर्य ओज-तेज बढ़ाने वाला है, चमत्कार करने वाला है। ब्रह्मचर्य के प्रताप से आग भी पानी बन सकता है, शूली का सिंहासन हो सकता है। इसीलिये तो आप बोलते हैं-

शील रतन मोटो रतन, सब रतनों की खान,
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ।।

ब्रह्मचर्य की ताकत हो तो शेर का कान पकड़कर उसकी सवारी की जा सकती है। कई-कई माताओं ने शील को खण्डित नहीं किया। वह चाहे सच्चियाय माता हो, लोढ़ा कुल की भंवाल माता हो अथवा कोई अन्य माता हो, शील के कारण माता को कुल की रक्षा करने वाली कहा गया है।

हमारे धर्म का मुख्य आधार शील है। हमारी हर क्रिया का सहयोगी शील है। शील बुद्धि बढ़ाने वाला है, शील शक्ति का संचार करने वाला है। शील धरती के धर्म को बदलने वाला है। सती चाहे वह सीता हो, द्रौपदी हो, चन्दनबाला हो, उन्होंने शील का पालन किया। शील का वृत्तान्त सुनकर ही न रहें इसका पालन करें।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के प्रसंग पर आप अध्यात्म-चेतना की साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करें। स्वयं करें, जिनको साधना की जानकारी नहीं है उन्हें समझाकर साधना मार्ग में आगे बढ़ाये।

आज कई ऐसे भी हैं जो ब्रह्मचर्य का पालन तो करते हैं, किन्तु संकोच से प्रतिज्ञाबद्ध नहीं होना चाहते। आपने आचार्य भगवन्त का जीवन चरित्र सुना है। इस (रत्नसंघ) पट्ट-परम्परा में आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज हों, आचार्य श्री हमीरमल जी, आचार्य श्री कजोड़ीमल जी, आचार्य श्री विनयचन्द जी, आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी और पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी

महाराज सभी बाल ब्रह्मचारी हुए। इस परम्परा के आचार्य में दस से पन्द्रह साल की उम्र में दीक्षित हुए। ऐसे बाल ब्रह्मचारी आचार्य भगवन्त जहाँ भी गये वहाँ शांति की स्थापना की। उन महापुरुषों ने जो कह दिया वह हो गया।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री शोभाचन्द्र जी महाराज कितने निर्लेप साधक संत थे। वे कभी बन्द कमरे में नहीं, सबके सामने बाहर पाट पर विराजे। एकान्त उन्हें चाहिये जो गुपचुप बात करना चाहते हैं। साधना करने वाले साधक तो जहाँ भी विराजते हैं वह एकान्त हो जाता है। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का जीवन तो खुली डायरी के समान था। कोई जब चाहे तब आ जाये उन्हें सदा अप्रमत रूप में देखा। उनकी सेवा में न्यायाधिपति-वकील-अधिकारी सभी निःसंकोच आते, सेवा का लाभ लेते। जोधपुर में शायद ही किसी कौम का व्यक्ति हो जो उनकी सन्निधि में नहीं आया। एक संदेश कहकर अपनी बात समाप्त करूँ- अगर सुख पाना चाहते हो तो वीतराग वाणी पर और गुरु वचनों पर श्रद्धा करके साधना-मार्ग मेंआगे बढ़ें तो अव्याबाध सुख-शांति प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षा का उद्देश्य

सौ. कमला सिंघवी

आचार्य विश्वश्रुत के तीन शिष्यों ने शिक्षा समाप्त करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए अनुमति माँगी। आचार्य की आँखें स्नेह से डबडबा आई। किन्तु कर्तव्य को लक्ष्य में रखते हुए अनुमति दे दी। उस समय संध्या हो रही थी। तीनों शिष्य अपनी-अपनी तैयारी करने लगे। सहसा आचार्य के मस्तिष्क में एक योजना आई। उन्होंने उनकी राह में काँटे बिखेर दिये एवं स्वयं दूर एक पेड़ के नीचे बैठ गये। जाते हुए तीनों शिष्यों ने काँटे बिखरे देखे। पहला जैसे-तैसे लाँघकर आगे बढ़ गया। दूसरा पलभर ठिठका, फिर लौटने लगा। तीसरा अपना सामान एक ओर रख कर उन काँटों को बीनने लगा। आचार्य ने तीसरे को जाने दिया। पर उन दोनों को यह कह कर रोक लिया कि-"वत्स! तुम दोनों की शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई। तुमने शिक्षा का उद्देश्य अभी नहीं समझा।" शिक्षा वही है जिसको पाकर मनुष्य अपने और दूसरों के मार्ग की बाधाओं को दूर कर सके।

-अध्यापिका, जैन पाठशाला ज्ञान मंदिर, भडगाँव (महा.)

प्रवचन

दर्शनविशुद्धि से पवित्र एक ज्ञान-पुंज चारित्र

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

पौष शुक्ला चतुर्दशी, संवत् 2066 तदनुसार दिनांक 30 दिसम्बर, 2009 को पाली में दिये गए मुनिश्री के प्रवचन का संकलन एवं संपादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं,

आज ही के शुभ दिन प्राची दिशा ने एक सूर्य को जन्म दिया। सूर्य आकाश में बढ़ता गया। दसवें वर्ष में वह अणगार बन मुक्ति मार्ग पर बढ़ गया। बढ़ते-बढ़ते बीसवें वर्ष में वह आकाश की ऊँचाइयों को छूने लगा। फिर भी निरन्तर बढ़ता रहा। इक्यासीवें वर्ष में पूर्ण अनासक्त भाव से देह छोड़ कर आगे बढ़ गया। जैसे नदी सागर से मिलने हेतु निरन्तर आगे बढ़ती रहती है, वह भी आनन्द सागर में मिलने निरन्तर बढ़ रहा है। बढ़ते-बढ़ते वह ज्योतिपुंज आज हमारे मानस क्षितिज पर सौवें वर्ष में प्रवेश करता हुआ मानो हमें संदेश दे रहा है- ''वड्ढमाणो भवाहि य'' बढ़ते रहो, बढ़ते रहो।' साधना पथ का यह पथिक और कोई नहीं, यह महान् आत्मा है- हमारे पूज्य गुरुदेव प्रातःस्मरणीय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.। आज उनका सौवाँ जन्मदिन है। व्यवहार जगत में सौ की संख्या पूर्ण शुद्धता की प्रतीक है। इसी संख्या के मापदण्ड पर किसी की प्रामाणिकता मापी जाती है। इस दृष्टि से हम आचार्य भगवन्त के जीवन का मूल्यांकन करेंगे तो आध्यात्मिकता की कसौटी पर वे शत-प्रतिशत खरे उतरेंगे। ऐसे प्रज्ञा पुरुष सदियों में कभी-कभार ही होते हैं जो मानव की अन्तरात्मा को झंकृत कर उसे सही दिशा देकर बोध का अमृत पिलाते है। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि ऐसी महान् विभूति का हमें प्रत्यक्ष सान्निध्य मिला। आज भी वे देहातीत अवस्था में, सामायिक-स्वाध्याय के रूप में जीवन्त हैं।

आचार्य भगवन्त दर्शन से विशुद्ध थे, ज्ञान के पुंज थे एवं चारित्र के धनी थे। जब तक इस जगत् में रहे, अपनी ज्योति बिखेरते रहे और जब गये तो एक उदाहरण बन कर चले गये। संयम के उस सुमेरु की आत्म-समाधि को कोई भी

आधि-व्याधि भंग नहीं कर सकी। इस पावन दिन पर उसी निःस्पृह, निर्विकार, ज्यातिर्धर की कुछ स्मृतियाँ सजीव हो रही है, जिनकी मैं चर्चा करना चाहूँगा।

ठाणांग सूत्र में भगवान् ने दो प्रकार के धर्म का प्रतिपादन किया है। धम्मे दुविहे पण्णत्ते-सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव अर्थात् दो प्रकार के धर्म हैं- एक श्रुत धर्म और दूसरा चारित्र धर्म। जैन दर्शन में श्रुत को ज्ञान कहा है और चारित्र को आचरण या क्रिया। साधु के जीवन में इन दोनों का समन्वय होना आवश्यक है। कहा गया है कि ज्ञान का फल विरति है, त्याग है, आचरण है। यदि कोई ज्ञान का भंडार भी हो, पर यदि वह ज्ञान उसके आचरण में नहीं ढला है तो उस ज्ञान का कोई प्रयोजन नहीं। क्रिया के बिना ज्ञान पंगु है और केवल भार है। ज्ञान के साथ व्यक्ति सद्गुणी और सदाचारी बने, तभी जीवन की सार्थकता एवं श्रेष्ठता है। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज साहब, जिनकी जन्म शताब्दी हम इस वर्ष मना रहे हैं, ज्ञान और क्रिया के समन्वय की एक अनुपम प्रतिमा थे। ज्ञान के पक्ष को आचरण से गौरवान्वित करने वाली वे एक विरल विभूति थे। उनका जीवन उन फूलों की तरह था जो सुन्दर भी होते हैं और सुगन्धित भी होते हैं। उनके जीवन की सुवास हमें निरन्तर मिल रही है, इसीलिये तो उनके इस जीवन से विदा होने के बाद भी हम उनसे खिंचे हुए उनके सान्निध्य का अनुभव करते हैं और पुलकित होते हैं। उनके गुणों को देखकर अन्तरमन में प्रेरणा का प्रस्फुरण होता है कि हम भी उनके दिव्य गुणों को जीवन में उतारें। सद्गुण प्राप्त करने की प्रेरणा निरन्तर मिलती रहे ताकि हमारा भी जीवन संवरे। इसीलिये महापुरुषों की जन्मतिथि, दीक्षातिथि, पद आरोहण तिथि एवं निर्वाण अथवा इस जीवन से प्रयाण करने की तिथि श्रद्धाभक्ति के साथ मनाई जाती है। सौ वर्ष वर्तमान काल में पूर्णायु का द्योतक है। इसीलिए महापुरुषों की विशिष्ट तिथियों के मनाने की परम्परा में जन्म-शताब्दी एक माइलस्टोन है। उनके जीवन के महत्त्व को प्रतिपादित करने के लिये पूरे वर्ष का यह आयोजन है और इसे नाम दिया है- 'अध्यात्म चेतना वर्ष'। आचार्य भगवन्त एक उत्कृष्ट अध्यात्मयोगी थे, जिन्होंने अपने पुरुषार्थ को जगाकर आत्म-साक्षात्कार कर लिया था। अर्हत् बनने की अर्हता प्राप्त करली थी।

बन्धुओं, एक से सौ तक की संख्या निरन्तर प्रगति करने की परम्परा में एक माइलस्टोन है। यह संख्या संकेत करती है कि हम निरन्तर प्रगति करते हुए उपलब्धियों का इतिहास गढ़ते रहें, जीवन में निखार लाते रहें और सफलता के

सोपान-दर-सोपान चढ़ते रहें। उम्र की गणना इतना महत्त्व नहीं रखती, महत्त्व है जीवन में विशिष्टताओं को अर्जित करने का। पूज्य गुरुदेव ने तो मात्र दस वर्ष तक ही गृहस्थ जीवन का समय गुजारा और वह भी माँ के पूर्ण वैराग्य के संस्कारों के साथ। बाकी सम्पूर्ण जीवन तो ज्ञानप्राप्ति, संयम-साधना और वीतराग की आराधना में ही बिताया। हमें यह दुर्लभ मानव भव मिला है, आर्य क्षेत्र भी मिला है, उत्तम कुल भी मिला है और सौभाग्य से धर्मश्रवण भी मिल रहा है। अब उसके प्रति प्रीति करने की आवश्यकता है। आपके पास दीपक भी है, तेल भी है, बाती भी है, बस आवश्यकता है तो अध्यात्म की एक चिनगारी की। चिनगारी से दीपक जल उठेगा और प्रकाश मिल जायेगा। गुरुदेव आपके लिये अध्यात्म की वह चिनगारी है जिसकी सन्निधि में आप आयेंगे तो आपका दीपक जल उठेगा और जीवन में रूपान्तरण हो जायेगा। अध्यात्म चेतना वर्ष में गुरुदेव के अध्यात्म की चिनगारी से आप अपना दीपक जलालो तो यह जन्मशताब्दी आपके लिये वरदान बनकर जीवन का अमिट आलेख बन जायेगी। उस महापुरुष को याद करो, उनके सत्संग का अनुभव करो क्योंकि उनके जीवन रूपी बादल से बरसी कौनसी बूंद आपके जीवन रूपी सीपी में गिर कर मोती बन जाये और आप ज्योतिर्मय बन जायें।

ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र के उत्कृष्ट आराधक उस महान् साधक की साधना पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो हमें पता चलता है कि ज्ञान के क्षेत्र में उनका जीवन बेमिसाल था। वैराग्य के संस्कारों से संस्कारित बाल्यकाल से ही ज्ञानार्जन उनके जीवन के अभ्युत्थान का प्राथमिक ध्येय बन गया। अल्पवय में ही उनकी ज्ञान सम्पदा से चतुर्विध संघ चमत्कृत था, अभिभूत था एवं आचार्य पद की अर्हता के प्रति आश्वस्त था। उन्होंने उस आगमज्ञान की निधि को जीवन की साधना में अर्पित कर दिया। यही कारण था कि कालान्तर में वे छेदसूत्रों के विशेषज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। उन्होंने अपने जीवन को ज्ञानमय साधना से जोड़ा ही, नहीं अपितु इसकी महत्ता से जन-जन को परिचित भी कराया। 'पढमं नाणं तओ दया' के जिनसूत्र को आपने आत्मसात् कर लिया और उनकी यह दृढ़ मान्यता बन गई कि हमारा क्रियात्मक पक्ष तभी फलदायी हो सकता है जब हमें सम्यक् जानकारी हो। विचार शुद्धि से ही आत्मशुद्धि सम्भव है। विचार शुद्धि के लिये ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। अणगार के लिये प्रभु महावीर ने जहाँ तीन

मनोरथ का निरूपण किया है उसमें प्रथम मनोरथ में साधक यह भाव रखे कि वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं नित्य नूतन ज्ञानार्जन करूँगा। इसीलिये तो साधक की दिनचर्या में चार प्रहर के लिये स्वाध्याय करने का विधान है अर्थात् ज्ञान के क्षेत्र में रमण करने का नियम है। आगमज्ञान प्राप्त करने के बाद भी उस महान् साधक का ज्ञान के प्रति इतना समर्पण था कि नन्दीसूत्र के स्वाध्याय के बिना रात्रि में वे कभी शयन नहीं करते थे। उनकी दैनिक चर्या में भी पठन और लेखन निर्बाध गति से चलते थे। वे स्वयं तो आगम के सफल व्याख्याकार और प्रवचनकार थे ही, साधुजनों के लिये भी कम से कम वर्षावास में आगम-ग्रन्थों पर प्रवचन करना अनिवार्य समझते थे। ज्ञान के मूल स्रोत की गंगा निरन्तर प्रवाहित होती रहेगी तो आध्यात्मिक जीवन में उत्कर्षता आयेगी अन्यथा इस ज्ञान गंगा के सरस्वती नदी की तरह विलुप्त होने की सम्भावना हो जायेगी।

जिस महापुरुष ने अपने आपको ज्ञान के वैभव से इतना समृद्ध किया और जन-जन का प्रेरणास्रोत बना, देखना है कि हमने उनसे कितनी प्रेरणा ग्रहण कर ज्ञानार्जन में कितना पुरुषार्थ किया। कभी-कभी तो यह जानकर वेदना होती है कि जिनधर्म के अनुयायी को जैन शब्द का अर्थ भी नहीं जानते। सामायिक लेने और उसे पालने के पाठ तक नहीं आते, उनके अर्थ बोध की तो बात ही अलग है। स्थानकवासी परम्परा के मान्य बत्तीस आगमों के नाम भी नहीं आते, उनकी विषयवस्तु की बात तो बहुत दूर है। अधिक कहने पर लोग प्रतिक्रमण तो याद कर लेते हैं, जो अच्छी बात है, पर अधिकांश व्यक्ति उसका भावबोध प्राप्त नहीं करते। फलतः धार्मिक क्रियाएँ निष्प्राण हो जाती हैं। सामायिक करने के बाद भी जीवन में समता का सूर्य उदित नहीं होता है। प्रतिक्रमण करने के बाद भी पापों से विरति नहीं होती। मिच्छामि दुक्कड़ं देने पर भी पापों का प्रवाह चलता रहता है। इसीलिये गुरुदेव कहते थे कि स्वाध्याय करो, आगम का ज्ञान प्राप्त करो, उसका अर्थ जानो ताकि साधक की सभी क्रियाएँ ज्ञान के साथ भावमयी हो जायें, अन्यथा 'अप्पाणं वोसिरामि' के साथ त्याग की, अनासक्ति की भावना घटित नहीं होगी। धार्मिक क्रियाओं के फूल तो खिलेंगे, पर उनमें सुगन्ध नहीं आयेगी। बिना अर्थबोध के भाव नहीं बनेंगे और सारी क्रियाएँ जड़ होकर रह जायेंगी। साधना की आभा प्रकट नहीं होगी।

(क्रमशः)

आचार्य हस्ती जन्म-शती

अध्यात्म-चेतना के उन्नायक卐

डॉ. रमेश 'मयंक'

पात्र परिचय : सूत्रधार एवं
पाँच श्रावक (एक-दो-तीन-चार-पाँच)
मुनिवेश में श्रावक (वय से वृद्ध)

दृश्य एक

मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश फैलता है। एक लकड़ी का तख्ता रखा है, जिस पर सफेद चद्दर बिछा हुआ है। एक व्यक्ति जिसकी वेशभूषा जैन साधु की है- विराजमान है।

पार्श्व से सुमधुर संगीत स्वर उभरता है, जो धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। तख्त पर विराजमान व्यक्ति ध्यानमग्न है।

नमन उनको कोटि-कोटि, जो अध्यात्म-पथ के उन्नायक।
संत सच्चे सरल ऊँचे, अध्यात्म-चेतना के नायक।।

मुनि- मैं क्यों आया इस संसार में? क्या मैंने प्रव्रज्या अंगीकार कर सन्त जीवन को सफल बनाया? प्रभु महावीर एवं आचार्यों की वाणी का आदर कर क्या मैंने जीवन को सफल बनाया? मैं सदैव सजग रहूँ साधना में, यही मेरा लक्ष्य हो।

अदृश्य स्वर- महावीर के संदेशों को, घर-घर में पहुँचाइए धर्म-साधना में इस मन को आप लगाइए।

मुनि- हाँ, यही ठीक है।
इस अदृश्य स्वर को सुने 70 वर्ष बीत गए। उस समय आयु थी मात्र 10 वर्ष। जीवन को शोभायमान बनाना था। निरन्तर, बढ़ रहे चरण साधना पथ पर।

श्रावक एक- आचार्यप्रवर! आपने अपने दीक्षाकाल से लेकर किन-किन प्रान्तों में विहार किया।

卐 यह नाटिका जिनवाणी, नवम्बर 2009 के सम्पादकीय 'दृष्टिसम्पन्न आचार्य हस्ती' के आधार पर रचित है।

मुनि- राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तरप्रदेश में पद विहार किया।

श्रावक दो- इस पद विहार का ध्येय?

मुनि- लोगों के मनोविज्ञान को समझना, पात्रानुसार अध्यात्म पथ पर बढ़ाना, महावीर के संदेशों को घर-घर पहुँचाना, साधना पथ से जीवन सफल बनाना।

श्रावक एक- आपके प्रवचन सुनकर लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा आचार्यप्रवर?

मुनि- हजारों ने धूम्रपान का त्याग किया और किया त्याग शराब का, कर गए व्यसनों से अनेक किनारा, जोड़कर जीवन को स्वाध्याय से जाग्रत कर अध्यात्म-चेतना, जीवन सुधारा।

श्रावक एक- धन्य हैं आप।

जिन्होंने बहाई करुणा-मैत्री की धारा,
प्राणिमात्र को समन्वय सिखलाया।
पहुँचा कर महावीर के संदेशों को,
जन-जन का जीवन सफल बनाया।।

श्रावक दो- संत क्या चाहते हैं? क्यों संत बन जाते हैं?

मुनि- संत झांकते अपने भीतर, पाते जब दुःखों का आगर।
तो संयम को अपनाते हैं।
समर्पण भाव से करते अध्ययन, साधना का मर्म जान पाते हैं।
जानकर साधना का मर्म, सर्वजन कल्याण की ठानते।
मानव मात्र को ज्ञान प्रकाश दे, अध्यात्म-चेतना कर ही मानते।।

श्रावक एक- इस साधना-पथ का साधन बताइए।

मुनि- अध्यात्म साधना को कठिन मानोगे
तो साधना पथ दुर्गम नजर आयेगा।
और यदि साधना पथ को सरल जाना तो,
साधना का पथ अति सरल हो जाएगा।
व्यक्ति को अपना अंधकार दूर करना होगा,
सर्वप्रथम शिक्षा एवं स्वाध्याय से जुड़ना होगा।

नियमित रूप से करें सत्साहित्य का अध्ययन,
शुद्ध रखें आचरण, कर्म, वचन और मन ।।

श्रावक दो- धन्य हैं आप आचार्यप्रवर।
आपने चेतना को ज्ञान के प्रकाश से जोड़ा है,
आपने आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग बताया।
जगाकर आत्मदीप जन-जन के मन में,
सर्वजन हितार्थ जीवन सुलभ बनाया ।।

श्रावक एक- स्वाध्याय को आपने आधार बनाया,
क्या कोई सद्ग्रन्थ प्रकाश में आया?

मुनि- मैंने आगम साहित्य को गुरुकृपा से,
सर्वजन को सुलभ बनाकर पहुँचाया था।
उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र को,
हिन्दी अर्थ, भावार्थ, कथा एवं पद्यानुवाद कर
स्वाध्याय की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया था।

श्रावक दो- स्वाध्याय की प्रेरणा आपकी सूझबूझ की परिचायक है,
आप सन्त सच्चे, सरल ऊँचे अध्यात्म-चेतना के उन्नायक हैं।

श्रावक एक- आचार्य कृपा कर मनःशुद्धि का विधान समझाइये।

मुनि- मानव का चित्त होता विषमताओं का दावानल,
सामायिक के सतत अभ्यास से, मन होता जाता निर्मल।
धीरे-धीरे हो जाता है, अठारह पापों का त्याग,
विकारों का शोधन होता, नष्ट होने लगता द्वेष-राग ।।

सूत्रधार- नष्ट होने लगता द्वेष-राग। आइए- ऐसे महान् पुरुष को हम भी नमन करें, आध्यात्मिक साधना के पथ का अनुगमन करें।

(नेपथ्य से- 'आचार्य श्री हस्ती की जय' का स्वरनाद होता है एवं धीरे-धीरे स्वर मंद होता है एवं प्रकाश लुप्त हो जाता है।)

दृश्य दो

पर्दा खुलता है। मंच के एक तरफ से सूत्रधार का प्रवेश होता है। धीरे-धीरे श्रावक गण मंच पर अवतरित होने लगता है, जिनकी संख्या पांच से अधिक नहीं

होती। पार्श्व में मेरे अन्तर भया प्रकाश, मैं हूँ उस नगरी का भूप का स्वर मंद, तीव्र एवं मंद होता जाता है एवं थम जाता है।

सूत्रधार- आचार्य श्री का महाप्रयाण हो गया है। आचार्य श्री निःस्पृह, निरभिमानी एवं निर्लेप थे। आचार्य श्री के बारे में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी के शब्द हैं- "प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणीजनों के प्रति प्रमोदभाव, दुःखी जनों के प्रति करुणा भाव एवं विपरीत वृत्ति वालों के प्रति माध्यस्थ भाव ही उनके जीवन के अंग थे।"

श्रावक एक पत्र लाकर सूत्रधार को देता है। सूत्रधार पत्र को खोलकर पढ़ता है - "उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी का विचार है- आचार्य श्री क्षमाशीलता, सरलता, निष्कपटता, असंगता एवं निर्मलता के निधान थे।"

श्रावक एक- आचार्यप्रवर ने एक अनूठा कार्य जैन इतिहास की व्यवस्थित प्रस्तुति का किया है। 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चार भाग इसके साक्षी हैं।

श्रावक दो- आचार्यप्रवर ने स्वयं अनेक शोध भण्डारों का अवलोकन किया था। ताड़पत्रों, भोजपत्रों एवं कागज की पाण्डुलिपियों के माध्यम से जैन इतिहास की रिक्तता को दूर करने का बीड़ा उठाया था।

श्रावक तीन- जैन धर्म का मौलिक इतिहास के माध्यम से सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, साहित्यिक आदि अनेक पथ उजागर हुए हैं, जो अतीत से प्रेरणा लेने को मजबूर करते हैं।

सूत्रधार- यह संदेश सिवांची पट्टी से आया है। एक सज्जन लिखते हैं- "सिंवाची पट्टी में 144 गाँवों में जो वैर-विरोध था वहाँ आचार्यप्रवर के आत्मबल, दृढ़संकल्प एवं सूझबूझ से पुनः समरसता की शीतल सरिता प्रवाहित होने लगी थी।"

श्रावक चार- आचार्यश्री ने स्वाध्याय संघ के माध्यम से स्वाध्यायियों की विशाल सेना तैयार की। यह सेना देश-विदेश में पर्युषण पर्वाराधन हेतु जाकर शास्त्र-वाचन, प्रवचन, चौपाई,

प्रतिक्रमण आदि धर्मक्रियाओं से जन-जन को लाभान्वित करती है।

श्रावक पाँच- आचार्यप्रवर ने युवकों को धर्म से जोड़ने में रूढ़ि एवं परम्परा का नहीं, तर्क एवं मनोविज्ञान का मार्ग अपनाया था।

सूत्रधार- आचार्यप्रवर ने धनिकों को कहा कि धन का उपयोग इस प्रकार करें कि वह दूसरों की आँख का काजल बने, कंकर नहीं। विद्वानों को आपने आचरण की पवित्रता बनाए रखने की सीख भी दी थी।

श्रावक एक- आचार्य की प्रेरणा से बच्चे सुसंस्कारित हुए।

श्रावक दो- महिलाएँ सुशिक्षित एवं शीलव्रती हुंई।

श्रावक तीन- महिलाओं ने स्वयं को पहचाना। घर-परिवार के प्रत्येक सदस्य को धर्म से जोड़ने की ठानी। वे समझ गईं कि धर्मनिष्ठ, विवेकशील एवं सेवाभावी नारी घर को स्वर्ग बना सकती है।

श्रावक चार- आचार्य श्री का वृद्धों को संदेश था- धर्माराधना के साथ-साथ कषाय भाव को कम करें।

श्रावक पाँच- आचार्यश्री ने धर्म को जीवन सुधार का साधन बताया था।

सूत्रधार- आचार्यश्री ने धर्म-साधना को सरल बनाया। तन, मन और पावन वचन का मार्ग बताया। आचार्यप्रवर ने कहा था- अन्याय एवं अनीति से कमाया धन अनुचित है। बिना श्रम के, बिना न्याय के, बिना नीति के प्राप्त धन से घर-परिवार एवं जीवन में शान्ति नहीं मिलती।

वे प्रज्ञासम्पन्न साधक थे।

वे मानवीय जीवन मूल्यों के पक्षधर थे।

उन्होंने मानव सेवा, प्राणिमात्र के प्रति दया, सहिष्णुता, समन्वयशीलता को प्रोत्साहित किया।

समवेत स्वर- आचार्य श्री व्यक्तिमात्र के उत्थान के हेतु थे।

आचार्य श्री एक ऐसी हस्ती थे

जो मिटाए नहीं मिटती, जो बुझाए नहीं बुझती।

आइए, नमन करें-

नमन उनको कोटि-कोटि,जो अध्यात्म पथ के उन्नायक

सन्त सच्चे, सरल ऊँचे, अध्यात्म चेतना के नायक।

आचार्य हस्ती की जय! जय! जय!

पार्श्व में स्वर उभरता है- मेरे अन्तर भया प्रकाश.....

यह स्वर तीव्र-मन्द होते-होते थम जाता है।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.) 312001

आचार्य हस्ती एवं जैन इतिहास पर शोध-कार्य के लिए आमंत्रण

बीसवीं सदी के इतिहास पुरुष आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का शताब्दी वर्ष अनेक प्रकार के श्रेष्ठ कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है।

आचार्य श्री हस्ती ने "जैन धर्म का मौलिक इतिहास" (चार भाग) में अनेकानेक स्थलों पर "आगे और शोध की आवश्यकता है" ऐसे संकेत किये हैं। शताब्दी वर्ष में जैन इतिहास के ऐसे पहलुओं तथा विषयों पर शोध-कार्य को बढ़ाया जाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। ऐसा करने से जैन, इतिहास, भारतीय इतिहास एवं भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य सेवा होगी।

आचार्य श्री हस्ती का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था। उनके बारे में बहुत कुछ लिखा एवं कहा गया है, फिर भी बहुत कुछ लिखना और कहना शेष है। अनेक दृष्टियों से उनके जीवन और साहित्य का आकलन एवं अध्ययन किया जा सकता है।

शताब्दी वर्ष में आचार्य हस्ती के जीवन-दर्शन तथा जैन इतिहास के अनछुए व विमर्शनीय पहलुओं पर कोई शोध-कार्य करना चाहें तो उनका स्वागत है। शोधार्थियों को "जैन धर्म का मौलिक इतिहास" के चारों खण्ड तथा आचार्य हस्ती से सम्बन्धित सभी प्रकार का साहित्य उपलब्ध करवाया जाएगा। इस सम्बन्ध में शोध-कार्य के लिए शोधार्थियों द्वारा समुचित सहयोग व मार्गदर्शन भी प्राप्त किया जा सकता है। शोध-कार्य की सम्पूर्ति पर संघ की ओर से शोधार्थी तथा शोध-निर्देशक को सम्मानित किया जाएगा। इच्छुक शोधार्थी तथा शोध-निर्देशक सम्पर्क करें। निवेदक- **विरदराज सुराणा**, *मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183, बापू बाजार, जयपुर (राज.) दूरभाष : 0141-2575997, 09314012415*

कविता

महावीर के भक्तों जागो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

महावीर के भक्तों जागो, वक्त की आज पुकार है,
संस्कारों पर संकट छाया, भौतिकता की मार है।
महावीर के भक्तों जागो........ ||टेर ||

घर-घर में आ बैठा देखो, टी.वी. इण्टरनेट है,
सुख-साधन की कमी नहीं है, घर मालिक अपसेट है।
ढूंढो इसके कारण ढूंढो, यह कैसा बुखार है,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||1 ||

वायरल से भी बढ़कर के, स्वाइन फ्लू घुस बैठा है,
हक्का, बक्का घर का मालिक, अरे मर्ज यह कैसा है।
युवा पीढ़ी है चपेट में, खतरे में संस्कार हैं,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||2 ||

भौतिकता के भेंट चढ़ गई, महापुरुषों की शिक्षाएँ,
अरु फैशन के भेंट चढ़ गई, मात-पिता की शिक्षाएँ,
नई पीढ़ी है नहीं मानती, कैसे इनको समझाएँ।
मोबाइल और दुपहियों की, घर-घर में भरमार है,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||3 ||

जैन समाज का पतन हो रहा, अब तो आंखें खोलो तुम,
सावधान हो जाओ बंधु, मत वक्त को घोलो तुम।
अब तो इन पर रोकथाम की, सचमुच में दरकार है,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||4 ||

इतने पागल क्यों बनते हो, धन दौलत को पाने में,
हो रही है सेंधमारी, तेरे स्वयं खजाने में।
संस्कारों की हो सुरक्षा, तो जीवन का सार है,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||5 ||

बदनामी हो रही समाज की, कैसी-कैसी घटनाएँ,
मां, बाप के दुःख दर्द को, नहीं समझती ललनाएँ।
धर्म आराधन से ही रुकता है, अशुभ कर्म का द्वार है,
महावीर के भक्तों जागो.......... ||6 ||

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

संस्मरण

भावी घटनाओं को जानते थे आचार्य हस्ती

प्रो. चाँदमल कर्णावट

उन दिनों आचार्यप्रवर गुलाबीनगर जयपुर में विराज रहे थे। मैं सेवारत था, एक दो दिन का अवकाश लेकर पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन-श्रवण के लिए सेवा में पहुँचा था। आचार्यश्री के दर्शन कर अत्यंत आह्लादित था। प्रवचन सुनकर प्रमुदित हुआ। दो दिन पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर उनकी पर्युपासना करता रहा। आचार्यप्रवर के सान्निध्य का पूर्ण लाभ लेता रहा। प्रार्थना से प्रवचन, प्रश्नोत्तर तक सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहा।

सायंकाल आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुआ और विनम्र विनति भी की कि गुरुदेव कृपाकर मंगलपाठ सुनाएँ, मुझे आज जाना है। आचार्यप्रवर ने मेरी विनति को सुना। मुझे वे मास्टरसा के नाम से संबोधित करते थे। वे फरमाने लगे- मास्टर सा आज नहीं जाओ तो क्या है? मैंने सुन रखा था कि आचार्य श्री से मंगलपाठ सुने बिना लोग प्रस्थान नहीं करते और रुक जाते थे, मैं भी रुक गया।

दूसरे दिन प्रातः ज्ञात हुआ कि मैं जिस ट्रेन से पिछली रात्रि को जा रहा था उसका एक्सीडेण्ट हो गया।

मुझे लगता है कि आचार्यश्री हस्ती विशिष्ट ज्ञानी थे। उन्हें अपने ज्ञान में भविष्य की घटनाओं की जानकारी हो जाती थी। जिसके कारण उन्होंने मुझे भावी दुर्घटना से सावधान कर दिया होगा। यह सब उनकी कठोर-निर्मल साधना का सुपरिणाम था। ऐसे साधनाशील अध्यात्म योगी आचार्यप्रवर को कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धा समर्पण।

-प्लॉट नं. 35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

प्रासङ्गिक

आधुनिक विश्व के परिदृश्य में जैन धर्म-दर्शन*

डॉ. धर्मचन्द जैन

विश्व मानचित्र में जैनधर्म का वैशिष्ट्य

विश्व के मानचित्र पर जैन धर्म-दर्शन के अनुयायियों की संख्या को प्रदर्शित किया जाए तो अत्यन्त छोटे बिन्दु द्वारा ही उसे अंकित किया जा सकता है। विश्व में ईसाई, मुस्लिम एवं बौद्धधर्म के अनुयायियों का बोलबाला है। सभी धर्म अपने आधिपत्य का विस्तार करने हेतु सन्नद्ध हैं। धर्म को एक राजनीतिक एवं साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में देखा जा रहा है। राजनीति में कभी त्वचा के रंग को, कभी जाति को तो कभी भाषा एवं धर्म को भी आधार बनाया जाता है। जैन धर्म अभी इस प्रकार के शक्ति-अर्जन की प्रेरणा से दूर है। धर्म को राजनीति एवं साम्राज्यवाद के विस्तार का साधन बनाना उचित भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि धर्म का ऐसा उपयोग संघर्ष, टकराव एवं हिंसा को जन्म देता है, जो धार्मिक भावना का दुरुपयोग है। धर्म का सही स्वरूप तो व्यक्ति के चित्त में रहे विकारों के अपनयन से सम्बद्ध है। वह सबके प्रति प्रेम एवं मैत्री का सन्देश देता है। वह व्यक्ति के जीवन को शान्ति, सौहार्द एवं सबके प्रति मैत्री से भर देता है। धर्म मानवजाति को तोड़ता नहीं, अपितु जोड़ता है।

जैन धर्म वर्ण, जाति, रंग आदि के आधार पर मानवजाति को नहीं बांटता है। जैन धर्म में सम्पूर्ण मानवजाति एक है- "**मनुष्यजातिरेकैव**" (आदिपुराण, 38.45) वाक्य इसकी पुष्टि करता है। जैन धर्म में समस्त एकेन्द्रिय जीवों की एक जाति है। द्वीन्द्रिय जीवों की एक जाति है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय जीवों की जाति है। इसी आधार पर मनुष्य मात्र का समावेश करने वाली मानवजाति स्वीकार की गई। भगवान् महावीर ने धर्म का जो उपदेश दिया वह तत्कालीन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सभी मनुष्यों के लिए था। कहते हैं कि वह मात्र मानवजाति के लिए भी नहीं, देवों एवं तिर्यञ्चों के लिए भी कल्याणकारी था। उन्होंने भी प्रभु के समवसरण में पावन

* जयपुर में पण्डित चैनसुखदास न्यायतीर्थ स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 24 जनवरी 2010 को प्रस्तुत व्याख्यान।

वाणी का श्रवण किया। तीर्थंकरों ने धर्म का उपदेश आत्मिक विकारों को दूर कर दुःखमुक्त होने के लिए दिया था। तीर्थंकरों ने प्राप्त राज्य सत्ता का त्यागकर आत्मविकास हेतु धर्म का मार्ग खोजा, एवं प्राणिमात्र के हित के लिए धर्म का उपदेश दिया। अतः जैन धर्म की दृष्टि में समस्त मानवजाति एक है एवं दुःखमुक्त बनने के लिए कोई भी धर्म का आश्रय ग्रहण कर सकता है। धर्म सत्ता-संघर्ष का साधन नहीं हो सकता है।

विश्व के परिदृश्य में जैन धर्म-दर्शन की यह एक विशेषता हुई कि यह मानवजाति में पारस्परिक भेदभाव को प्रश्रय नहीं देता तथा राजनीतिक-शक्ति एवं साम्राज्यवाद की दौड़ को उचित नहीं मानता। यह धर्म की दृष्टि से एक शुभ लक्षण है। पुनः ग्लोब पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि जैन धर्म का छोटा सा बिन्दु भी बड़ा सशक्त है। जैन धर्म-दर्शन का अध्ययन आज विभिन्न देशों में हो रहा है। इंग्लैण्ड के लन्दन विश्वविद्यालय में पृथक् से जैन विद्या के अध्ययन हेतु सेण्टर स्थापित है। जर्मनी, फ्रांस, पोलैण्ड, नार्वे, जापान, कनाडा, अमेरिका आदि विभिन्न देशों में जैन धर्म-दर्शन एवं उसकी परम्परा का गहनता से अध्ययन हो रहा है। जैकोबी, वेबर, बूहलर, लुडविग एल्सडोर्फ, वाल्टर शूब्रिंग, ग्लेसनेप, विलियम बोले, कालेट कैलियट आदि विद्वानों एवं विदुषियों ने उल्लेखनीय कार्य किया है तथा उसी परम्परा में अब नलिनी बलवीर, पीटर फ्लुगल, पियोत्र बलसेरोविज, पी.एस. जैनी, फ्युजीनागा, जॉन ई.कोर्ट आदि अनेक विद्वान् कार्य कर रहे हैं। उन विद्वानों को जैन धर्म-दर्शन की जितनी गहन जानकारी है उतनी जैन धर्म के अधिकांश भारतीय अनुयायियों को भी नहीं है। अमेरिका से प्रतिवर्ष भारत में जैन धर्म-दर्शन का अध्ययन करने के लिए विदेश मूल के छात्र एवं विद्वान् आ रहे हैं।

यह माना जाता है कि जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु कतिपय राजाओं के राज्यकाल में प्रयत्न हुए, किन्तु बौद्ध धर्म का प्रचार जिस रीति से हुआ उसकी तुलना में जैन धर्म का प्रचार नगण्य था, क्योंकि जैन धर्म के श्रमण-मुनिराजों एवं श्रमणी-आर्याओं की चर्या कठोर है। वे वाहनों का उपयोग नहीं करते, अतः भारत के बाहर उनका भ्रमण नहीं हुआ एवं जैन धर्म भारत तक सीमित रहा। इसके अनुयायी अवश्य विश्व के विभिन्न देशों में रहकर धर्माराधना कर रहे हैं, किन्तु वे मूलतः भारतीय हैं। बीसवीं इक्कीसवीं शती में उनमें जैन धर्म-दर्शन के

प्रति विशेष प्रचार-प्रसार का कार्य मुनि सुशीलकुमार जी, चित्रभानु जी, तेरापंथ की समणियों, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल आदि विद्वज्जनों ने किया है। अमेरिका, हांगकांग, बैंकाक आदि में सभी जैन धर्मावलम्बी एक ही स्थान पर बिना भेदभाव के धर्माराधना करते हैं।

आधुनिक विश्व और उसमें जैन धर्म-दर्शन की उपयोगिता

अब हम आधुनिक विश्व के सन्दर्भ में जैन धर्म-दर्शन की प्रासङ्गिकता अथवा उपयोगिता पर विचार करें। विश्व तो जो पहले था वही आज है, किन्तु अब आधुनिक हो गया है। मानव मन की कमजोरियां जो पहले थी, वे आज भी हैं। दुःख पहले भी था एवं आज भी है। फिर इस आधुनिक विश्व की क्या विशेषता है, जरा विचार करें तो पायेंगे कि यह युग वैज्ञानिक विकास का युग है। विज्ञान के साथ आधुनिक विश्व में तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी विकसित हुई है। उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग के कार्य व्यापक बने हैं। चिकित्सा-विज्ञान, जेनेटिक विज्ञान एवं अन्तरिक्ष विज्ञान ने विशेष प्रगति की है। विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स का विकास हुआ है। इण्टरनेट एवं मोबाइल ने विश्व में संचार-क्रान्ति ला दी है। अब दूर विदेश में बैठा व्यक्ति किसी भी पल जिससे बात करना चाहे कर सकता है। सड़कों पर कारों की कतारें लग गई हैं। बहुमंजिले भवनों एवं अट्टालिकाओं की निरन्तर वृद्धि हो रही है। रसोई से धुआँ गायब हो गया है। महिला की रसोई सुविधाजनक हो गई है। वातानुकूलित यन्त्रों का प्रयोग बढा है। यह सब विज्ञान एवं तकनीकी का विकास है।

किन्तु इसके साथ ही यह भी सत्य है कि आधुनिक विश्व में हिंसा के साधनों का विकास हुआ है। एक से बढ़कर एक अस्त्र-शस्त्र विकसित हुए हैं। पहले जहाँ तलवार से बढ़कर शस्त्र तथा बन्दूक एवं तोप से बढ़कर अस्त्र नहीं था वहाँ अब अणुबम एवं प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण हो गया है। आतङ्कवाद के नाम पर हिंसा के आत्मघाती एवं विश्वघाती हमले हो रहे हैं। हत्या एवं आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हुई है। हिंसा का स्वरूप बड़ा हो गया है, उसका भी विकास हो गया है। वह घर की चार दीवारी से लेकर सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। झूठ एवं चोरी के भी तरीके विकसित हुए हैं। झूठ एवं फरेब ने रूप बदले हैं। अब साइबर क्राइम आ गया है। ईमेल की हाइजैकिंग हो रही है। अपहरण की घटनाएँ बढ़ी हैं। कामोत्तेजना के साधन बढ़े हैं। लिव इन रिलेशनशिप का सिद्धान्त प्रसारित हो

रहा है। एड्स जैसे रोगों ने आक्रमण किया है। परिग्रह की लालसा में बेतहासा वृद्धि हुई है।

मनुष्य की तृष्णा बढ़ रही है। सुख-सुविधा के समस्त साधन जुटा लेने के पश्चात् भी उसकी अधिकार लालसा जागरित रहती है। वह अधिक से अधिक पर अपना अधिकार या सत्ता जमा लेने के लिए प्रयत्नशील है। भोगोपभोग के साधनों एवं वस्तुओं के आज अनेक रूप हैं। बाजार उनसे अटे पड़े हैं। छोटे दुकानदारों के स्थान पर बड़ी एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने मॉल खोल लिए हैं। विज्ञापनों के माध्यम से उपभोक्ता के चित्त को प्रलोभित किया जा रहा है।

संक्षेप में कहें तो आधुनिक युग पदार्थवादी, सुविधावादी एवं भोगवादी दृष्टि से सम्पन्न है। भौतिक विकास के साथ इसमें हिंसा, भ्रष्टाचार, कदाचार, अपराध आदि में वृद्धि हुई है। पुलिस एवं न्यायालयों की अधिक आवश्यकता अनुभव हुई है। सुविधावादी एवं भोगवादी दृष्टिकोण के कारण परिवारों में विघटन हुए हैं। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की अवधारणा का विकास हुआ है, पति-पत्नी में तलाक के मामले बढ़े हैं। दिसम्बर 2007 में भारत के उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश के.जी.बालाकृष्णन ने कहा था कि आज न्यायालयों में पारिवारिक मामलों की संख्या सबसे अधिक है। (राजस्थान पत्रिका, 16 दिसम्बर, 2007) पारस्परिक विश्वास में कमी एवं सन्देह की सूई तेज घूम रही है। यह मनुष्य की दृष्टि का दोष है कि वह जिससे कुछ पाता है उसी का विरोधी बन जाता है, जिसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए उसी के प्रति कृतघ्न बन जाता है।

आज मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जितना सजग है उतना कर्तव्यों के प्रति नहीं। अधिकार एवं कर्तव्य के प्रयोग को ठीक से नहीं समझने के कारण आज परिवार में एवं दाम्पत्य जीवन में दरारें दिखाई पड़ती हैं। जैनदर्शन का अनेकान्त सिद्धान्त हमारे हठाग्रह पर प्रहार करता है तथा दूसरों की भावनाओं एवं उनकी सोच को भी समझने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे मानवीय सम्बन्धों में मधुरता का संचार सम्भव है। आधुनिक विश्व में मानवाधिकारों की चर्चा जोरों पर है, किन्तु जैन धर्म-दर्शन में इस प्रकार के आचरण का विधान है कि न केवल मानव के अधिकार की, अपितु प्राणिमात्र के अधिकारों की रक्षा

स्वतः ही हो जाती है। जैन धर्म के ग्रन्थों में निरूपित अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्त सिद्धान्त सभी प्राणियों के जीने के अधिकार को सुरक्षित रखते हैं। साथ ही उनकी समानता, स्वतन्त्रता एवं शान्ति के अधिकार की भी रक्षा करते हैं। आज मनुष्य में अधिकाधिक वस्तुओं एवं धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमाने की जो लालसा दृष्टिगोचर होती है, उस पर नियन्त्रण जैन दर्शन में निरूपित सम्यग्दर्शन के बिना सम्भव नहीं है। सम्यग्दर्शन होने पर ही व्यक्ति अपरिग्रह के सिद्धान्त को जीवन में भली भांति स्वीकार कर पाता है। वस्तुओं में आसक्ति बनी रहे एवं वस्तुओं की सीमा बाँध ले तो इससे सामाजिक स्तर पर तो लाभ हो सकता है, किन्तु व्यक्ति का निजी तनाव कम नहीं होता। आचारांग सूत्र कहता है कि द्रव्य परिग्रह की मात्रा अधिक या कम होना महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्वपूर्ण है उसमें गृद्धि या आसक्ति को छोड़ना। जितनी आसक्ति छूटेगी उतना ही तनाव कम होता जायेगा।

मनुष्य आज आर्थिक विकास को ही अपने सुख एवं शांति का आधार मान रहा है, किन्तु अर्थ से शान्ति का कोई आनुपातिक सम्बन्ध नहीं है, जैसा कि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एलन क्रूगर (Alan Krueger) एवं नोबल पुरस्कार विजेता मनोवैज्ञानिक डेनियल नेमन (Kneman) का मत है-"The belief that high income is associated with good mood is wide spread, but mostly illusiory. People with above average income are relatively satsified with their lives but are barely happier than others in moment to moment experience tend to be more tense and do not spend more time in particularly enjoyable activities." (DNA, Mumbai, Aug. 26, 2006) यह धारणा कि अधिक आय का सम्बन्ध व्यक्ति के अच्छे मूड के साथ है, अधिकतर भ्रामक है। अनुपात से अधिक आय वाले व्यक्तियों के जीवन का हर क्षण परीक्षण किया जाए तो ज्ञात होता है कि वे भी अपने जीवन में अधिकतर तनाव की ओर अभिमुख बने रहते हैं। अधिक पैसे वाले को अधिक तनाव है।

आधुनिक विश्व में पदार्थवाद, सुविधावाद एवं उपभोक्तावाद का विकास हो रहा है। किन्तु इसका परिणाम है दुःख, तनाव, अवसाद, निराशा आदि विभिन्न मानसिक एवं उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, कैंसर, अल्सर आदि अनेक शारीरिक रोगों में वृद्धि। जैन दर्शन पदार्थ विरोधी नहीं है, किन्तु उसके

प्रति उत्पन्न आसक्ति को त्याज्य प्रतिपादित करता है। उत्तराध्ययन सूत्र कहता है-

> सव्वं जगं जइ तुब्भं सव्वं वावि धणं भवे।
> सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ।।
>
> *-उत्तराध्ययन सूत्र, 14.39*

यदि सारा जगत् तुम्हारा हो जाए एवं सारा धन भी तुम्हारा हो जाए तो भी वह तुम्हें त्राण देने में अपर्याप्त है। अरबपति एवं खरबपति व्यक्ति कितने भी डॉक्टर एवं अस्पताल जुटा लें, तथापि मृत्यु आने पर वे त्राण नहीं पा सकते। धन की उपयोगिता की एक सीमा है, उसके पश्चात् वह भी इस चेतन तत्त्व के दुःख का निवारण नहीं कर सकता। इसलिए आवश्यकता है समझपूर्वक तृष्णायुक्त मन के नियन्त्रण की। ज्ञानार्णव में कहा है-

> एक एव मनोरोधः सर्वाभ्युदयसाधकः।
> यमेवालम्ब्य संप्राप्ता योगिनस्तत्त्वनिश्चयम् ।।
>
> *-ज्ञानार्णव, 22.12*

मन को नियन्त्रित करना समस्त अभ्युदय का साधक है। आज योग की बड़ी चर्चा है। वह भी चित्तवृत्तियों के निरोध की स्थापना करता है। व्यक्ति को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है कि वह किस प्रकार अपने चित्त को वश में करे। इसे शिक्षा के पाठ्यक्रम में योजित करने की महती आवश्यकता है।

पदार्थों से मनुष्य को सुख की प्राप्ति होती है, यह इन्द्रिय ज्ञान के स्तर पर अनुभव होता है, इसीलिए विश्व के अधिकांश लोग उस ओर दौड़ रहे हैं। पुद्गल से इस संसारी जीव का घनिष्ठ सम्बन्ध है। कर्म पुद्गल है, शरीर पुद्गल है, खाद्य पदार्थ पुद्गल है, वस्त्र पुद्गल है, उपकरण पुद्गल है, वाहन पुद्गल है। पुद्गल से इस चेतन जीव का वास्ता असंदिग्ध है। यह इष्ट रूप में मिल जाए तो जीव सुख का एवं अनिष्ट रूप में मिले तो जीव दुःख का अनुभव करता है। पदार्थ इसमें निमित्त बनता है , किन्तु जो पदार्थ को प्रमुखता देता है वह चेतना के मूल्य को घटाता है। वह स्वयं का भी अहित करता है एवं पर्यावरण को भी दूषित करता है। **(क्रमशः)**

-आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(8)

प्रो. सागरमल जैन

तांत्रिक साधना के विधि-विधान और जैन धर्म-

आध्यात्मिक शक्ति के विकास एवं लौकिक उपलब्धियों के लिए मंत्र और यंत्र की साधना विधियों का उल्लेख अनेक जैनाचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में किया है। विशेष रूप से सिंहतिलक सूरि ने मंत्रराजरहस्य में, जिनप्रभुसूरि ने विधिमार्गप्रपा में, मल्लिषेण सूरि ने भैरवपद्मावतीकल्प में, आचार्य कुन्थुसागर ने लघुविद्यानुवाद में तंत्र साधना की अनेक विधियों का उल्लेख किया है। विभिन्न आचार्यों द्वारा प्रतिपादित तंत्र साधना की विभिन्न विधियों में कहीं क्रमभेद है तो कहीं संख्याभेद है और कहीं-कहीं तो मंत्र भेद भी है। वस्तुतः तंत्र-साधना विधियों को लेकर जैन आचार्यों में अनेक आम्नायें प्रचलित रही हैं और उन आम्नाओं के आधार पर साधना-प्रक्रिया तथा मंत्र आदि को लेकर कुछ मतभेद देखे जाते हैं। फिर भी सामान्यरूप से उनमें कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर परिलक्षित नहीं होता। मंत्ररहस्य में सिंहतिलकसूरि ने तांत्रिक साधना के जिस विधान का उल्लेख किया है, उसके अन्तर्गत निम्न विधान आते हैं- 1. भूमिशुद्धि, 2. कराङ्गन्यास, 3. सकलीकरण, 4. दिक्पाल आह्वान, 5. हृदयशुद्धि, 6. मंत्रस्नान, 7. कल्मषदहन, 8. पंचपरमेष्ठी स्थापन, 9. आह्वान, 10. स्थापन, 11. सन्निधान, 12. सन्निरोध, 13. अवगुण्ठन, 14. छोटिकाप्रदर्शन, 15. अमृतीकरण, 16. जाप, 17. क्षोभण, 18. क्षामन, 19. विसर्जन और 20. स्तुति।

वर्द्धमान विद्याविधि में जिस मंत्र-साधना विधि का उल्लेख है, उसमें निम्नलिखित सोलह विधियों का उल्लेख है- 1. पंचाङ्गशौच, 2. भूमिशुद्धि, 3. मंत्रस्नान, 4. वस्त्रशुद्धि, 5. पंचांगुलिन्यास, 6. कल्मषदहन, 7. हृदयशुद्धि, 8. दुःस्वप्न दुर्निमित्ताशनिविद्युत्शत्रुभयादिरक्षा, 9. सकलीकरण, 10. पट या यंत्र पूजा, 11. सजीवतापादन, 12. दिग्बंधन, 13. जप, 14. आसनक्षोभण, 15. क्षमाप्रार्थना, 16. विसर्जन एवं हृदय में इष्ट स्थापन।

ऋषिमंडलस्तव में मंत्र-साधना विधान के निम्न आठ अंग माने गये हैं- 1. मंत्र, 2. न्यास, 3. ध्यान, 4. साधन, 5. जप, 6. तप, 7. अर्चा और 8. अन्तयोग।

श्री सागरचंद सूरि ने मंत्राधिराजकल्प में मंत्र-साधना के निम्नलिखित छः ही अंग स्वीकार किये हैं- 1. आसन, 2. सकलीकरण, 3. मुद्रा, 4. पूजा, 5. जप और 6. होम।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न जैनाचार्यों ने पूजाविधान के अंगों के संबंध में अपने भिन्न-भिन्न मत प्रदर्शित किये हैं। इनमें संख्या, क्रम एवं मंत्र आदि के संबंध में भिन्नता होते हुए भी कोई मौलिक अन्तर परिलक्षित नहीं होता। सभी ने तंत्र-साधना के पूर्व शरीरशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, भूमिशुद्धि, मंत्र स्नान, कल्मषदहन, हृदयशुद्धि न्यास, सकलीकरण आदि का उल्लेख किया है। अन्य तांत्रिक परम्पराओं के समान ही जैनाचार्यों ने भी भूमिशुद्धि, शरीरशुद्धि, वस्त्रशुद्धि के बाह्य विधि-विधानों के साथ विभिन्न मंत्रों की भी योजना की है।

मुद्रा-

तांत्रिक साधना में मुद्राओं का विशेष महत्त्व है। मुद्रा शब्द 'मुद्' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- प्रसन्नता। अतः जो देवताओं को प्रसन्न कर देती है अथवा जिसे देखकर देवता प्रसन्न होते हैं उसे तंत्र शास्त्र में मुद्रा कहा जाता है। किन्तु तंत्रशास्त्र में भी 'मुद्रा' के अनेक अर्थ प्रचलित हैं। इनमें निम्नङ्कित चार अर्थ मुख्य हैं- हठ योग के प्रसंग में मुद्रा का अर्थ है एक विशिष्ट प्रकार का आसन, जिसमें सम्पूर्ण शरीर क्रियाशील रहता है। पूजा के प्रसंग में मुद्रा का अर्थ हाथ और अंगुलियों से बनायी गई वे विशेष आकृतियाँ हैं, जिन्हें देखकर देवता प्रसन्न होते हैं। जैन और वैष्णव तंत्रों में मुद्रा से यही अर्थ अभिप्रेत है। तंत्र की सात्त्विक परम्परा में घृत से संयुक्त भुने हुए अन्न को भी मुद्रा कहा गया है- यह मुद्रा का तीसरा अर्थ है। जबकि वाममार्गी तान्त्रिकों की दृष्टि में मुद्रा का अर्थ वह नारी है जिससे तांत्रिक योगी अपने को सम्बन्धित करता है- यह मुद्रा का चतुर्थ अर्थ है। पंचमकारों में मुद्रा इसी अर्थ में गृहीत है। किन्तु जैनों को मुद्रा का यह अर्थ कभी भी मान्य नहीं रहा है, वे तो मुद्रा के उपर्युक्त दूसरे अर्थ को ही

मान्य करते हैं। अभिधान राजेन्द्रकोश में मुद्रा शब्द के अन्तर्गत कहा गया है, यथा-योगमुद्रा, जिनमुद्रा, मुक्तासुक्तिमुद्रा आदि। जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश में कहा गया है कि देववन्दना, ध्यान या सामायिक करते समय मुख एवं शरीर के विभिन्न अंगों की जो आकृति बनाई जाती है उसमे मुद्रा कहते हैं।

यद्यपि हिन्दू, बौद्ध एवं जैन तीनों ही परम्पराओं की तांत्रिक-साधना एवं पूजा में मुद्रा का महत्त्वपूर्ण स्थान माना गया है, फिर भी मुद्राओं की संख्या स्वरूप, नाम और परिभाषाओं को लेकर न केवल विभिन्न परम्पराओं में मतभेद पाया जाता है, अपितु एक परम्परा में भी अनेक मान्यताएँ हैं। हिन्दू परम्परा में शारदातिलक (23/107-114) में नौ मुद्राओं का उल्लेख है, तो वहीं ज्ञानार्णवतंत्र (4/31-47) में तीस से अधिक मुद्राओं का निर्देश दिया गया है। विष्णुसंहिता (7) के अनुसार तो मुद्राएँ अनगिनत हैं। देवीपुराण (11/16/68-102), ब्रह्मपुराण (61/55), नारदीयपुराण (2/57/55-56) आदि अनेक हिन्दू पुराणों और तांत्रिक ग्रन्थों में मुद्राओं के उल्लेख मिलते हैं। बौद्ध परम्परा में भी मंजू श्री कल्प (380) में 108 मुद्राओं के नाम दिये गये हैं। जैन परम्परा में अभिधानराजेन्द्रकोश में योगमुद्रा, जिनमुद्रा और मुक्तासुक्तिमुद्रा का तथा जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश में योगमुद्रा, जिनमुद्रा, वंदनामुद्रा और मुक्तासुक्तिमुद्रा-ऐसी चार मुद्राओं का उल्लेख मिलता है- 1. दोनों भुजाओं को लटकाकर और दोनों पैरों में चार अंगुल का अन्तर रखकर कायोत्सर्ग में खड़े रहने का नाम जिनमुद्रा है। 2. पल्यंकासन, पर्यंकासन और वीरासन इन तीनों में से किसी भी आसन में बैठकर, नाभि के नीचे, ऊपर की तरफ हथेली करके दोनों हाथों को ऊपर नीचे रखने से योग मुद्रा होती है। 3. खड़े होकर दोनों कुहनियों को पेट के ऊपर रखने और दोनों हाथों को मुकुलित कमल के आकार में बनाने पर वन्दनामुद्रा होती है। 4. वन्दनामुद्रा के समान ही खड़े होकर, दोनों कुहनियों को पेट के ऊपर रखकर, दोनों हाथों की अंगुलियों को आकार विशेष के द्वारा आपस में संलग्न करके मुकुलित बनाने से मुक्तासुक्तिमुद्रा होती है।

प्रियबलशाह ने जर्नल ऑफ इन्स्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा के खण्ड-6, संख्या-1, पृष्ठ 135 में मुद्राओं से संबंधित दो जैन ग्रन्थों का उल्लेख किया

है- 1. मुद्रा विचार और 2. मुद्रा विधि। उनका कथन है कि मुद्रा विचार में 73 मुद्राओं का और मुद्राविधि में 114 मुद्राओं का उल्लेख मिलता है। अभी ये दोनों ग्रन्थ मुझे देखने को नहीं मिले हैं। उपलब्ध एवं प्रकाशित जैन ग्रन्थों में लघुविद्यानुवाद में 45 मुद्राओं को परिभाषित किया गया है और कुछ मुद्राओं के चित्र भी दिये गये हैं। भैरवपद्मावतीकल्प के अंत में भी कुछ मुद्राओं के चित्र हैं, किन्तु ये मुद्राएँ वही हैं जो लघुविद्यानुवाद में उल्लिखित हैं।

मुद्राओं के संदर्भ में एक विस्तृत विवरण विधिमार्गप्रपा की मुद्राविधि नामक 37 वीं विधि में मिलता है। इसमें आह्वान संबंधी नौ मुद्राओं, पूजा संबंधी चार मुद्राओं, षोडश विद्या संबंधी सोलह मुद्राओं, दिक्पाल संबंधी चार मुद्राओं, देवदर्शन संबंधी तीन मुद्राओं , प्रतिष्ठा विधि संबंधी अट्ठाईस मुद्राओं के उल्लेख उपलब्ध हैं। विधिमार्गप्रपा में जिन मुद्राओं का उल्लेख है उनके नाम इस प्रकार हैं- 1. नाराच मुद्रा, 2. कुम्भ मुद्रा, 3. हृदय मुद्रा, 4. शिरो मुद्रा, 5. शिखर मुद्रा, 6. कवच मुद्रा, 7. क्षुर मुद्रा, 8. अस्त्र मुद्रा, 9. महा मुद्रा, 10. धेनु मुद्रा, 11. आवाहनीय मुद्रा, 12. स्थापनी मुद्रा, 13. सन्निधानी मुद्रा, 14. निष्ठुरा मुद्रा या विसर्जन मुद्रा, 15. पाणियुग आवाहनीय मुद्रा, 16. पाणियुग स्थापन मुद्रा, 17. निरोध मुद्रा, 18. अवगुण्ठन मुद्रा, 19. गोवृष मुद्रा, 20. त्रासनी मुद्रा, 21. पूजा मुद्रा, 22. पाश मुद्रा, 23. अंकुश मुद्रा, 24. ध्वज मुद्रा, 25. वरद मुद्रा, 26. शंख मुद्रा, 27. शक्ति मुद्रा, 28. शृंखला मुद्रा, 29. वज्र मुद्रा, 30.चक्र मुद्रा, 31. पद्म मुद्रा, 32. गदा मुद्रा, 33. घण्टा मुद्रा, 34. कमण्डल मुद्रा, 35. परशु मुद्रा (द्वय), 36. वृक्ष मुद्रा, 37. सर्प मुद्रा, 38. खड्ग मुद्रा, 39. ज्वलन मुद्रा, 40. श्रीमणि मुद्रा, 41. दण्ड मुद्रा, 42. पाश मुद्रा, 43. शूल मुद्रा, 44. संहार या विसर्जन मुद्रा, 45. परमेष्ठि मुद्रा, 46. पार्श्व मुद्रा, 47. अंजलि मुद्रा, 48. कपाट मुद्रा, 49. जिन मुद्रा, 50. सौभाग्य मुद्रा, 51. सबीज सौभाग्य मुद्रा, 52. योनि मुद्रा, 53. गरुड मुद्रा, 54. मुक्तासुक्ति मुद्रा, 55. प्रणिपात मुद्रा, 56. त्रिशिखा मुद्रा, 57. शृंगार (भृंग) मुद्रा, 58. योगिनी मुद्रा, 59. क्षेत्रपाल मुद्रा, 60. उमरूक मुद्रा, 61. अभय मुद्रा, 62. वरद मुद्रा, 63. अक्षसूत्र मुद्रा, 64. बिम्ब मुद्रा, 65.प्रवचन मुद्रा, 66. मंगल मुद्रा, 67. आसन मुद्रा, 68. अंग मुद्रा, 69. योग

मुद्रा, 70. पर्वत मुद्रा, 71. विस्मय मुद्रा, 72. नाद मुद्रा और 73. बिन्दु मुद्रा।

मुद्राओं के संदर्भ में यह एक विस्तृत सूची है। जिनप्रभसूरि ने न केवल मुद्राओं के नामों का निर्देश किया है अपितु यह भी बताया है कि किस प्रसंग में किस मुद्रा का उपयोग किया जाता है और उस मुद्रा की रचना किस प्रकार होती है। विस्तारभय से यहाँ हम ये मुद्राएँ किस प्रकार बनायी जाती हैं इसकी चर्चा नहीं कर रहे हैं।

मण्डल

तांत्रिक-साधना में यंत्रों के साथ-साथ मण्डलों का भी उल्लेख पाया जाता है। मुद्रा और मंडल तांत्रिक-साधना में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। जहाँ मुद्रा इष्ट देवता को प्रसन्न करने हेतु हाथ और अंगुलियों की सहायता से बनाई गयी विशिष्ट शारीरिक आकृतियाँ होती हैं वहीं मण्डल ध्यान हेतु चेतना में कल्पित विभिन्न आकृतियाँ होती हैं। वैसे यंत्र और मण्डल में बहुत अधिक अंतर नहीं है। किन्तु जहाँ यंत्र पूजा अथवा धारण के काम में आते हैं वहाँ मण्डल ध्यान के विषय होते हैं। मण्डलों की बाह्य आकृतियाँ बनाकर फिर उन पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्र ने प्राणायाम की चर्चा के अंतर्गत वायु की गतियों, मण्डल एवं उनके प्रकारों का निर्देश किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन धर्म में प्रतिपादित तंत्र-साधना और योग-साधना पर अन्य भारतीय परम्पराओं का पर्याप्त प्रभाव रहा है। यद्यपि जैन आचार्यों ने तंत्र-साधना और योग-साधना के क्षेत्र में अन्य भारतीय परम्पराओं से बहुत कुछ गृहीत किया है फिर भी उनकी विशेषता यह रही है कि उन्होंने इसे अपनी मूलभूत निवृत्तिमार्गी मान्यताओं के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया है। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में अन्धानुकरण भी हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप जैन धर्म दर्शन के निवृत्तिमार्गी स्वरूप पर कुछ खरोचें भी आई हैं, किन्तु यहाँ हमें यह स्मरण रखना होगा कि जैन तंत्रसाधना और योगसाधना का विकास अपनी सहवर्त्ती परम्पराओं के मध्य ही हुआ है इसलिए उनके प्रभावों से पूर्णतः अछूता रहना सम्भव भी नहीं था।

(समाप्त)

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ारोड़, शाजापुर-465001 (म.प्र.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (3)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण अपने शब्दों में धारावाहिक रूप में कर रहे हैं- श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली।

अवतरणिका

(10)

मुनि के उद्गार–आप्त पुरुष का दिशाबोध

"पथिक, अब सुनो, मेरे प्राणों में ध्वनित अनहदनाद को,
उस आप्त पुरुष द्वारा दिये गये
दिशाबोध को।"

"जन-जन ने उस दिव्य पुरुष के मंदिर में
उसके दीये से अपने दीये जलाये हैं,
तुम भी यहाँ अपना दीया जला लेना।
जन-जन ने उनके करुणा जल से स्नान कर
अपने जीवन को निर्मल किया है,
तुम भी उस जल से स्वयं को पावन बना लेना।
जन-जन ने उनकी मृत्युंजयी वाणी को धारण कर
अपने कर्मों में व्यक्त किया है,
ध्यान रख लेना वह तुम्हारे द्वार से लौट न जाये।
जन-जन उनका प्रसाद पाने दौड़ कर जाते थे,
तुम भी उनके प्रसाद की प्रतीक्षा करना।
यदि नहीं मिले तो भी विरह की वेदना से
अनुराग कर लेना और प्रार्थना करते रहना कि

हे प्रभु, अपने कृपा प्रसाद से मुझे वंचित न रख।"

"मैं तो उनकी स्मृतिमात्र से ही
रोमांचित हो उठता हूँ।
उनके उपकार अनन्त हैं।
उनसे सुरभित पवन
आज तक मुझे सुवासित कर रहा है।"

"पथिक, मेरी इस स्वर लहरी में
पावन पुरुष का दिशा बोध भी है
और मेरे उद्‌गारों का अनुरोध भी है।
तुम भी अपना स्वर इसमें मिलालो,
जीवन आनन्द सुधा से ओतप्रोत हो जायेगा।।"

"कितनी भी हो दृढ़ता मुझ में
फिर भी दृग् भर आते हैं,
कितना भी हूँ भूला भटका
फिर भी याद दिला जाते हैं।"

'आज बना है कंठ अलंकृत
अगणित सुधियों की माला से,
पथिक सुनो प्राणों की वीणा
मिलती दृष्टि उजाला से।।"

वैयावृत्त्य

गुरुदेव कहते हैं-
वैयावृत्त्य का लोक प्रचलित अर्थ है- सेवा।
पर जिनशासन में
'सेवा' शब्द नहीं, प्रत्युत 'वैयावृत्त्य' आया है।
सेवा हो सकती है सावद्य भी
और निरवद्य भी।
वैयावृत्त्य द्योतक है केवल निरवद्यता का।
व्यावृत्त पुरुष का परिणाम है वैयावृत्त्य,
आगम में स्वीकृत है इसी का औचित्य,

इसी का माहात्म्य।
व्यावृत्त पुरुष वह जो निवृत्त है,
अनासक्त है, उदात्त है,
शुद्ध आशय सहित है,
अपेक्षा रहित है।
सात्त्विक एवं पूज्य पुरुषों के दुःख दूर करने की,
उन्हें धर्म में स्थिर करने की,
शुद्ध भावना से सेवा करना ही,
व्यावृत्त पुरुष का परिणाम है,
जो निष्काम है।
स्वार्थवश सेवा सौदा है,
परन्तु निःस्वार्थ सेवा मुक्ति की संपदा है,
उत्कृष्ट तप का आचरण है,
गुणस्थान का वरण है,
आत्म गुणों का रक्षण है।

धीरता, गम्भीरता,
सहनशीलता, समर्पणता,
वत्सलता एवं आत्मीयता के बिना
वैयावृत्त्य सम्भव नहीं।
माया का परिहार कर,
दम्भ का प्रतिकार कर,
मान पर प्रहार कर,
आत्म भाव से,
सेवा का विचार और आचार ही
जिनशासन की सच्ची सेवा है।

हे गुरुदेव!
तुमने सत्य ही कहा,
वैयावृत्त्य एक सर्वोत्तम कृत्य है,
साधना का अनुपम पथ्य है,

पर परिणाम अचिंत्य है,
और कर्ता तो वस्तुतः स्तुत्य है।

मैंने जाना कि-
यह साधना का उत्कृष्ट सोपान है,
सौहार्द का संधान है,
अहं विगलन का विज्ञान है,
ऊर्ध्व भावों का वितान है;
सात्त्विक जनों का सम्मान है,
संघ के लिए वरदान है,
तप में प्रधान है,
और यही जिनशासन का विधान है।

इसमें सम्यक्त्व की सुवास है,
मुक्ति की प्यास है।

यह तीर्थयात्रा है
तलहटी से शिखर की,
अंधकार से प्रकाश की,
असत् से सत् की
मृत्यु से अमरत्व की,
ससीम से असीम की,
अशान्ति से आनन्द की।

वैयावृत्त्य की साधना,
पुष्ट करती है सात्त्विक जनों की आराधना,
यही तो है जिनशासन की प्रभावना।

हे सेवाधर्म के संवाहक!
तेरा सेवा धर्म तो वचन में ही नहीं,
कर्म में भी अद्वितीय था।
इसकी महत्ता प्रतिपादित करने वाले
एक अनुपम गायक थे।

मेरे कर्ण में आज भी गुंजायमान है
तेरा वह अमरगीत-
'सेवा धर्म बड़ा गम्भीर
पार कोई विरला पावेगा'
वैयावृत्त्य तो तुम्हारी रग-रग में बसी थी
चाहे वह बाल तपस्वी की हो,
स्थविर की हो, रुग्ण साधुजन की हो,
या फिर पूज्यजनों की हो।
तुमने धर्म संघ में वैयावृत्त्य
की उत्तम व्यवस्था को उत्कर्षता प्रदान कर
जिनशासन में एक उदाहरण उपस्थित किया।
मैंने सुनी है कैन्सर के भयावह रोग से पीड़ित
स्थविर अमरमुनि जी की तेरी सेवा
जो तुम्हारे प्रयोजन की
निरामय प्रयोगशाला बन गई।
प्रभु के भी वचन हैं कि ऐसा वैयावृत्त्य
बन सकता है तीर्थंकर गोत्र बन्ध का कारण। (क्रमशः)

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2010] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'कपिल मुनि' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 63 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	श्रेया मेहता-मदनगंज-किशनगढ़	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कशिश जैन-कोटा	19
तृतीय पुरस्कार- 150/-	आकाश जैन-टोंक	18.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	गरिमा जैन-कोटा	18
	नीति संघवी-बदनावर	18
	नरेश जैन-नदबई	18
	रूबी जैन-बड़ौदाकान	18
	स्वाति जैन-बजरिया	18

आचार्य हस्ती जन्म-शती

श्री हस्तिमल्ल शतक (3)

श्री सुमन्त भद्र

युग प्रभावक युगप्रधान रत्न संघ परम्परा के
सप्तम आचार्यप्रवर दिव्य गणाधीश हैं
महावीर स्वामी के इक्यासीवें पट्टधर जो
जैन-जगन्मार्तण्ड साक्षात् जगदीश हैं
जिनशासन कीर्तिध्वज भारत में लहराया
सामायिक-स्वाध्यायद्वय प्रवर्तक महीश हैं
प्रेरणा के ऊर्जास्रोत धर्मघोष बोधिसत्त्व
आचार्य हस्तिमल्ल मनीषी कवीश हैं ||19 ||

पन्द्रह सौ आठ विक्रम संवत् में धर्मक्रान्ति
सूत्रपातकर्ता लोंकाशाह धर्मवीर हैं
बाह्याडम्बर भौतिक कर्मकाण्ड सह शिथिलाचार
कृष्णघनभेदक प्रखर सूर्य मतिधीर हैं
चपलागति विकसित जिनधर्ममूलरूप सम्पादक
विश्वकल्याणक-पर्वनायक रणधीर हैं
उसी श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा के
आचार्य हस्तिमल्ल गणिवर अभीर हैं ||20 ||

लोंकाशाह-श्रेणी-गणि धर्मदास धर्मसिंह
लवजी ऋषि जीवराज हरजी लोकाख्यात हैं
क्रियोद्धारक आगमानुसाराचार क्रियानिष्ठ
श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन यतिप्रभात है
निन्यानवे शिष्यकार गणी धर्मदासशिष्यगण
बाइस भागविभक्त शुद्धधर्मा विख्यात हैं

धन्नाशिष्य आचार्य भूधर तपस्वीरत्न
क्षमाशील जिनशासनसुरभि पारिजात हैं ||21 ||

पूज्याचार्य रघुनाथ जयमल्लजेतसीजी
एवं चतुर्थ गणी कुशलो सुधीर है,
कुशलो जी कुशलचन्द श्रमण श्रेष्ठरत्नसंघ-
परम्परा के मल्लपुरुष वैयावृत्त्यवीर हैं
प्रथमाचार्य कुशलचन्द-परम्परा के पट्टधर
गुमानचन्द समर्थ गणी शुद्ध धर्मवीर हैं
तच्छिष्य ताराचन्द्र अनुशिष्ट रत्नचन्द्र
मर्यादा-श्रमणोत्तम वीरवाणी वीर हैं ||22 ||

तृतीय से षष्ठपट्टधर क्रमशः हुए
हमीरमल्ल कजोड़ीमल्ल विनयचन्द्राचार्य हैं
शोभाचन्द्र उन्नीस सौ तिरासी विक्रम तक
सप्तमाचार्य हस्तिमल्ल लोकप्रिय आर्य हैं
वाग्मिता मनस्विता महर्थ संयमशीलता में
अद्वितीय अनुपमेय सर्वव्यवहार्य हैं
शासन प्रभावना में नरमृगेन्द्र स्वयंबुद्ध
आचार्य हस्तिमल्ल भव्य अनिवार्य हैं ||23 ||

रत्नसंघ पट्टधर परम्परा आश्चर्ययुक्त
लघुवय में दीक्षित आचार्य सर्वसार हैं
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपोवीर्य संयुक्त
जिनशासन परम्परा के अद्भुत महत्तार हैं
सम्प्रदाय-व्यवस्था-परिधिनिष्ठ भेदरहित
संघसार्थक साधना के दिव्य रत्नागार हैं,
सप्तमाधीश संघनायक सर्वगुण सम्पन्न
आचार्य हस्तिमल्ल महामहिमाचार हैं ||24 ||

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र तीर्थंकर चक्रवर्ती
वासुदेव प्रतिवासुदेव बलदेव जन्मभूमि हैं
धर्मकर्मदानदयावीरप्रसू पुण्यधाम
मुक्तिकाम सुरगणहित मनुजकर्मभूमि हैं
संस्कृति विज्ञान-ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य-वीर्य
तपोधरा विद्या-कला-शिक्षा-मर्मभूमि है
युगोद्योत धर्मगुरु परम्पराधरित्री शुभ
आचार्य हस्तिमल्ल रत्नवर्म भूमि हैं ||25 ||

भारत में राजस्थान वीरवासस्थान प्रवर
संयम-शील-सौरभ का प्रसृत सुवास है
दानशीलतपभाव प्रवण योगवाही दिव्य
निर्दोष जीवन जहां ऋजु योगाभ्यास है
आत्मशोध बोधसरित्प्रवह शुभ्र निर्मल है
समता सहिष्णुता सहयोग का समास है
व्यसन मुक्त जीवन सदाचार युक्त व्यवहार
आचार्य हस्तिमल्ल-बोधक प्रभास है ||26 ||

मरुधरा मुकुटमणि-सम जोधपुर जनपद में
जोजरी नदी-तट पर पीपाड़ ग्राम है
धन्यधान्य समृद्ध जैनश्रमणों की जन्मभूमि
दीक्षा-विहार भूमि परम तीर्थधाम है
रत्नवंशमूलपुरुष श्रमण वर्य कुशलचन्द्र-
जन्मधरा कनीरामदेहावसानाभिराम है
आचार्य जयमल्ल-रत्नचन्द्र विचरणभू
आचार्य हस्तिमल्ल-धारिणी ललाम है ||27 ||

(क्रमशः)

-ए 1/3, सुखवानी उद्यान, पिंचरी-चिंचवड़ रोड़, पुणे-411033

आचार्य हस्ती जन्म-शती

हस्ती-गुणसौरभ (3)

श्री कस्तूरचन्द बाफना

(64)

उत्कृष्ट साधक

प्रतिपल साधनामय जीवन, आत्मसात् किया तुमने।
भव भ्रमण मिटाने वाली, उसका वरण किया तुमने।।

(65)

उच्चकोटि के साधक

स्व को सक्षम बनाया साधना से, फिर पर का कल्याण किया।
साधना के हर क्षेत्र में, स्थापित कीर्तिमान किया।।

(66)

पापभीरु

मोहनी मूरत सोहनी सूरत, चेहरे पे निखरा नूर था।
सावद्य क्रिया से डरनेवाले, धर्म क्रिया में शूर था।।

(67)

सर्वगुण सम्पन्न

कर्म में कृष्ण, रहम में रहीम, मर्यादा में राम था।
महावीर के शासन का नायक, सर्वगुणों का धाम था।।

(68)

बहुआयामी

दस में दीक्षा, आचार्य बीस में, चतुर्विध संघ का नायक।
बहु आयामी जीवन उनका, दर्शन था अति सुखदायक।।

(69)

पग पग पर निधान

जिन नहीं पण जिन सरीखा, केवल-सुत केवली जैसा था।
पग-पग पर निधान था उनके, माँ रूपा का बेटा था।।

(70)

मन देवता

मन मंदिर के देवता, हर पल करता हूँ पूजा।
गुरु तो बस हस्ती है, और नहीं कोई दूजा।।

(71)

यशस्वी

पीपाड शहर में जन्म ले के, भारतभर में तुम चमके।
धर्म साधना की सुरभि से, दिग्दिगंत में तुम महके।।

(72)

सूर्यचंद्र समान

सूरज सी लाली चेहरे पर, शीतलता थी चंद्र समान।
कर्म-अरि को नष्ट करने, संभाली साधना की कमान।।

(73)

कल्याणरूप

कल्याणरूप हो मंगल हो तुम, देव रूप के धारी थे।
ज्ञानवंत हो उत्तम गुरुवर, इस युग के अवतारी थे।।

(74)

कोमल कठोर

नवनीत से कोमल थे दिल के, साधना में वज्र समान।
हस्ती की मस्ती अनूठी, निज स्वरूप को लिया पहचान।।

(75)

अतिशय धारी

जहाँ कहीं जाते गुरुवर, लग जाता वहाँ मेला।
जंगल भी मंगल हो जाता, मिट जाता हर कोई झमेला।।

(76)

स्वाध्याय

कर्मों को क्षय किया, तप की अग्नि जला करके।
स्वाध्याय का बाग लगाया, ज्ञान का नीर बहा करके।।

(77)

असीम शक्ति

जीवन निर्माण के शिल्पकार, असीम शक्ति के धारी थे।
अप्रमत्त था जीवन उनका, पूर्ण बाल ब्रह्मचारी थे।।

(78)

स्व-पर कल्याणकारी

स्व पर कल्याण एक मात्र था लक्ष्य उनका,
वैर नहीं मैत्री हो सर्वत्र, व्यापक था लक्ष्य उनका।
जगह-जगह पर वर्षों से चल रहे थे समाज कलह,
मनमुटाव मिटाया उनका आपस में कराया प्रेम सुलह।।

(79)

देव पूज्य

सभी धन्य होते दर्शन आपके पाकर।
देवा वि नमंसंति, गुरुहस्ती ऐसे गुण सागर।।

(80)

सामाजिक प्रगति में योगदान

सदा समाज ऋणी रहेगा, समाज को तुमने गति दी।
विभिन्न योजनाओं के द्वारा समाज की तुमने प्रगति की।।

(81)

क्रोध पर नियंत्रण

अनुभव युक्त ज्ञान था उनको, मन से थे वे शुद्ध।
कडवे प्रसंगों पर भी उनको, नहीं देखा कभी भी क्रुद्ध।।

(82)

आनंददायक

तीन करण तीन योग एकसे, साधना प्रिय सन्त था।
जहाँ कहीं भी जाते गुरुवर, छा जाता वसंत था।।

(83)

विवेकशील

चलने, बैठने, उठने में, हर बात में बड़ा विवेक था।
समाधान करते प्रश्नोत्तर में, जवाब बड़ा सटीक था।।

(84)

वाणी में जादू

मौन साधना के साधक गुरुवर, जादू था वाणी में इनके।
सफल होते काम सभी के, पद्मचिह्न था चरणों में जिनके।।

(85)

मृत्युंजय

साधना की शक्ति का, प्रायोगिक रूप दिखाया तुमने।
जीवन के साथ मृत्यु निश्चित, मृत्युंजय बन दिखाया तुमने।।

(86)

अच्छा जीवन-मरण

अच्छा मरण होता उसका, जिसने अच्छा जीवन जिया।
जन्म से लेकर मृत्यु तक, अच्छे से अच्छा काम किया।।

(87)

प्रयाण

साधु से आचार्य बने, अरिहंत का लक्ष्य बनाया तुमने।
पांचवा आरा बाधक था, अतः प्रयाण किया तुमने।।

(88)

पावापुरी

स्वर्गवासी हुए निमाज में, इन्द्रपुरी इसको बना दिया।
छोटे से निमाज को, पावापुरी तुमने बना दिया।।

(89)

अमर

जीवन जीया संयमी बनकर, मृत्यु ने बना दिया अमर।
जीवन के हर पहलू में गुरुवर, तुमने न छोड़ी कोई कसर।।

(90)

संथारा

अंतिम इच्छा संथारे की, वो भी पूर्ण हुई तेरी।
समता का आदर्श रखा जग में कमाल की हिम्मत थी तेरी।।

(91)

किन शब्दों में गुणगान करें हम, शब्द कोष अधूरा है।
जीवन के संध्या काल में किया तूने सवेरा है।।

(92)

आत्मा, महात्मा परमात्मा

पोह सुदी चवदश को जग में, अवतरित हुई यह आत्मा।
दस बरस की लघुवय में, बन गई महात्मा।।
उत्कृष्ट भाव से संथारा लेकर, बन गई परमात्मा।
कोटि नमन गज चरणों में अहो-अहो हे दिव्य आत्मा।

(93)

कस्तूरचंद तव चरणों का चाकर, भवभव चाहूँ तेरी शरण।
दस दिनों में हस्ती शतक बनाया, तव चरणों में है अर्पण।।

(94)

हर पल अविस्मरणीय
याद करने की क्या जरूरत, विसरता ही नहीं तुझे।
आँखों आगे सूरत तेरी, भव अटवी से पार लगा देना मुझे ।।

(95)

हस्ती शतक बनाया, सिर्फ तुम्हारी मेर है।
मधुमास की कोकिला, सम अंतरंग की टेर है।।

श्रद्धा व समर्पण की फलश्रुति - मुक्ति का राही

श्री सम्पतराज जी चौधरी की काव्यकृति 'मुक्ति का राही' सीडी के साथ पाठकों के हाथों में पहुँची और पहुँच रही है। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के भक्तगण एवं काव्यरसिक इसे पढ़-सुन कर आत्म-विभोर हो रहे हैं। इसे बार-बार पढ़ने-सुनने का मन करता है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि पुस्तक से भी अधिक प्रभावशाली इसकी संगीतमय सीडी बन पड़ी है। इस समयोचित प्रस्तुति से नई पीढ़ी में श्रद्धा और संस्कारों का जागरण होगा।

इस काव्यरचना में उन्हें पूज्य श्री गौतम मुनि जी म.सा. का अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन मिला, फलस्वरूप पूज्य श्री गौतममुनि जी की काव्य-प्रतिभा की झलक पद-पद पर दिखाई पड़ती है। श्री मधु काबरा ने श्रेष्ठ व सरस प्राक्कथन लिखा है। उन्होंने अतीव हृदयग्राही शैली में आचार्य हस्ती के चुम्बकीय व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया है।

तीन वर्ष के दीर्घ परिश्रम से तैयार की गई इस कृति के आकर्षक व नयनाभिराम मुद्रण एवं सुमधुर सीडी पर सम्पतराज जी ने लाखों रुपये खुशी-खुशी खर्च किये और सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को प्रकाशक होने का गौरव प्रदान किया। फिर भी कहीं इस तथ्य का प्रत्यक्ष/परोक्ष उल्लेख तक नहीं किया। पूज्य आचार्य श्री व संघ के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा और असीम समर्पण का यह उत्कृष्ट प्रमाण है। इस कृति के माध्यम से उन्होंने पूज्य आचार्य श्री की शाश्वत श्रद्धार्चना की है। उनके इस महनीय उपकार के लिए संघ, समाज, काव्यप्रेमी व भक्तगण उनके आभारी हैं। मैं मेरी ओर से तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ।

एक व्यस्त एवं वरिष्ठ चार्टर्ड एकाउटेंट होते हुए भी श्री चौधरी जी ने अपना तन, मन, धन संघ को अर्पण किया है। वे तीन वर्ष तक मण्डल के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। **अब मैं श्री सम्पतराज जी चौधरी को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का कार्याध्यक्ष मनोनीत करता हूँ।**

-पी. शिखरमल सुराणा

अध्यक्षः सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

प्रासङ्गिक

स्कूलों में महावीर जयन्ती

डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक महापुरुष हैं। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को पूरे संसार में उनका जन्म कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति, उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। भारत के कोने-कोने में तथा दुनिया के कई देशों में महावीर जयन्ती की धूम रहती है।

जैन परम्परा में आध्यात्मिक दृष्टि से पर्युषण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पर्व है तो सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महावीर जयन्ती की अधिक महत्ता है। महावीर जयन्ती की कई दृष्टियों से विशेषता है। महावीर जयन्ती एक ही दिन मिलजुल कर मनाई जाती है। यही एक ऐसा पावन दिन है, जिसके निमित्त से सभी जैन मत-मतान्तर से परे होकर मिलजुल कर अपने परम उपकारी आराध्य प्रभु तीर्थंकर महावीर का विविध रूपों में पावन स्मरण करते हैं। यही नहीं, जैनेतर वर्ग, जन प्रतिनिधि, लोक-सेवक तथा विशिष्टजन भी किसी न किसी रूप में महावीर जयन्ती से जुड़ते हैं। राजकीय अवकाश होने के साथ-साथ राजस्थान सहित भारत के कुछ राज्यों में महावीर जयन्ती पर कानूनन मद्य-मांस निषेध भी रहता है। इस तरह सामाजिक-समता, राष्ट्रीय-एकता और पर्यावरण-रक्षा के रूप में भी इस पर्व का बहुत महत्त्व है।

इस पुनीत प्रसंग पर तीर्थंकर महावीर के अनुयायियों द्वारा अनेकानेक ऐसे सेवा-कार्य और कार्यक्रम किये जाते हैं, जो मानव-मात्र और प्राणिमात्र को समर्पित होते हैं। जन-सामान्य के व्यापक हित तथा समाजोत्थान में उनका अप्रतिम तथा दीर्घकालीन योगदान होता है। वस्तुतः महावीर जयन्ती सिर्फ जैनों का ही पर्व नहीं होकर, पूरे समाज और देश का पर्व है। यह एक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पर्व है। भगवान् महावीर के देश-कालातीत व्यक्तित्व और उनके सार्वभौमिक उपदेशों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह एक 'वैश्विक पर्व'

है।

संसार को अहिंसा और अनेकान्त का अमर संदेश देने वाले वर्धमान महावीर के जन्मोत्सव के प्रति जाने-अनजाने उपेक्षा उचित नहीं है। अनेक प्रकार की उपेक्षाओं में एक उपेक्षा है- शिक्षण संस्थाओं में महावीर जयन्ती के प्रति उदासीनता। कुछ शिक्षण संस्थाओं के संचालकों को उनकी संस्थाओं में महावीर जयन्ती उत्सव आयोजित करने का मैंने सुझाव दिया। कुछ ने इसे स्वीकार किया तो कुछ ने इसे टाल दिया। कुछ ने पूछा कि इस पर्व को किस रूप में मनाया जाए?

विद्यालयों में महावीर जयन्ती पर्व मनाना आज कई दृष्टियों से प्रासंगिक तथा आवश्यक है। विद्यालयों में महावीर जयन्ती मनाने को लेकर किसी भी प्रकार की औपचारिक या अनौपचारिक अड़चन नहीं है। जैसे अन्य महापुरुषों की जयन्तियाँ आदि पर्व विद्यालयों में मनाए जाते हैं, वैसे ही महावीर जयन्ती का आयोजन भी किया जा सकता है। जैन समाज द्वारा संचालित कुछ विद्यालयों में महावीर जयन्ती का आयोजन होता भी है। कुछ विद्यालयों के विद्यार्थी सामूहिक रूप से जुलूस में भाग लेकर अहिंसा और प्रेम का सन्देश देते हैं। लेकिन अधिकांश विद्यालयों में इस सम्बन्ध में कोई कार्यक्रम नहीं होता है। कुछ विद्यालय अवकाश का बहाना करते हैं, लेकिन जैसे अन्य कुछ पर्व-दिवस एक या कुछ दिन पूर्व मना लिये जाते हैं, वैसे ही महावीर-जयन्ती को भी मनाया जा सकता है।

भगवान महावीर के जन्म, जीवन की घटनाओं और उपदेशों के आधार पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम स्कूलों में किये जा सकते हैं। उनके जीवन की अनेक ऐसी घटनाएँ हैं, जिनके आधार पर सुन्दर तथा प्रभावशाली नाटक, संवाद आदि बनाए एवं प्रस्तुत किये जा सकते हैं। प्रयास किये जाएं तो कुछ घटनाओं के आधार पर डोक्युमेंटरी, लघु फिल्में आदि भी बनाई एवं दिखाई जा सकती हैं। पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओं के प्रति करुणाभाव बढ़ाने वाली कुछ अच्छी लघु फिल्में बनी हुई भी हैं। उन्हें जुटाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। अन्य तीर्थंकरों के जीवन तथा प्राचीन जैन इतिहास से सम्बन्धित अनेक घटनाओं की प्रस्तुति भी इस अवसर पर अत्यन्त प्रेरणास्पद और

प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है।

निबंध, कविता, चित्रकला आदि कई माध्यमों से भी भगवान् महावीर के जीवन-सन्देशों को जीवन्त किया जा सकता है। अहिंसा, शाकाहार, व्यसनमुक्ति के साथ-साथ बड़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मान तथा दीन-दुःखियों के प्रति प्रेम को अभिव्यक्त करने वाले कार्यक्रम इस अवसर पर किये जा सकते हैं। बच्चों की कला, कल्पना और प्रस्तुति ऐसी सरल-तरल व सटीक होती है कि उससे बड़े-बड़े दंग रह जाते हैं। इनके अलावा सन्तों के प्रवचन, विद्वानों के व्याख्यान और कवियों के काव्यपाठ भी इस अवसर पर रखे जा सकते हैं।

विद्यार्थियों में करुणा और मानवीय मूल्यों का प्रचार करने वाली भारत सरकार द्वारा मान्य संस्था 'करुणा इण्टरनेशनल' ने इस प्रकार के अनेक कार्यक्रम सुझाए हैं। संस्था द्वारा प्रकाशित मार्गदर्शिका में महावीर जयन्ती सहित प्रमुख सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों को मनाने के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान किया गया है। वर्तमान में लगभग दो हजार विद्यालयों में इस संस्था के क्लब संचालित हैं। करुणा इण्टरनेशनल के मुख्यालय का पता है- **36, (Old No.70), Sumbudoss Street, Chennai-600001**। देश के प्रत्येक विद्यालय में इस संस्था के 'करुणा क्लब' की स्थापना होनी चाहिये।

विद्यार्थियों के माता-पिता तथा अभिभावक विद्यालय-प्रशासन से यह अनुरोध करें कि उनके विद्यालय में महावीर जयन्ती मनाई जाए। अध्यापक वर्ग द्वारा पहल की जाए तो यह कार्य बहुत ही आसान हो सकता है। विद्यार्थियों के प्रोत्साहन/पुरस्कार के लिए समाज के उदारमनाओं का सहयोग लिया जा सकता है। निश्चित ही बहुत ही गरिमा, सादगी, अनुशासन और उपलब्धियों के साथ विद्यालयों में महावीर जयन्ती समारोह आयोजित किया जा सकता है और करना चाहिये। यह समय की मांग है और आवश्यकता भी। इस सम्बन्ध में लेखक तथा जिनवाणी को आप अपने सुझावों और प्रयत्नों से अवगत कराएँ।

-International Law Centre, Mylapore,
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Chennai-600004

शोधालेख

विपाक सूत्र में वर्णित दुःख विपाक की कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. हुकमचन्द जैन

विपाकसूत्र में कर्म-सिद्धान्त का दार्शनिक, गहन एवं गम्भीर विश्लेषण उदाहरणों के माध्यम से प्रतिपादित किया गया है। सांसारिक जीव अनेक प्रकार के कर्मों का बंध करते हैं, उनमें प्रमुख शुभ-अशुभ दो भेदों का उल्लेख जैन दर्शन[1], बौद्ध दर्शन[2], सांख्य दर्शन[3], योग दर्शन[4], न्याय दर्शन[5], वैशेषिक दर्शन[6] और उपनिषद्[7] में हुआ है। इन शुभ-अशुभ कर्मों का 'पुण्य' और 'पाप' शब्दों से भी कथन हुआ है। विपाक सूत्र में पुण्य एवं पाप कर्मों के फल का निरूपण किया गया है। व्यक्ति के अनुकूल और प्रतिकूल फल ही क्रमशः पुण्य और पाप हैं। शुभ फल की सभी इच्छा करते हैं, किन्तु पाप फल की इच्छा कोई नहीं करता। फिर भी पाप के फल से बचा नहीं जा सकता।[8] जीवों ने जिन कर्मों का बंध किया, उनका भोग वर्तमान भव में अथवा आगामी भव में अवश्य करना पड़ता है। किये कर्मों का फल भोगे बिना प्रायः छुटकारा नहीं होता है।

विपाकसूत्र में पाप और पुण्य के परिणामों को उदाहरणों, दृष्टांतों एवं कथाओं के माध्यम से सरलतम रूप से समझाने का प्रयास किया गया है। जिन जीवों ने पूर्व में पापकर्म किये, उन्हें आगामी भव में दारुण वेदनाएँ प्राप्त हुईं। जिन जीवों ने सुकृत कार्य किया उन्हें सुख मिला। दुःख-विपाक एवं सुख-विपाक के अध्ययनों में इन्हीं कर्मफलों का वर्णन किया गया है।[9] पूर्व जन्म में उपार्जित किए गये पाप कर्म रोग-शोक, छेदन-भेदन, मारण-पीटन आदि दुःखपूर्ण दुर्गति के गर्त में जीव को धकेल देते हैं। किसी पुण्य योग से वह जीव मानव-जन्म पा लेता है तथापि पूर्वकृत संस्कार उसे पुनः पाप कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे वह दुःख के गर्त में गिरता जाता है और इस प्रकार दुख परंपरा चलती रहती है।

अब प्रश्न उठता है कि यह जीव पाप-पुण्य का कर्म बंधन कैसे करता है?

जीव क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषायों से ग्रस्त होकर हिंसा, असत्य, अचौर्य, अब्रह्म, परिग्रह आदि के चक्कर में पड़ जाता है। सप्त व्यसनों (मद्य, माँस, जुआ, चोरी, परस्त्रीगमन, वेश्यागमन एवं आखेट) में फँस जाता है तथा पाप कर्मों का बंध करता है और तिर्यंच, नरक आदि कई योनियों में भटकता है। यही दुःख विपाक है। इसके विपरीत सम्यक्त्व पूर्वक व्रताचारों के महत्त्व को समझता है, सुपात्रों को दान करता है तथा कषायों से दूर रहता है तो वह पुण्यार्जन कर स्वर्गगामी होता है। यह सुख विपाक है।

दुःख विपाक के दुष्परिणामों को समझना और सुख विपाक के महत्त्व को समझना तथा तदनुसार जीवन में सत्कर्मों को उतारना अत्यन्त कठिन है। कथा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके सहारे कठिन से कठिन कर्म-ग्रंथियों को शिथिल किया जा सकता है। अतः विपाक सूत्र में कर्मों के विपाक का तलस्पर्शी कथन किया गया है। कथाएँ केवल मनोविनोद का साधन ही नहीं होती, अपितु हृदय के मर्मस्थल को स्पर्श करती हुई जीवनोपयोगी होती हैं।

विपाकसूत्र के प्रथम दस अध्ययन दुःख विपाक से सम्बद्ध हैं, जिनमें दुःखकृत कर्म-बंधन के फल का वर्णन किया गया है तथा 11 से 20 वें अध्ययनों में सुखविपाक के अन्तर्गत पुण्य के परिणाम की चर्चा की गई है। अतः दुख-विपाक में नरक सदृश दुःखों का वर्णन है तो सुखविपाक में स्वर्ग सदृश सुखों का वर्णन है। विपाकसूत्र में यह बताया गया है कि दुःखद फलों को देने वाली पापकर्म रूपी बेल के कारण नाना प्रकार के दुःखों की परंपरा से बंधे हुए जीव कर्म फल भोगे बिना छूट नहीं सकते। हमें जो भी दुःख एवं सुख मिलते हैं वे हमको हमारे ही द्वारा पूर्व एवं वर्तमान में किए गए अच्छे एवं बुरे कार्यों के फलस्वरूप ही मिलते हैं। प्रत्येक जीव को सुख अथवा दुःख मिलने में उन जीवों द्वारा किए गये कर्म उपादान कारण हैं। किसी भी प्राणी अथवा पदार्थ में इतनी शक्ति नहीं है कि वह किसी जीव को सुख अथवा दुःख दे सके।

मृगापुत्र-

विपाकसूत्र के अन्तर्गत दुःखविपाक के प्रथम अध्ययन में मृगापुत्र का कथानक है। इसमें मृगा गांव में विजय नाम का एक राजा है उसकी मृगा नाम की पत्नी है, उसके मृगापुत्र नाम का बालक है, जो जन्मांध, गूंगा एवं बहरा है। वह

पण्डु,हुण्ड और बाघ रोग से पीड़ित था। उसके हाथ, पांव, नेत्र और नासिका भी नहीं थी, केवल अंगोपांग था, मात्र आकार ही था। इसलिए मृगादेवी उसे गुप्त रूप से भूमिगृह में रखकर पालन-पोषण करने लगी। उसी मृगा ग्राम में एक जन्मांध व्यक्ति रहता था। वह एक सचक्षु व्यक्ति के साथ डण्डा पकड़ कर चलता था। वह बहुत मैला, कुचेला और गंदा था, उसके बिखरे हुए बालों पर मक्खियाँ भिन-भिना रही थीं। ऐसा वह व्यक्ति घूमता हुआ लोगों में करुणा भाव पैदा कर रहा था।[10] उसी समय भगवान् महावीर भी उसी नगरी में पधारे। जनता तथा राजा के साथ वह जन्मांध अन्य पुरुष भी भगवान् की वंदना कर भगवान् के प्रवचन सुनने बैठ गया, उस जन्मान्ध पुरुष को देखकर गौतम गणधर ने प्रभु से प्रश्न किया कि भगवान ऐसा कोई अन्य पुरुष भी है, जो जन्मान्ध हो। भगवान् ने मृगापुत्र का नाम बताते हुए गौतम को कहा कि इसी मृगा नामक नगर में विजय राजा का पुत्र तथा मृगा देवी का आत्मज है, जो जन्मान्ध है। उसके हाथ, पांव, नेत्र, कान आदि अंगोपाग नहीं हैं। अंगोपांग का चिह्न मात्र ही है। मृगादेवी उसका पालन पोषण बड़ी सावधानी से कर रही है। भगवान् की आज्ञा लेकर गौतम उस मृगापुत्र को देखने गए। मृगादेवी ने गौतम के पधारने का प्रयोजन पूछा, तब गौतम ने कहा कि तुम्हारे ज्येष्ठ पुत्र मृगा को देखने आया हूँ, जो जन्मांध है और तुमने उसे भूमिगृह में रख रखा है। जब मृगादेवी ने पुत्र को बतलाने के लिए भूमिगृह को खोला तो उसमें मृत सांप की तरह दुर्गंध आ रही थी। वह जो भी आहार ग्रहण करता वह रक्त तथा मवाद बन कर बाहर निकल आता। पुनः वह मृगापुत्र उसे खा लेता। ऐसा दृश्य देखकर गौतम को नारकीय दृश्य स्मरण होने लगा।

गौतम ने महावीर से मृगापुत्र के पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा। भगवान ने बताया कि पूर्व जन्म में इकाई नामक मांडलिक शासक था। वह बड़ा दुष्ट था। कर भी शक्ति से वसूलता था। राजकोष को सम्पन्न करने के लिए चोरों का पोषण करता था। मारपीट करना एवं प्रत्येक व्यक्ति को निर्धन बनाकर रखना उसका उद्देश्य था। वह बुरे कार्य में, छल कपट एवं धोखा धड़ी में लगा रहता था। इस प्रकार लोगों को प्रताड़ित करने के कारण उसने भीषण कर्मों का बंध किया। 16 महारोगों से ग्रसित हो गया। अनेक तांत्रिकों, योगियों,वैद्यों द्वारा उपचार करने

पर भी वह ठीक नहीं हो पाया और विषय वासना से लिप्त भावना एवं आर्त्तध्यान पूर्वक मरण कर प्रथम नरक (रत्न प्रभा) में गया और वहां से एक सागरोपम की आयु पूर्ण कर मृगापुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ।[11] स्थानांग में भी मृगापुत्र कथानक आता है।[12]

ऐसी कथा आगमों के अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र कथाग्रंथों में मिलती है। इस कथा में चक्षु रहित आदमी भगवान् के उपदेश सुनने आया था। वह गंदा, मैला कुचेला था, जिसके बालों पर मक्खियाँ भिन्ना-भिन्ना रही थी। इनसे बीभत्स एवं करुणरस का अनुभव होता है। कथा की भाषा अर्धमागधी है। समासान्त पदावली है तो कहीं कोमल-कान्त पदावली है। यह कथा धर्मकथा है। धर्मकथा के माध्यम से ही हिंसा के दुष्परिणाम को समझना है। जिसका उद्देश्य वैराग्य भावना द्वारा कर्मों की निर्जरा करते हुए मोक्ष पहुँचना है।

उज्झितक :-

वाणिज्य ग्राम में विजयमित्र नाम का सार्थवाह था तथा उसके सुभद्रा नामक भार्या थी। उसके उज्झितक नाम का रूपवान बालक था। उज्झितक युवा अवस्था में कामगणिका के काम जाल में फँस गया। गौतम द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर भगवान् महावीर ने उज्झितक के पूर्वभव का वर्णन बताते हुए कहा कि यह पूर्वभव में प्राणियों को फंदे में फंसाने वाला हस्तिनापुर में भीम नामक कूटग्राह एवं उत्पला नामक भार्या का गोत्रास नामक पुत्र था। जब वह पैदा हुआ उस समय उसकी चीत्कार से गाय भैंस आदि जानवर तक डर गए, अतः उसका नाम गोत्रास रखा गया था। यह जन्म के बाद जीवन पर्यन्त गोमांस का उपयोग करता था। गणिका के साथ रहने के कारण शराबी, जुआरी, चोर एवं वेश्यागामी बन गया। उसके बाद मरकर विजयमित्र के यहाँ उज्झितक नामक पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ। बड़े होने पर इसके माता-पिता का देहावसान हो गया। दुर्व्यसनों के कारण वह इधर-उधर डोलने लगा तथा कामध्वजा वेश्या में आसक्त होने के कारण राजा ने अपने अनुचरों से पिटाई करवाकर उसे अधमरा करवा दिया। ऐसी वेदना को देखकर गौतम ने महावीर से प्रश्न किया-"हे प्रभो! यह जीव मर कर कहाँ जाएगा? प्रभु महावीर ने कहा कि इसकी गति भी मृगापुत्र की भांति ही होगी। फिर तिर्यंच आदि अनेक योनियों में भटकने के बाद महाविदेह में जन्म

लेकर मुक्त होगा।"

यह कथा विषयासक्ति के दुष्परिणाम का निरूपण करती है। विषयासक्ति के दुष्परिणाम के प्रतिपादन में अनेक कथाएँ उपलब्ध हैं। वेश्यागमन के रूप में चारुदत्त एवं वसन्तसेना की कथा है, जिसमें वह वसन्तसेना पर आसक्त होने के कारण गरीब, अनाथ एवं असहाय सा रह जाता है। उसे अनेक प्रकार से अपमानित होना पड़ता है। यह कथा अनेक ग्रंथों में आती है।[13] काम पीड़ित के रूप में गौरसंधि ब्राह्मण की कथा है, जिसमें 12 वर्ष तक गणिका के साथ रहने पर वह यह नहीं जान पाया कि उसके पैर में अंगूठा नहीं है। वह काम में इतना आसक्त था कि उसके पैर के अंगूठे का भी उसे ध्यान नहीं था। यही कथा अपभ्रंश कथा कोष में भी मिलती है।[14] इसके अतिरिक्त काम विषयक एवं परिस्थिति गमन के दुष्परिणाम में अनेक कथाएँ प्राकृत कथा साहित्य में उपलब्ध हैं, जिनमें जीव नारकीय कष्ट भोगते हैं।

अभग्नसेन :-

इस कथा में अपनी ही चिन्ता करने वाले, अपने स्वार्थ के लिए किसी प्राणी को दुःख देने वाले अभग्नसेन का वृत्तान्त कहा गया है। पुरिमताल नगर में महाबल नाम का राजा राज्य करता था। इस नगर की सीमा पर शालाटवी नाम की एक चोर पल्ली थी। वहाँ विजय नाम का चोर सेनापति था। वह महाअधर्मी था, मांसाहारी था, व्यसनी था। इस विजय चोर सेनापति की पत्नी स्कन्द श्री को दोहद उत्पन्न हुआ। उसने मांस आदि का आहार एवं मदिरा सेवन द्वारा दोहद पूरा किया। दोहद के भग्न न होने से उसका नाम अभग्नसेन रखा गया। वह पूर्व भव में निर्णय नामक अण्डविक व्यापारी था। वह उन अण्डों को आग पर तलता, पकाता, भूनता एवं स्वयं उन अण्डों का आहार करता था। जीवों की हिंसा के दुष्परिणाम के रूप में मरकर वह तीसरे नरक में उत्पन्न हुआ, वहाँ से निकलकर अभग्नसेन के जीव के रूप में उत्पन्न हुआ। उसने जनता को अनेक कष्ट देने के साथ-साथ उसके तन व धन का भी अपहरण किया। एक बार राजा ने उसे पकड़वाने के लिए एक समारोह का आयोजन किया एवं उसे पकड़कर अनेक यातनाएँ दीं। अंत में उसे शूली पर चढ़ाया गया। ऐसी नारकीय यातना को देखकर गौतम स्वामी ने जिज्ञासा की। प्रभु महावीर ने उत्तर में कहा कि यह

अभग्नसेन शूली पर चढ़ने के बाद रत्नप्रभा नामक नरक में प्रथम नारकी के रूप में उत्पन्न होगा एवं वहाँ से निकलकर लाखों बार पृथ्वीकाय आदि योनियों में भटकता हुआ अनेक भवों में भ्रमण करेगा और अनेक बार नरक यातनाएँ भोगेगा, फिर वह वाराणसी नगर में शूकर के रूप में उत्पन्न होगा। किसी शिकारी द्वारा मारे जाने पर उसी नगरी में श्रेष्ठी के कुल में जन्म लेगा, वह श्रेष्ठी पुत्र कर्मों की निर्जरा कर संयम पूर्वक मोक्ष प्राप्त करेगा।[15]

स्वार्थ एवं जीव-हिंसा के दुष्परिणाम के रूप में अनेक कथाएँ प्राकृत साहित्य में मिलती हैं। आवश्यक निर्युक्ति एवं नन्दी सूत्र में राजा भीम की कथा है, जो अत्यन्त मांस प्रेमी था, नन्दीश्वर पर्व पर मांस-निषेध की घोषणा की गई। राजा द्वारा मांस की लोलुपता के कारण एक लड्डू का लोभ देकर बच्चों का हरण किया जाता एवं उनका मांस खाया जाता। बात खुलने पर प्रजा द्वारा राजा का विरोध कर राजा का अपमान किया गया। वह मर कर अनेक नरक गतियों में भ्रमण करता रहा। इस प्रकार मांस लोभी जीव हिंसा के दुष्परिणाम की यह कथा श्रीचंद के कथा कोष में भी आती है, जिसमें शमशान में शव का मांस खाने की बात भी कही गई है। प्रलोभन से बच्चों को मारकर मांस खाना अनेक योनियों में भटकने का कारण बताया गया है।[16]

(क्रमशः)

सन्दर्भ :

1. श्रमण संघीय महामंत्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद' द्वारा संपादित एवं अनूदित, विपाक सूत्र, पृ.10
2. (अ) तत्त्वार्थ सूत्र, 6.3-4
3. सांख्यकारिका, 44
4. (क) योग सूत्र- 2.14
   (ख) योग भाष्य- 2.12
5. न्याय मंजरी, पृ. 472
6. प्रशस्तपाद, पृ. 637/643
7. बृहदारण्यकोपनिषद्, 3/2/13
8. (अ) मुनि मधुकर, विपाक सूत्र पृष्ठ-14
9. (ब) जारोली, फतहलाल, विपाक सूत्र एक अध्ययन, (लघु शोध प्रबन्ध) पृ. 56-57

10. श्रमण संघीय महामंत्री मुनि सौभाग्य, विपाक सूत्र, पृ.16-17

11. वही, पृ. 40-41

12. स्थानांग सूत्र पृ. 40

13. आचार्य नेमिचन्द्र सूरिकृत, आख्यानक मणिकोष, पृ. 210

(ब) महाकवि शूद्रक कृत मृच्छकटिकम्, स. हरिषेण का वृहत् कथाकोश, कथा संख्या-93

14. भगवती आराधना, गाथा नं.-1094, पृ. 566 (ब) श्री चंद कथाकोष पृ. 76, सन्धि 33

15. श्रमण संघीय महामंत्री मुनि सौभाग्य कुमुद, विपाक सूत्र, 124-125

16. मुनि श्रीचंद, कथाकोष, पृ. 95 संधि-143

-सहआचार्य एवं अध्यक्ष, जैनोलॉजी एण्ड प्राकृत विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

'स्ट्रेस' को 'स्ट्रेन्थ' में बदलें; तनाव मुक्त रहें

STRESS (तनाव)

S=STRENGTH	(शक्ति -शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक शक्ति समीचीन रखें)
T=TRAFFIC CONTROL	(भावनाओं एवं विचारों के प्रवाह को नियंत्रित करें)
R=RE-DESIGN	(दृष्टिकोण में सही बदलाव लाएं)
E=ERASE	(मिटाना- अहंकार, क्रोध, भय, ईर्ष्या एवं नकारात्मक विचारों को मिटाएं)
S=SHARE	(अपनी सम्पत्ति, ज्ञान एवं सुख को दूसरों के साथ बांटिए)
S=SURRENDER	(समर्पण- प्रभु के प्रति समर्पित हो जाइये। सारे दुःख-क्लेश-चिन्ताएँ छोड़कर खुद को सेवा का माध्यम बना लीजिए। लेने में नहीं, देने में विश्वास कीजिए)

सुख, समृद्धि और सफलता पाने तथा 'तनाव' से मुक्त रहने का यही एक तरीका है।

-संकलन-रचित भण्डारी,

A-324, सरस्वती नगर, जोधपुर-342005 (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 56)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(तैजस समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- शीत अथवा उष्ण तेजोलेश्या किसी पर डालने हेतु तैजस पुद्गलों को ग्रहण करने के लिये आत्मप्रदेशों को बाहर निकालना तैजस समुद्घात कहलाता है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात में आत्म-प्रदेशों का दण्ड कितनी दूरी का निकाला जाता है?

समाधान- तैजस समुद्घात में आत्म-प्रदेशों का दण्ड संख्यात योजन तक का निकाला जाता है। आत्मप्रदेश एक दिशा अथवा विदिशा में निकाले जाते हैं।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात कौन-कौन से जीव कर सकते हैं?

समाधान- तैजस समुद्घात संख्यात वर्ष की आयुवाले गर्भज तिर्यञ्च, गर्भज मनुष्य, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी तथा बारहवें देवलोक तक के देवता कर सकते हैं। यह भी समझना आवश्यक है कि ये भी पर्याप्त अवस्था में ही तैजस समुद्घात कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, युगलिक तिर्यञ्च, युगलिक मनुष्य तथा नारकी जीव इनमें तैजस समुद्घात स्वभाव से ही नहीं होता है, जबकि नवग्रैवेयक व पाँच अनुत्तर विमान के देवों में तैजस समुद्घात करने की शक्ति तो होती है, किन्तु वे तैजस समुद्घात करते नहीं हैं।

जिज्ञासा- नव ग्रैवेयक एवं पाँच अनुत्तर विमान के देव शक्ति होते हुए भी तैजस समुद्घात क्यों नहीं करते?

समाधान- नवग्रैवेयक एवं पाँच अनुत्तर विमान के देव स्वाभाविक रूप से उपशान्त वेदी एवं मन्द कषायी होते हैं। कौतुकता, कामुकता,

उत्सुकता नहींवत् होती है, इस कारण से वे वैक्रिय एवं तैजस समुद्घात नहीं करते हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि यद्यपि इनमें पुरुषवेद का तथा क्रोधादि कषायों का विपाकोदय भी रहता है, तथापि उदय में अल्पता होने के कारण इन्हें उपशान्त वेदी तथा मन्दकषायी कहा जाता है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात कब किया जाता है?

समाधान- जब किसी तेजोलब्धि सम्पन्न जीव को द्वेषबुद्धि से किसी अन्य जीव को दुःख देने की भावना प्रबल हो जाती है तो वह तैजस समुद्घात द्वारा अग्नि से भी अधिक उष्ण पुद्गल निकालकर उस जीव को दुःखी करने का प्रयास करता है। अथवा किसी पर अनुग्रह या कृपा बरसाने हेतु शीत पुद्गलों के द्वारा भी तैजस समुद्घात किया जाता है अथवा उष्ण तेजोलेश्या के प्रभाव को समाप्त करने हेतु जब शीत तेजोलेश्या के पुद्गल निकाले जाते हैं, तब भी तैजस समुद्घात होता है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात कितनी बार किया जा सकता है?

समाधान- गर्भज मनुष्य एवं गर्भज तिर्यञ्चों में तैजस समुद्घात एक भव में संख्यात बार हो सकता है। जबकि देवों में संख्यात काल की स्थिति वालों में संख्यात बार तथा असंख्यात काल की स्थिति वालों में असंख्यात बार भी एक भव में तैजस समुद्घात किया जा सकता है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात में विशेष रूप से किस कर्म की निर्जरा होती है?

समाधान- तैजस समुद्घात में विशेष रूप से नाम कर्म के अन्तर्गत तैजस शरीर नाम कर्म के पुद्गलों की निर्जरा (क्षपणा) होती है। साथ ही कषायोदय की तीव्रता-मन्दता के अनुसार नवीन कर्मों का बन्ध भी होता रहता है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात एवं तेजो लेश्या में क्या अन्तर है?

समाधान- यद्यपि तैजस समुद्घात एवं तेजो लेश्या दोनों में ही तैजस वर्गणा के पुद्गलों का ग्रहण-निस्सरण होता है तथापि तैजस समुद्घात का दण्ड संख्यात योजन तक ही होता है, जबकि

तेजो लेश्या असंख्यात योजन तक चली जाती है। क्योंकि भगवती सूत्र शतक 3, उद्देशक 1 में वर्णन है कि ईशानेन्द्र ने तेजोलेश्या के द्वारा बलिचंचा राजधानी को इंगालभूत, मुर्मुरभूत कर दिया। दूसरे देवलोक के ईशानेन्द्र से असुरकुमारों की बलिचंचा राजधानी लगभग डेढ़ रज्जू अर्थात् असंख्यात योजन दूर है।

जिज्ञासा- तैजस समुद्घात के साथ अन्य कितने समुद्घात हो सकते हैं?

समाधान- केवली समुद्घात को छोड़कर अन्य छह समुद्घात तैजस समुद्घात के साथ हो सकते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि वैक्रिय एवं आहारक समुद्घात एक जीव में एक साथ कभी भी नहीं पाये जाते हैं।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

प्रार्थना

बारम्बार प्रणाम

श्री हरकचन्द ओस्तवाल 'हर्ष'

प्रभु अन्तर्यामी तुमको, बारम्बार प्रणाम।

तूं सन्मति सद्भाग्य विधाता, शान्तमूर्ति सद्ज्ञान प्रदाता।
साधकगण हम मिलकर तेरा, करते निशदिन ध्यान।
भगवन् करते निशदिन ध्यान ।।1।।

पढ़कर विद्या ज्ञान बढ़ाएँ, विनयशीलता गुण अपनाएँ।
विद्यासागर सा श्रम करके, बनें गुणी विद्वान्।
भगवन् बनें गुणी विद्वान् ।।2।।

गौतम सी हो ज्ञान पिपासा, चंदनबाला की सी आशा।
धैर्य और दृढ़ता से ही तो, जीवन का उत्थान।
भगवन् जीवन का उत्थान ।।3।।

करबद्ध विनति यही हमारी, सेवाभावी हो ब्रह्मचारी।
कृपालु बनिये हम पर भगवन्, करो 'हर्ष' कल्याण।
भगवन् करो 'हर्ष' कल्याण ।।4।।

-चेन्नई (तमिलनाडू)

उपन्यास (13)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- विश्वास मीनाक्षी के साथ भूलेश्वर में रह रहे अपने मित्र रमन के घर पहुँचा। रमन और उसकी पत्नी से मिलकर दोनों बहुत प्रसन्न हुए तथा अपनी आप बीती कह सुनायी। तब दिलासा दिलाते हुए रमन ने कहा कि तुम्हारे जैसे डॉक्टरों की मुम्बई में बहुत आवश्यकता है। इतने में गुरुदेव गोचरी के लिए पधारे और विश्वास से परिचय पूछा। मुनि श्री को उसके पिताजी से पूर्व परिचय का स्मरण हो आया, अतः उसके पिताजी की बगैर दहेज के विवाह करने सम्बन्धी नाराजगी जानकर आश्चर्य किया, फिर अपने साथ आए श्रावक को इशारा किया। श्रावक ने तुरन्त पूसाराम किरोड़ीमल द्वारा निर्मित अस्पताल में डॉक्टर पद पर नियुक्ति हेतु सेठ जी से मिलने के लिए कह दिया। इसके बाद दोनों मित्र.............

भव्य अट्टालिकाओं वाले एक विशाल महल के ऊपरी फ्लैट में बने फर्म पूसाराम किरोड़ीमल के कार्यालय की ओर दोनों ने प्रस्थान किया।

रमन और विश्वास लिफ्ट से ऊपर पहुँचे और दोनों ने कार्यालय के बाहर खड़े चपरासी के हाथों, अपने नाम लिखी चिट अन्दर पहुँचा दी।

'आइये, आपको सेठ साहब बुला रहे हैं' -चपरासी ने बाहर आकर कहा।

दोनों मित्र, द्वार पर लटके पर्दे को हटाकर अन्दर चले गये।

'सत्तर वर्ष की आयु का एक भद्र-पुरुष, दूध जैसे धवल गद्दे पर बैठा, समाचार पत्र के पन्ने पलट रहा है' - यह देखकर, दोनों ने उसे नमस्कार किया।

समाचार पत्र को एक ओर रखकर उस पुरुष ने अपनी आँखों पर लगा चश्मा उतारा, फिर इन दोनों को कहा- 'आओ भाई आओ! इधर बैठो। कहाँ से पधारे हैं आप लोग। और पहले यह तो बताइये कि आप दोनों में से कौन तो रमण है, और कौन विश्वास है ?'

'जी, मेरा नाम है रमण' रमण ने मुस्कराते हुए कहा- 'और इनका नाम है डॉ. विश्वास जैन। इसी माह इंग्लैण्ड से डॉक्टरी का डिप्लोमा लेकर लौटे हैं। आज सवेरे घर पर गुरुदेव के साथ एक श्रावक पधारे थे। उन्होंने आपसे मिलने

के लिये कहा था।'

'बहुत अच्छी बात है। खास कहाँ के रहने वाले हो?'

'जी आगरा का निवासी हूँ' -विश्वास ने बतलाया।

'आप भी आगरा के हैं क्या?'

'जी नहीं, मैं जोधपुर का रहने वाला हूँ। करीब दस वर्षों से यहाँ रह रहा हूँ।'

'बहुत अच्छी बात है। गुरुदेव श्री के आशीर्वाद से अस्पताल का निर्माण तो करवा दिया है। कम्पाउण्डर, नर्स और चपरासी भी रख लिये हैं। पर, अभी तक हमें कोई डॉक्टर नहीं मिला है। आप आना चाहें तो मुझे बेहद खुशी होगी।'

'मुझे भी आपके यहाँ सेवा करने में प्रसन्नता होगी सेठजी!'

'देखिये साहब! यहाँ नौकरी नहीं, सेवा करने वाले डॉक्टर की जरूरत है। सेवा करने की भावना हो तो आपका हम स्वागत करेंगे । रह गई मेहनताने की बात, वह आपको पूरा मिलेगा। बल्कि सरकारी डॉक्टरों से एक हजार रुपया अधिक ही मिलेगा।'

'मुझे स्वीकार है।'

'फिर आज से ही आप अपना काम शुरु कर दीजिए। मैं अभी मुनीम जी को फोन कर रहा हूँ। वे आपको सारी बातें समझा देंगे।'-कहते हुए सेठजी ने मुनीमजी को फोन मिलाया, और उनसे कहा- 'आप यहाँ आ जाइये।'

कुछ ही समय बाद मुनीमजी आ गये। सेठजी को नमस्कार करने के बाद उन्होंने रमण और विश्वास को भी नमस्कार किया।

'आप, डॉक्टर साहब हैं' -सेठजी ने विश्वास का परिचय कराते हुए कहा- इंग्लैण्ड से डिप्लोमा लेकर आये हैं। अपने अस्पताल में इन्हें रख लिया है। इनके लिए कुछ नाश्ता पानी मँगवाइये।'

'हम लोग भोजन करके ही निकले हैं। आप अनावश्यक कष्ट न करें।'

'इसमें कष्ट की क्या बात है?.........मुनीमजी जल्दी करो।.......अरे भाई! भोजन करके तो आप आये ही होंगे। पर, भजन भी करते हैं आप या नहीं?'

विश्वास, हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ बोला- "भजन? कैसी बातें करते हैं आप सेठजी! भाग-दौड़ में इतना समय ही नहीं मिल पाता।"

"तब तुम्हारा उद्धार कैसे होगा? तुम्हारे घर में भजन-पूजन करने वाला भी

कोई है?''-सेठ ने पूछा।

'माँ तो नियमित सामायिक करती है। लेकिन मुझे.........।'

'डॉक्टर साहब! उनका काम उनके ही भले के लिये होगा। उससे दुनियाँ भर के लोग थोड़े ही सुधरेंगे? आज से आप भी प्रतिदिन उठकर एक सामायिक करने का संकल्प ले लें। रमणजी! आपको भी इस बारे में सोचना चाहिए। आधा घण्टा, पन्द्रह मिनिट भगवान् का नाम ले लेने से यह शरीर दुबला नहीं हो जाता।'

'सोचता तो हमेशा हूँ, मगर, आज आपने कहा है तो अब कोशिश भी करूँगा कि हमेशा एक सामायिक तो कर ही लिया करूँ।

इसी समय, एक आदमी के साथ मुनीम जी आ गये। मुनीम जी ने दोनों के सामने नाश्ता सजाया और चाय रखते हुए बोले- 'शुरू कीजिए।'

'आप भी तो लीजिए'- रमण ने सेठजी से अनुरोध किया।

'यह सब मेरे काम का नहीं है। मैं तो वर्षों से, दिन में सिर्फ एक बार ही भोजन करता हूँ। आप बुरा न मानें।'

रमण और विश्वास ने नाश्ता कर लिया, तो मुनीम जी बोले-''देखिए साहब! अपना अस्पताल जनसेवा के लिये बनाया गया है। इस समय, इसमें बीस आदमी काम कर रहे हैं। आपको रहने के लिये अस्पताल के ऊपर ही फ्लैट मिल जायेगा। एक मैटाडोर और एक कार भी आपके लिए रहेगी। वक्त-जरूरत पड़ने पर, आप अपने काम में भी उसे ले सकते हैं। गरीब लोगों को वहीं से दवा देनी है। शुरू-शुरू में तो आपको बीस हजार रुपये मिलेंगे। फिर काम देख लेने के बाद, रुपये बढ़ा दिये जायेंगे। यहाँ पैसे की कोई कमी नहीं है। सिर्फ अस्पताल का नाम होना चाहिए। पैसा कितना खर्च हो रहा है, इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।''

'मेरी पूरी-पूरी भावना, अस्पताल के साथ रहेगी। बम्बई के अच्छे अस्पतालों में इसकी गिनती हो, यही मेरी इच्छा रहेगी।'

'मन में निश्चय कर लो तो कोई काम मुश्किल नहीं होता।'-सेठजी ने कहा।

'आपका आशीर्वाद रहना चाहिए।' अच्छा, अब आप मुनीम जी के साथ पधारिये।'

'पहले आप अपने हस्ताक्षरों से एक प्रार्थना-पत्र दे दें कि आप यहाँ डॉक्टर बनना चाहते हैं।'

मुस्कराते हुए विश्वास ने अपना प्रार्थना-पत्र लिखकर दे दिया।

'अब आप मेरे साथ आइये'- कहते हुए मुनीम जी उठकर खड़े हो गये। और, सेठजी को नमस्कार करके बाहर आ गये।

विश्वास और रमण ने भी, मुनीम जी की तरह, सेठ को नमस्कार किया, और बाहर आ गये।

'विश्वास! किस्मत खुल गई समझो।'- रमण ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा- 'काम करने में आनन्द आयेगा वहाँ तुझे।'

'सब भगवान् और गुरुदेव की कृपा है। मैं तो बहुत चिन्तित था कि कैसे, क्या होगा यह सब! मगर, भाग्य ने कैसा साथ दिया।'

'भाग्य नहीं, कर्म कहो विश्वास! यदि तुम बम्बई नहीं आते, तो क्या यह सब हो पाता? आखिर, कर्मों का फल मिलना ही था। अब तुम अपने शुभ कर्मों का उदय हुआ समझो।'

'सब, तुम्हारी शुभकामनाओं का फल है। यदि तुम्हारे घर नहीं आता, तो क्या यह स्थिति बन पाती। अभी तक तो मैं सड़कों पर ही इधर से उधर डोलता फिरता।'

अब, मुनीम जी का निर्देश पाकर वे एक कार में आ बैठे। कार, अस्पताल की ओर चल पड़ी।

करीब बीस मिनट बाद, वे अस्पताल के सामने जा पहुँचे।

विश्वास ने देखा-अस्पताल के प्रवेश द्वार पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है- 'सेठ पूसाराम किरोड़ीमल धर्मार्थ चिकित्सालय।'

'बिल्डिंग इसी वर्ष की बनी जान पड़ती है'-रमण ने पूछा।

'हाँ जी! काम तो अभी भी चल ही रहा है। अस्पताल के पीछे, कर्मचारियों के रहने के लिये मकान बन रहा है। सारी सुविधाओं की व्यवस्था कर दी गई है। अब तो आपको इसे अस्पताल का स्वरूप प्रदान करना है।'

'आप निश्चिन्त रहिए, मुनीम जी! अस्पताल का नाम हो जायेगा'- विश्वास ने दृढ़ शब्दों में कहा।

'सेठ साहब यही तो चाहते हैं।' -कहने के बाद, द्वार पर खड़े चौकीदार से मुनीमजी ने पूछा- 'अन्दर कौन-कौन हैं?

'कम्पाउण्डर जी हैं सरकार!'

'ये अपने डॉक्टर साहब हैं। इन्हें इनका क्वार्टर बतला देना, और किसी बात की कमी हो, तो हमें फोन करवा देना।'

रमण और विश्वास ने अस्पताल का, और अपने रहने के क्वार्टर का निरीक्षण किया। आधुनिक सुविधाओं युक्त अस्पताल देखकर, विश्वास को बहुत प्रसन्नता हुई।

'आपने तो सारी व्यवस्थाएँ बना रखी हैं मुनीम जी!' - विश्वास ने वापिस लौटकर कहा।

'कोई कमी हो, तो बताइये। लोगों को आराम मिलना चाहिए।'-मुनीम जी ने अपना मत व्यक्त किया।

'मेरा धर्म भी यही है।'

'जीवित रहने के लिए, धर्म से ही सारे काम ठीक होते हैं।'

'अब हम कहाँ चलेंगे?'

'आपकी कार तो वहीं खड़ी है। आपको वहीं चलकर छोड़े देते हैं। कल से आपको भी कार दे दी जाएगी।'

'धन्यवाद मुनीमजी!'

'धन्यवाद मुझे नहीं, सेठजी को दीजिएगा। मैं तो आपकी तरह, यहाँ नौकर हूँ।'-मुनीम जी ने कहा।

अब वे तीनों, हंसते-मुस्कराते बातें करते हुए, फिर से फर्म कार्यालय आ गये।

'अब आप जा सकते हैं। कल, आपको सीधे अस्पताल पहुँचना है। किसी बात की परेशानी हो, तो फोन कर दीजिएगा।'

'ठीक है। आप चलिए मुनीमजी!'-रमन ने कहा, फिर विश्वास से बोला- 'आओ, अब हम भी चलें।'

दोनों ने मुनीमजी को नमस्कार किया, और कार में बैठकर चल दिए।

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

युवाशक्ति और समाज

श्री पदमचन्द गाँधी (थाँवला वाले)

युवा शक्ति का प्रतीक है। समाज को शक्ति की आवश्यकता है। जिस समाज के युवा शक्ति सम्पन्न होने के साथ-साथ, ज्ञानसम्पन्न, आस्थासम्पन्न और चरित्र सम्पन्न होते हैं, वह समाज सर्वांगीण विकास कर सकता है। समाज के विकास का दायित्व युवा पीढ़ी पर है। युवक अपने व्यक्तित्व में निखार लाएँ और समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं कमजोरियों को जड़ से उखाड़ फैंकें । समाज का यह दायित्व है कि वह युवा शक्ति के कन्धों पर भार डाले, उन्हें जिम्मेदार बनाए।

आज समय की तेज रफ्तार के बहाव में व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ रहा है। वह आर्थिक ऊँचाइयों को छू रहा है। संचार माध्यम ने देश की दूरियों को तो कम कर दिया है, लेकिन मन की दूरियां तेजी से बढ़ रही है। एक ही छत के नीचे सोने वालों के मनों में दरारें उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे में 'समाज' के बारे में सोचना एक प्रश्नचिह्न है। आज समाज की परिभाषाएं बदल गयी हैं, अर्थ बदल गया है। यह सम्पन्न एवं प्रभुत्वशील लोगों तक सीमित हो गया है। युवा पीढ़ी कटने लग गयी है। समाज का ताना-बाना तार-तार होकर क्षीण हो रहा है। इसका स्वरूप बदल रहा है। यदि सच्चे अर्थों में इसका विश्लेषण किया जाये तो 'समाज' तीन शब्दों से बना है जो स्पष्ट करता है- स= समान विचारधारा, मा= मानने वाला, ज= जनसमूह। अर्थात् समान विचारधारा के मानने वालों का जनसमूह, जिसे हर व्यक्ति अपनाता है उसमें रहना पसन्द करता है, उसके अंकुश से डरता है। इन तीनों शब्दों में गहन रहस्य है, व्यापकता है। यह 'कॉमन थिंकिंग' का निचोड़ है जो सर्वमान्य एवं सर्वहितकारी है, लेकिन आज समाज का व्यवसायीकरण हो रहा है। डॉक्टर, चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट, इन्जीनियर्स, आई.ए.एस. एवं अन्य विभिन्न प्रोफेशनल लोग अपने-अपने समाज का गठन कर रहे हैं जो मात्र एक 'मेलमिलाप' तक सीमित है।

समाज एक शक्ति है, एक सहायता का केन्द्र है। वह एक न्यायालय है, आश्रितों की एक शरणस्थली है। समाज एक अंकुश है, वह सर्वशक्तिमान है। यदि इतिहास के पन्ने उठाकर देखें तो स्पष्ट होता है कि जब न्यायालय नहीं होते थे तो समाज की पंचायत ही निर्णय लेती थी, सामाजिक रीति एवं नीतियां निर्धारित

करती थीं। यह तथ्य 'हिन्दू लॉ भी' मानता है। मुस्लिम समाज में आज भी उनके ''पर्सनल लॉ'' के निर्णय को कोई चुनौती नहीं दे सकता, न्यायालय भी मानता है। आज इस प्रकार की व्यवस्थाएँ नहीं रही हैं।

आज समाज की अखण्डता और एकता को खतरा उत्पन्न हो गया है। उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ बीच में आ रहा है। नेतृत्व कमजोर पड़ रहा है। सामाजिक अंकुश नहीं के बराबर है। समाज के प्रति सम्मान एवं समर्पण समाप्त हो चुका है। इतना ही नहीं एक जाजम पर बैठ कर लिये जाने वाले निर्णय भी स्वार्थ के वशीभूत होकर कमजोर पड़ रहे हैं, गतिविधियां शिथिल हो गयी हैं। ऐसा लग रहा है कि आज के समाज को युवाशक्ति के मजबूत संगठन, अच्छे प्रबन्धन तथा प्रशासन की सख्त आवश्यकता है। युवा संगठन समाज के हृदय की धड़कन है तो बुजुर्ग नेतृत्व के नायक। लेकिन दोनों ही कमजोर सिद्ध हो रहे हैं। जिसके परिणाम सामने आ रहे हैं। यदि पड़ौस में आग लगती है तो धुंआ घर में भी आता है, उसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर पड़ता है।

आज 'मोडर्नाइजेशन' का जमाना है, खुल्ली विचारधारा का बोलबाला है, बिना परवाह किए गलत कार्यों के प्रति कदम बढ़ जाते हैं, चाहे वे व्यक्तिगत हों, चारित्रिक हों या वाणिज्यिक एवं व्यापारिक। व्यक्ति अंकुश के बिना एकदम खुल्ला हो जाता है, वह एकाकी जीवन जीने के लिए मजबूर हो गया है। उसे कुण्ठा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलता। ऐसी प्रवृत्तियों के कारण समाज में अनगिनत, अनचाही बुराइयाँ प्रविष्ट हो चुकी है जो हमारी आदत बन चुकी हैं और विकराल रूप धारण कर रही है। समाज में आडम्बर, दिखावा एवं अपव्यय बढ़ रहा है। स्वतंत्रता के नाम पर उच्छृंखलता बढ़ रही हैं। इन बुराइयों के घातक परिणामों को देखते हुए कई समुदायों में सामाजिक निर्णय पारित किए गए। गुजरात के रेबारी समाज ने 132 निर्णय किए। पंजाब के सिक्ख समुदाय ने कुरीतियां निवारण हेतु निर्णय पारित किए। आखिर क्यों? उन्होंने यह संब महसूस किया कि आज यदि इन बुराइयों पर अंकुश नहीं लगता है तो आने वाली पीढ़ी क्या कहेगी? हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का क्या होगा? ऐसे विषयों पर चिन्तन करना आवश्यक है। इन बुराइयों के निवारण हेतु युवाशक्ति का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। युवक समाज की आशाएँ हैं।

पहले पिछड़े राज्यों के पिछड़े गरीब समुदायों के परिवारों की लड़कियों को

बेचा जाता था, लेकिन आज सभ्य एवं कुलीन समाज में भी लड़कियो को बेचा जाता है। अप्रत्यक्ष रूप में उनकी अच्छी कीमत वसूल की जा रही है, यह चिन्तन का विषय है। याद रहे लड़की कोई 'वस्तु' नहीं है। उसकी भावनाएँ हैं, इच्छाएँ हैं। वह घर छोड़ सकती है और शादी के बाद अन्यत्र भी जा सकती है, जो समाज की सबसे बड़ी विकृति है। आज समाज की लड़कियां बिन बताए दहलीज पार कर अपना नया घर बसा लेती हैं। क्यों? कारण बहुत से हैं, जिन पर चिन्तन करना जरूरी है।

आज भी समाज में विधवाओं की स्थिति सही नहीं है, उन्हें आज भी अपशकुनी माना जाता है। जन्म जीवन की पहली सीढ़ी है तो मृत्यु अन्तिम। जो किसी के बस में नहीं तो फिर यह अन्याय स्त्रियां ही क्यों सहे? शुभ कार्यों के लिए उन्हें आमंत्रण क्यों नहीं? वे ही चार दीवारी में क्यों बन्द रहें। इस पर चिन्तन करना जरूरी है।

समाज में व्याप्त मृत्यु भोज, दहेज, मायरा, तिलक न जाने कितने आडम्बरों पर अपव्यय किया जा रहा है। इन पर सीमाबन्दी क्यों नहीं? आज व्यक्ति समाज में बैल की तरह भारवाही बना हुआ है। वह इस वजन को कब तक ढ़ोएगा, चिंतन युवाओं को करना है। समाज में आज कई लाचार एवं निस्सहाय लोग भी रहते हैं, जिन्हें तिरस्कार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलता। उनके प्रति व्यवस्था सामाजिक प्लेटफार्म पर क्यों नहीं?

आज कई कुवांरियां दहलीज पारकर गैरजातीय युवकों के साथ चली जाती हैं, समाज इस पर मौन रखता है, अप्रत्यक्ष रूप से उसे स्वीकृति दे रहा है। यह कहकर पल्ले झाड़ लेता है कि यह तो आम बात है। घर छोड़ने के बाद उन लड़कियों की क्या स्थिति होती है, अवर्णनीय है। इनके लिए सामाजिक चिन्तन क्यों नहीं? युवाओं को चिन्तन करना है।

आज की युवा शक्ति साहस एवं बुद्धि से सम्पन्न है। यदि उन्हें कुशल नेतृत्व मिल जाए तो इस प्रकार के समाज की संरचना में मूलभूत परिवर्तन कर सकती है। अतः उन्हें समाज-निर्माण में जुट जाना चाहिए। नेतृत्व देने वाला व्यक्ति शुद्ध, सक्रिय, सात्त्विक, सरल, विनयशील तथा समन्वय बनाने वाला हो, निःस्वार्थ एवं निर्भीक हो तभी सकारात्मक परिणाम आयेंगे।

-25, बैंक कॉलोनी, गोपालपुरा, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

क्या खोया और क्या पाया? (3)

श्री पारसमल चण्डालिया

जीवन जीने की कला

जीवन जीना भी एक कला है। अच्छी तरह से जीना, प्रेम का रस बरसाते हुए जीना, विश्व को अपना बनाते हुए और अपने को विश्व का बनाते हुए जीना, यह है जीवन की कला, संसार की सबसे बड़ी कला।

जीवन में धन और वैभव होना ही सब कुछ नहीं है। जीवन में यदि प्रेम की सरसता नहीं मिली है तो धन-वैभव बिना नमक की रोटी की तरह स्वादहीन है। माधुर्य किसी वस्तु में नहीं होता, बल्कि मनुष्य की भावना में ही वह रहता है। अपने घर पर आने वाले किसी अतिथि को हम मधुर से मधुर भोजन कराएँ और साथ में उसका तिरस्कार भी करते रहें तो वह मधुर भोजन भी विष बन जाता है। इसके विपरीत यदि हम किसी को रूखा सूखा भोजन परोसते हैं, किन्तु आदर एवं प्रेम के साथ भोजन कराते हैं तो वह भोजन भी सरस एवं मधुर प्रतीत होता है। राम को भीलनी के झूठे बेर खाने में जो आनंद आया वह अयोध्या के राजमहलों के मोहनभोग में नहीं आया। श्री कृष्ण को जो आनंद सुदामा के चावल खाने में आया वह दुर्योधन के छत्तीस प्रकार के राजभोग में नहीं आया। माधुर्य मनुष्य की भावना में रहता है, वस्तु में नहीं। चंदना के उबले हुए उड़द के बाकुलों में जो प्रभाव था वह किसी राजा-महाराजा के खीर खांड़ के भोजन में नहीं था। अतः हम कुछ भी करें माधुर्य के साथ करें, भावना के साथ करें। इसीलिए कहा है-

''जीवन की उत्तम धरा को स्नेह-सुधा से प्लावित कर दो।''

हमें अपने जीवन को देखना है क्या हमने किसी कलि के फूल बनकर मुस्कुराने में सहयोग किया है? अपने स्नेह और प्यार की धारा से किसी के जीवन को मधुरता से भरा है? मैं समझता हूँ कि कोई भाग्यशाली ही ऐसा होगा जो अपनी रोशनी से किसी दूसरे की जिन्दगी को रोशन कर रहा हो, सबको एक भाव से मधुरता बांट रहा हो। अधिकतर तो ''सांई इस संसार की देखी उल्टी रीत'' वाली बात ही हो रही है। मनुष्य के पास जब देने को कुछ नहीं होता तो वह देना चाहता है, पर जब देने को बहुत कुछ होता है तो वह उससे कसकर चिपट जाता

है, दूसरों को तो क्या खुद को भी नहीं दे पाता है। खजाने पर सांप बन कर बैठ जाता है। आश्चर्य तो यह है कि जब जीवन में सेवा, सत्कर्म और भलाई का अवसर आता है तो हमारे मन की पवित्र वृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं और जीवन में निष्कर्मता-कर्महीनता छा जाती है। माया और ममता हमारे पवित्र उदात्त संस्कारों को दबोच कर बैठ जाती है।

मनुष्य आज परोपकार और सेवा का भाव भूल कर अपने भोग-विलास में डूबता जा रहा है। शक्ति और अधिकार को अपनी सुख-सुविधा बटोरने के लिए ही इस्तेमाल कर रहा है। अधिकार के मद में वह संस्कृत का यह श्लोक भूल जाता है-

अधिकारपदं प्राप्य नोपकारं करोति यः।
अकारो लुप्यते तत्र, ककारो द्वित्वतां व्रजेत्।।

जो अधिकार और सत्ता को प्राप्त करके भी जीवन में परोपकार नहीं करता है, देश, धर्म और समाज की सेवा नहीं करता है उसके अधिकार में से 'अ' तो हट जाता है और उसकी जगह 'क' दो बार आ जाता है। मतलब 'अधिकार' के स्थान पर 'धिक्कार' हो जाता है। संसार में उसके अधिकार को, सत्ता और सामर्थ्य को धिक्कार पड़ती रहती है। उसका वैभव उसकी शक्ति राम की प्रतीक नहीं बनकर रावण की प्रतीक बन जाती है। यानी हम संसार के क्षेत्र में कर्त्तव्यों की लड़ाई लड़ रहे हैं, पर यदि आत्म-स्वरूप को साथ नहीं रखते हैं तो हम देवताओं में नहीं राक्षसों की गिनती में ही गिने जायेंगे।

आत्मा से संबंध जोड़े रखने का सीधा अर्थ है- धर्म से जुड़े रहना। धर्म जीवन की जवाबदारियों को पूरा करना सिखाता है और यों ही नहीं मानव की तरह पूरा करना सिखाता है। वह कहता है- जीते तो हो, पर मानव के ढंग से यानी जीने की कला सीखकर जीओ। कर्त्तव्य पूरा कर रहे हो, पर उसे स्वच्छ एवं निर्मल अंतःकरण से करो, निष्काम भाव से करो। निष्काम भाव से जो कर्त्तव्य पूरा किया जाएगा, वह हमें भी सुख देगा और दूसरों को भी। जब हम पूर्ण निष्काम होकर कर्त्तव्य बुद्धि से जगत् को अपना सुख अर्पण करेंगे तो हमारे सुख में शांति का स्वर मुखरित हो उठेगा। सुख को बांटने से, शांति का अमृत भाग हमारे पास रह जाएगा, किन्तु यह तभी संभव है जब हम अंतर से यानी धर्म से जुड़े रहेंगे।

विडम्बना है कि आज दिन तक यह जीव बाहर में शांति ढूंढता रहा, अशांति का समाधान बाहरी चीजों से ही प्राप्त करने के लिए रहा। शांति के लिए उसने आत्मा का द्वार खटखटाने की कोशिश ही नहीं की, फलस्वरूप उसे शांति नहीं मिली और मिला केवल क्षणिक सुख, वह भी काल्पनिक और उसके अंत में फिर घोर अशांति ही हाथ लगी। ज्ञानीजन तो फरमाते हैं- **अपने मन का द्वार खोलिए, अंदर में झांकिये, अंतर्मुखी बनिये।** यानी बाहर क्रिया करते हुए भी अंदर का तार जुड़ा रहा तो शांति मिलती रहेगी, आनन्द प्राप्त होता रहेगा। यही जीवन जीने की सच्ची कला है।

यदि हम पागल कुत्ते की तरह जीवन के भोग और स्वार्थों के पीछे दौड़ते हुए मरे तो क्या मरे? जीवन के पवित्र एवं सात्त्विक संघर्षों से जूझते हुए अन्याय और अत्याचार का प्रतिरोध करते हुए स्व-कल्याण या जन-कल्याण के लिए मरे, तो वह कलापूर्ण मरना है। जीवन की कला से भी महत्त्वपूर्ण है-मरने की कला।

वह मृत्यु कलापूर्ण मृत्यु है, जिसके उज्ज्वल प्रकाश पथ पर मरने वाला हंसता हुआ चला जाए और पीछे वाले उसकी याद में रोते रह जाएं। किसी महान् ध्येय की पूर्ति के लिए मरना कला है। हमारा मरण ऐसा मरण हो जो दूसरों के लिए भी आदर्श रूप बने। किसी शायर ने कहा है-

जिन्दगी ऐसी बना, जिंदा रहे दिलशाद तू।
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद तू।।
इंसान चला जाता है, यश सौरभ रह जाती है।
साथी छूट जाते हैं बस यादें रह जाती हैं।।

जीवन की समस्या

जीव ने सुखी होने की अनन्त बार अभिलाषा की, सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्न भी खूब किये, किन्तु वह सुखी क्यों नहीं हो सका? जीवन की इस समस्या पर मानव ने गंभीरता से चिंतन नहीं किया। उसने यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि मैं कौन हूँ? और क्या हूँ?

आज इस भौतिक युग में मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करना चाहता है, उसके एक से एक गूढ रहस्य को खोज निकालना चाहता है, परन्तु क्या कभी

उसने अपने पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया? इस भौतिकवादी युग में कदाचित् ही कोई आत्मा अपने को समझने का प्रयत्न करता है और अपने को परखने का प्रयत्न करता है। आज के इस भौतिकवादी विज्ञान ने अनन्त आकाश में उड़ने के लिए वायुयान बनाया, समुद्र की अपार जल राशि में तैरने के लिए जलयान और एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से सामीप्य स्थापित करने के लिए अनेक भौतिक साधनों का आविष्कार किया, परन्तु क्या कभी उसने यह भी सोचा एवं समझा कि मैं क्रोध क्यों करता हूँ, मैं लोभ क्यों करता हूँ, मैं राग क्यों करता हूँ और मैं द्वेष क्यों करता हूँ? विकार और विकल्प मेरे अपने हैं अथवा मेरे से भिन्न हैं? क्या कभी यह समझने का प्रयत्न किया गया कि जीवन में उत्थान कैसे आता है और जीवन का पतन क्यों होता है ?

हमने अध्यात्म जीवन की बातें तो बहुत की, परन्तु हमारे जीवन में भौतिकता के विरोध में अध्यात्म-भाव नहीं पनप पाया, यही कारण है कि हम अपने जीवन को पावन -पवित्र नहीं बना पाये।

(क्रमशः)

-नेहरू गेट के बाहर, ब्यावर-305901

जिनवाणी के लेखकों हेतु शुभ सूचना

जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा पूर्व की भाँति इस वर्ष भी यह निश्चय किया गया है कि जनवरी से दिसम्बर 2010 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को विभिन्न वर्गों में पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल सुराणा-चेन्नई** की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए। **गत वर्ष की श्रेष्ठ रचनाओं का निर्णय शीघ्र ही लिये जाने की संभावना है।**

डॉ. धर्मचन्द जैन
सम्पादक

श्री विरदराज सुराणा
मंत्री

स्वास्थ्य विज्ञान

स्वर और स्वास्थ्य

(Swar and Health)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

स्वर क्या है?

नासिका द्वारा श्वास के अन्दर जाने और बाहर निकलते समय जो अव्यक्त ध्वनि होती है, उसी को स्वर कहते हैं।

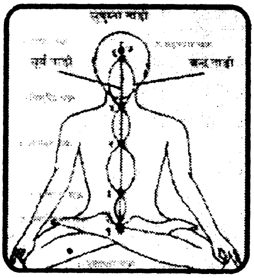

जब श्वसन क्रिया बांये नथुने से होती है तो उसे चंद्र स्वर का चलना, जब दाहिने नथुने से होती है तो सूर्य स्वर का चलना और जब दोनों नथुनों से बराबर होती है तो सुषुम्ना स्वर का चलना कहा जाता है।

स्वरों का प्रभाव:-

स्वरों और मुख्य नाड़ियों का आपस में एक दूसरे से सीधा सम्बन्ध होता है। ये व्यक्ति के सकारात्मक और नकारात्मक भावों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो उसके भौतिक अस्तित्व से सम्बन्धित होते हैं। उनके सम्यक् संतुलन से ही शरीर के ऊर्जा चक्र जागृत और सजग रहते हैं। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ क्रियाशील होती हैं।

चन्द्र स्वर और सूर्य स्वर नियमित रूप से शरीर की प्रवृत्तियों के अनुसार बदलते रहते हैं। यह परिवर्तन हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। जब हम शांत, स्थिर और अन्तर्मुखी होते हैं, उस समय प्रायः चन्द्र स्वर तथा जब हम बाह्य प्रवृत्तियों में सक्रिय होते हैं तो सूर्य स्वर अधिक प्रभावी होता है। यदि चन्द्र स्वर की सक्रियता के समय हम शारीरिक श्रम अथवा प्रवृत्तियों के कार्य करें तो उस कार्य में प्रायः मन नहीं लगता। उस समय मन अन्य कुछ सोचने लग जाता है। ऐसी स्थिति में यदि मानसिक कार्य करें तो, बिना किसी कठिनाई के वे कार्य सरलता से हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जब सूर्य स्वर चल रहा हो और उस समय यदि हम मानसिक कार्य करते हैं तो उस कार्य में मन नहीं लगता, एकाग्रता नहीं आती। इसके बावजूद भी जबरदस्ती कार्य करते हैं

तो, सिर दर्द होने लगता है। कभी-कभी सही स्वर चलने के कारण मानसिक कार्य बिना किसी प्रयास के होते चले जाते हैं, तो कभी-कभी शारीरिक कार्य भी पूर्ण रुचि और उत्साह के साथ होते हैं।

यदि सही स्वर में सही कार्य किया जाए तो हमें प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सफलता प्राप्त हो सकती है। जैसे अधिकांश शारीरिक श्रम वाले साहसिक कार्य जिसमें अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, सूर्य स्वर में ही करना अधिक लाभदायक होता है। सूर्य स्वर में व्यक्ति की शारीरिक कार्य-क्षमता बढ़ती है। ठीक उसी प्रकार जब चन्द्र स्वर चलता है, उस समय व्यक्ति में चिन्तन, मनन और विचार करने की क्षमता बढ़ती है।

शरीर में कुछ भी गड़बड़ होते ही गलत स्वर चलने लग जाता है। नियमित रूप से सही स्वर अपने निर्धारित समयानुसार तब तक नहीं चलने लगता, जब तक शरीर पूर्ण रूप से रोग मुक्त नहीं हो जाता।

स्वर द्वारा शरीर में गर्मी का सन्तुलनः-

जब चन्द्र स्वर चलता है तो शरीर में गर्मी का प्रभाव घटने लगता है। अतः गर्मी से सम्बन्धित रोगों एवं बुखार के समय चन्द्र स्वर को चलाया जाये तो बुखार शीघ्र ठीक हो सकता है। इसी प्रकार भूख के समय जठराग्नि, भोग के समय कामाग्नि और क्रोध एवं उत्तेजना के समय प्रायः मानसिक गर्मी अधिक होती है। अतः ऐसे समय चन्द्र स्वर को सक्रिय रखा जाए तो उन पर सहजता से नियन्त्रण पाया जा सकता है। जब दोनों स्वर बराबर अवधि में चलते हैं, शरीर की आवश्यकता के अनुरूप चलते हैं, तब ही व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

दिन में सूर्य के प्रकाश और गर्मी के कारण प्रायः शरीर में भी रात्रि की अपेक्षा गर्मी अधिक रहती है। अतः सूर्य स्वर से सम्बन्धित कार्य सूर्य स्वर में करने के अलावा जितना ज्यादा चन्द्र स्वर सक्रिय होता है, उतना स्वास्थ्य अच्छा होता है। इसी प्रकार रात्रि में दिन की अपेक्षा ठण्डक ज्यादा रहती है। चांदनी रात्रि में इसका प्रभाव और अधिक बढ़ जाता है। श्रम की कमी अथवा निद्रा के कारण भी शरीर में निष्क्रियता रहती है। अतः उसको संतुलित रखने के लिए सूर्य स्वर को अधिक चलाना चाहिए। इसी कारण जिन व्यक्तियों के दिन में चन्द्र स्वर और रात में सूर्य स्वर स्वाभाविक रूप से अधिक चलते हैं वे मानव प्रायः दीर्घायु होते

हैं।

चन्द्र और सूर्य स्वर का असन्तुलन ही थकावट, चिंता तथा अन्य रोगों को जन्म देता है। अतः दोनों का संतुलन और सामंजस्य स्वस्थता हेतु अनिवार्य हैं लम्बे समय तक रात्रि में लगातार चन्द्र स्वर चलना और दिन में सूर्य स्वर चलना, रोगी के खराब स्वास्थ्य का सूचक होता है। निरन्तर चलते हुए सूर्य या चन्द्र स्वर के बदलने के सारे उपाय करने पर भी यदि स्वर न बदले तो रोग असाध्य होता है तथा उस व्यक्ति की मृत्यु समीप होती है। दोनों स्वरों में जितना ज्यादा असंतुलन होता है उतना ही व्यक्ति अस्वस्थ अथवा रोगी होता है। संक्रामक और असाध्य रोगों में यह अन्तर काफी बढ़ जाता है। लम्बे समय तक एक ही स्वर चलने पर व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र होने की संभावना रहती है। अतः सजगता पूर्वक स्वर चलने की अवधि को समान कर असाध्य एवं संक्रामक रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। सजगता का मतलब जो स्वर कम चलता है उसको कृत्रिम विधि से अधिकाधिक चलाने का प्रयास किया जाए तथा जो स्वर ज्यादा चलता है, उसको कम चलाया जाये। कार्यों के अनुरूप स्वर का नियन्त्रण और संचालन किया जाए।

सुषुम्ना स्वर की पहचान:-

जब श्वास का प्रवाह चन्द्र और सूर्य नाड़ी में शांत हो जाता है तो सुषुम्ना में प्रवाहित होने लगता है। इस अवस्था में व्यक्ति की सुप्त शक्तियां सुव्यवस्थित रूप से जागृत होने लगती हैं। अतः वह समय अन्तर्मुखी ध्यान-साधना हेतु सर्वाधिक उपयुक्त होता है। ध्यान की सफलता के लिए प्राण ऊर्जा का सुषुम्ना में प्रवाह आवश्यक होता है। इस परिस्थिति में व्यक्ति न तो शारीरिक रूप से अत्यधिक क्रियाशील होता है और न ही मानसिक रूप से विचारों से अति विक्षिप्त। प्राणायाम एवं अन्य विधियों द्वारा इस अवस्था को अपनी इच्छानुसार प्राप्त किया जा सकता है। यही कारण है कि योग-साधना में प्राणायाम को इतना महत्त्व दिया जाता है। प्राणायाम ध्यान हेतु ठोस आधार बनाता है। कपालभाति अथवा नाड़ी शोधन प्राणायाम करने से सुषुम्ना स्वर शीघ्र चलने लगता है।

स्वरों की पहचान कैसे करें?:-

नथुने के पास अपनी अंगुलियां रखकर श्वसन क्रिया का अनुभव करें। जिस

समय जिस नथुने से अपेक्षाकृत अधिक श्वास प्रवाह होता है, उस समय उस स्वर की प्रमुखता होती है। बांये नथुने से श्वास चलने पर चन्द्र स्वर, दाहिने नथुने से श्वास चलने पर सूर्य स्वर तथा दोनों नथुनों से श्वास चलने की स्थिति को सुषुम्ना स्वर का चलना कहते हैं।

सूर्य स्वर बन्द कर चन्द्र स्वर चालू करने की विधि।

[illegible]

स्वर को पहचानने का दूसरा तरीका है कि हम बारी-बारी से एक नथुना बंद कर दूसरे नथुने से श्वास लें और छोड़ें। जिस नथुने से श्वसन सरलता से होता है, उस समय उससे संबन्धित स्वर प्रभावी होता है।

स्वर बदलने की विधियां:-

अस्वाभाविक अथवा प्रवृत्ति की आवश्यकता के विपरीत स्वर शरीर में अस्वस्थता का सूचक होता है। निम्नलिखित विधियों द्वारा स्वर को सरलतापूर्वक कृत्रिम ढंग से बदला जा सकता है, ताकि हमें जैसा कार्य करना हो उसके अनुरूप स्वर का संचालन कर प्रत्येक कार्य को सम्यक् प्रकार से पूर्ण क्षमता के साथ कर सकें।

1. जो स्वर चलता हो, उस नथुने को अंगुलि से या अन्य किसी विधि द्वारा थोड़ी देर तक दबाये रखने से, विपरीत इच्छित स्वर चलने लगता है।
2. चालु स्वर वाले नथुने से पूरा श्वास ग्रहण कर, बन्द नथूने से श्वास छोड़ने की क्रिया बार-बार करने से बन्द स्वर चलने लगता है।
3. जो स्वर चालू करना हो, शरीर में उसके विपरीत भाग की तरफ करवट लेकर सोने तथा सिर को जमीन से थोड़ा ऊपर रखने से इच्छित स्वर चलने लगता है।
4. जिस तरफ का स्वर बंद करना हो उस तरफ की बगल में दबाव देने से चालू स्वर बंद हो जाता है तथा इसके विपरीत दूसरा स्वर चलने लगता है।
5. जो स्वर बंद करना हो, उसी तरफ के पैरों पर दबाव देकर, थोड़ा झुक कर उसी तरफ खड़ा रहने से या उधर गर्दन को घुमाकर ठोडी पर रखने से कुछ

मिनटों में उस तरफ का स्वर बंद हो जाता है।

6. घी अथवा शहद जिसका पाचन हो सके, पीने से चालु स्वर तुरन्त बंद हो जाता है। परन्तु साधारण अवस्था में दूध या अन्य तरल पदार्थ पीने से भी स्वर बदली हो जाता है।

7. चलित स्वर में स्वच्छ रूई डालकर नथुने में अवरोध उत्पन्न करने से स्वर बदल जाता है।

स्वरों से रोगोपचार

1. गर्मी सम्बन्धी रोग– प्यास, गर्मी, बुखार, पित्त सम्बन्धी रोगों में चन्द्र स्वर चलाने से शरीर में शीतलता बढ़ती है, जिससे गर्मी से उत्पन्न असंतुलन दूर हो जाता है।

2. कफ सम्बन्धी रोग– सर्दी, जुकाम, खांसी, दमा आदि कफ सम्बन्धी रोगों में सूर्य स्वर अधिकाधिक चलाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। सर्दी का प्रभाव दूर होता है।

3. आकस्मिक रोग– जब रोग का कारण समझ में न आये और रोग की असहनीय स्थिति हो, ऐसे समय रोग का उपद्रव होते ही जो स्वर चल रहा है उसको बन्द कर विपरीत स्वर चलाने से तुरन्त राहत मिलती है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

website: chordiahealthzone.com

अनमोल वचन

1. जिसको सहना आ गया उसको रहना आ गया।
2. वाणी वीणा का काम करे, बाण का नहीं।
3. तप व जप से ही कर्मों का खप हो सकता है।
4. जिस घर में माँ-बाप की बात कटती है उस घर की पुण्यवानी घटती है।
5. शादी पराधीनता है और दीक्षा आजादी है।
6. संसार एक कैदखाना है, परिवार मुसाफिर खाना है, शरीर गंदगीखाना है और कर्म इसका कारखाना है।

-श्री प्रमोद हीरावत, जयपुर द्वारा

महासती श्री मुदितप्रभा जी के प्रवचनों से संकलित

बाल-स्तम्भ

संयम की सीख

श्री सुभद्र मुनि जी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अप्रेल 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार- 250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

वाराणसी नगरी में गंगा नदी से उत्तर-पूर्व में एक सुन्दर और विशाल तालाब था। उसे लोग 'मृतगंगातीरह्रद' कहते थे। उसमें दो कछुए रहते थे। उनमें एक वयोवृद्ध था। दूसरा युवा कछुआ था। दोनों में आयु का तो अन्तराल था, फिर भी वे प्रायः साथ-साथ रहते थे। युवा कछुआ वृद्ध कछुए का बहुत आदर करता था और वृद्ध कछुआ भी उसे पुत्रवत् प्यार करता था। समय-समय पर उसे उपयोगी शिक्षाएँ दिया करता था। किसी भी खतरे की स्थिति में कैसे अपने सारे शरीर को समेटकर अपने मजबूत कवच के भीतर छिपा लेना है, यह कला उसने उसे विशेष रूप से सिखाई थी। उसने बताया था कि एक बार यदि अपने खोल के भीतर सारे अंग सिकोड़ लिए जाएँ तो दुनिया की कोई तलवार कुछ नहीं बिगाड़ सकती। हमारी खोपड़ी से ही मनुष्य ने अभेद्य ढालें बनाकर युद्धों में खतरनाक हथियारों से अपने प्राण बचाए हैं। युवा कछुआ ये सब बातें ध्यानपूर्वक सुना करता था। तालाब के तट पर संध्या समय प्रायः साथ-साथ घूमते हुए दोनों कछुए सुन्दर लगते थे। साथ-साथ घूमते हुए वे दोनों मादा कछुओं द्वारा नम रेतीली भूमि में गड्ढे खोदकर रखे गए अण्डों की खोज-खबर भी रख लेते। अण्डों की सार-सम्भाल भी हो जाती, घूमना भी और आहार हेतु थोड़ी-बहुत वनस्पति भी उन्हें मिल जाती। यही कारण था कि शाम

को घूमना उनके नित्य-नियम जैसा हो गया था।

एक बार की बात है। संध्या के समय वे दोनों तट पर टहल रहे थे। दोनों की आँखों से पानी गिर रहा था। देखने वालों को यह भ्रम हो सकता था कि वे रो रहे हैं। वास्तव में अन्य कछुओं के समान उनकी आँखों के पास भी ग्रन्थियाँ थीं, जो पिये हुए पानी में घुला सारा नमक निकाल कर अलग करती रहती थीं। वृद्ध कछुआ युवा कछुए को समझा रहा था कि जब कोई खतरा हो तो काफी देर तक धैर्य के साथ अपने सभी अंग खोल के भीतर समेटे रखने चाहिए। आस-पास कोई गतिविधि न देख कर यह नहीं समझना चाहिए कि खतरा टल गया है। काफी देर के बाद सबसे पहले अपनी गर्दन निकाल कर सभी दिशाओं में देख लेना चाहिए कि कहीं कोई खतरा है या नहीं। फिर तेज गति से तालाब के भीतर चले जाना चाहिए। युवा कछुए का मन आज इन सब बातों में नहीं लग रहा था। वह उस वनस्पति की टोह में चारों ओर देख रहा था, जो कल उन्हें मिली थी। वह बहुत स्वादिष्ट थी। वह चाहता था कि वृद्ध कछुआ बूढ़ों जैसी बातें छोड़ कर उस वनस्पति के विषय में बातें करे, परन्तु बूढ़ा था कि उपदेश ही पिलाए जा रहा था। वह झल्ला उठा। तभी उसे कुछ दूरी पर वही वनस्पति दिखाई दी तो उसकी गति तीव्र हो गई। पीछे छूट गए वृद्ध कछुए ने उसे बाएँ देखने और सावधान होने को कहा। जैसे ही उसने बाएँ देखा, वैसे ही भय उसके अंग-प्रत्यंग में समा गया। दो सियार तेजी से उनकी ओर बढ़े आ रहे थे। दोनों सियारों के हाथ अर्थात् अगले पैर रक्त और मांस से सने थे। उनसे बचने के लिए पहले तो युवा कछुआ भागा परन्तु कुछ ही समय में वह समझ गया कि अपनी सुरक्षा के लिए कवच का उपयोग किए बिना प्राण न बचेंगे। तत्काल उसने अपने सभी अंग खोल के भीतर समेट लिए। वृद्ध कछुआ पहले ही खोल में समा चुका था। सियार उनके पास जब तक पहुँचते, तब तक दोनों चलते-फिरते कछुए दो स्थिर खोल बन चुके थे। सियारों ने अपने नाखूनों से उन्हें फाड़ने की चेष्टा की तो उनका एक-एक नाखून टूट गया। दाँतों से उन्हें छेदने की कोशिश की तो दाँत हिल गए। दोनों सियारों ने वे खोल पलटने की कोशिश की तो खोल सरक तो गए

किन्तु पलटे नहीं। सब ओर से उन्हें घुमा-फिरा कर भी देख लिया और सब कोशिशें करके भी सियार थक गए। कछुओं का वे बाल बाँका न कर सके। निराश होकर वे धीमे-धीमे पीछे की ओर लौट गए तथा मूक होकर ठहर गए। निश्चल तथा अवाक् होकर वे दूर से उन कछुओं को देखते रहे।

कुछ समय यूं ही व्यतीत हो गया। खोल में सिमटे युवा कछुए को लगा कि खतरा टल गया है। उसने धीरे-धीरे अपना एक पैर बाहर निकाला। सियारों की चौकन्नी आँखों से उसकी चेष्टा छुप नहीं पाई। चपल गति से वे तत्काल उसके पास पहुँचे और उसका पैर अपने तीखे दाँतों से तोड़कर खा गए। कछुए का सिकुड़ा हुआ सारा शरीर पीड़ा से भर गया। सियारों ने पुनः उसे उलटने-पलटने के प्रयास किए, किन्तु व्यर्थ। उन्होंने दूसरी बार भी वही तरीका अपनाया। थोड़ी दूर गए और पुनः घात लगाकर प्रतीक्षा करने लगे। कुछ समय फिर व्यतीत हुआ। युवा कछुआ अपंग हो चुका था। पीड़ा इतनी अधिक थी कि निरन्तर खोल में सिमटे रहने के लिए उसे अतिरिक्त प्रयास करना पड़ रहा था। बहुत देर तक वह संयम न रख सका। आसपास कोई गतिविधि न अनुभव कर उसने पुनः दूसरा पैर खोल से बाहर निकाला। सियार पुनः झपटे और देखते-देखते उसका दूसरा पैर भी हजम कर गए। शेष कछुए का वे प्रयास करने पर पुनः कुछ न बिगाड़ सके। तीसरी बार वे फिर छिप गए। कछुए का दर्द और अधिक बढ़ा। इस बार भी वह धैर्य खो बैठा। उसने अपना तीसरा पैर बाहर निकाला और सियारों को परोस दिया। उसका भी सियारों ने मजे से आहार किया। चौथी बार भी वही हुआ। अपने चारों पैर गँवाकर कछुआ और भी कम समय में अधीर हो उठा। उसने धीरे-धीरे अपनी गर्दन बाहर निकाली। सियार तो इस ताक में थे ही। तत्क्षण वे पहुँचे और नाखूनों से चीरते हुए उसके कपाल को दाँतों से तोड़ कर अलग कर दिया। कछुए के प्राण पखेरू उड़ गए। सियारों ने आनन्द से उसके सम्पूर्ण रुधिर और मांस का भोजन किया।

अपनी विजय से सियारों के हौंसले बुलन्द हो गए। वे दूसरे कछुए के पास गुर्राते हुए पहुँचे। दाँतों से उसे तोड़ने की कोशिश की। उसे पलटने के प्रयास किए। नाखूनों का उपयोग किया, परन्तु कछुए का कुछ न बिगाड़ सके। दूर जाकर सियार फिर चुपचाप बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे। रात

हो चुकी थी। तेज ठण्डी हवाएँ चल रही थीं। काफी समय तक सियार अपनी दृष्टि कछुए पर गड़ाए रहे, परन्तु कछुआ टस से मस न हुआ। घण्टों प्रतीक्षा करने के बाद थक-हार वे जिस दिशा से आए थे, उसी दिशा में लौट गए। उनके चले जाने के बहुत देर बाद वृद्ध कछुए ने खतरे को दूर गया भाँप कर धीमे से अपनी गर्दन सबसे पहले बाहर निकाली। चारों ओर देखा। कहीं कुछ न था। थोड़ी दूरी पर उसका प्यारा युवा कछुआ रिक्त खोल के रूप में पड़ा था। उसने अपने चारों पैर बाहर निकाले और पूरा दम लगाकर तालाब की ओर दौड़ने लगा। दो क्षणों में ही वह तालाब में पहुँच चुका था। वहाँ पहुँच कर उसने सोचा- काश! मेरा प्यारा युवा साथी अपनी इच्छाएँ सिकोड़ कर धैर्य व संयम-पूर्वक रहता तो आज वह भी मेरे साथ तैर रहा होता।

-'जैनागमों की पशु-पक्षी कथाएँ' से साभार

प्रश्नः

1. वृद्ध कछुआ युवा को क्या शिक्षाएँ देता था?
2. कछुए की शारीरिक एवं अन्य विशेषताएँ बताइये।
3. "जीवन में समस्या आने पर धैर्यपूर्वक विचार कर उसको सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिये, न कि परेशान होना चाहिए।" उदाहरण सहित समझाइए।
4. मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिये-
   (1) बाल बांका न होना, (2) हौसलें बुलन्द होना, (3) टस से मस न होना।
5. असंयम ने युवा कछुएँ की जान ले ली। क्या यह कथन सही है? समझाइए।
6. कथा में से निम्नलिखित शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिएः- इंतजार, तट, बूढ़ा, धीरज, कच्छप।
7. विलोम शब्द लिखिये-
   अभेद्य, संयम, अधीर, रिक्त, भीतर

(बाल स्तम्भ, जनवरी 2010 का परिणाम पृष्ठ सं. 44 पर देखें)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (3)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह तीसरी किश्त है। प्रतियोगी को अपने उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अप्रेल 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 111 से 170 तक से प्रश्न)

(अ) मुझे पहचानो-

1. मैं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सर्वार्थसिद्ध विमान से च्यवकर गर्भ में आया।
2. हम दोनों भाई एक ही दिन गर्भ में आए और एक ही दिन जन्मे।
3. मैंने तो अपने बड़ों की आज्ञा-पालन को ही अपना धर्म समझा है।
4. मैंने सम्यक्त्व का प्रभाव बताया।
5. हमने प्रभु से श्रमणधर्म की दीक्षा ग्रहण की।
6. चतुर्विध संघ-सेवा से मैंने तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया।

(आ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये-

7. मरीचि ने.........राजकुमार को अपना शिष्य बनाया।
8. आपको कुछ समय तक गृहस्थाश्रम में ही........के रूप में रहना चाहिए।

9. भरत सोचने लगे क्या.........चक्रवर्ती हैं जिससे मैं कमजोर पड़ रहा हूँ।

10. इस देश का भारत नाम भी ....के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ है।

11. मनुष्य जन्म पाकर भी........का उपयोग लोग पैरों को धोने में कर रहे हैं।

12. सुन्दरी के शरीर को अत्यन्त कृश और........देखकर भरतजी बड़े क्षुब्ध हुए।

(इ) किसने किससे कहा?

13. जिसकी दृष्टि के समक्ष मृत्यु नाच रही हो, वह नाटक कैसे देख सकता है?

14. प्रभो! चक्रवर्ती भरत किस गति में जायेंगे?

15. तेरी इस प्रव्रज्या को एवं वर्तमान जीवन को वन्दन नहीं करता हूँ।

16. ऐसी स्थिति में आप ही बताइये, हमें क्या करना चाहिए?

17. भाई! हाथी से नीचे उतरो।

18. मैं अपनी विरक्ति का कारण तुम्हें बताता हूँ।

(ई) अंकों में उत्तर लिखिये -

19. सगर के............पुत्रों को दृष्टिविष से भस्मसात् कर डाला।

20. अजीतनाथ जी................पूर्व कुमार अवस्था में रहे।

21. युवरानी वैजयन्ती ने भी..............महास्वप्न देखे।

22. प्रभु के श्रेयांस आदि प्रमुख.............श्रावक हुए।

23. इन मुनियों की............लवसत्तम जितना ही मोक्ष जाने में कम रहा था।

24. भरत जी अशनादि से भरे..........गाड़े लेकर मुनियों के पास पहुँचे।

25. भ. अजीतनाथ जी के .... मनःपर्यव ज्ञानी साधु थे।

प्रमाद

1. त्याग मार्ग में लगे हुए बड़े-बड़े साधक भी थोड़े समय प्रमाद कर जायं तो भटक जाते हैं।
2. समय का कोई ठिकाना नहीं। जो श्वास बाहर गयी, शायद वह लौटकर आये या नहीं, इसीलिये प्रमाद का परित्याग करो।
3. प्रमाद मानव को उन्नत, गौरवशाली, प्रख्यात, प्रतिष्ठित और यशस्वी बनने से रोकता ही नहीं, बल्कि भयंकर पतन के गर्त में गिराकर सर्वनाश भी कर देता है।

-'गजेन्द्र सूक्ति-सुधा' से संकलित

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (24) का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी, 2010 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (24) में 399 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अक्टूबर से दिसम्बर 2009 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार है-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	रतनलाल रांका-अजमेर	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	सुनीता कुम्भट-ब्यावर	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	स्नेहलता पी. शाह-बेलगाम	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

गणपत सुराणा-जोधपुर	(50)	सरला देवी चोरडिया-पीपाड़	(50)
अशोक बाबूलाल जैन-सूरत	(49)	बसंतकुमारी जैन-मसूदा	(49)
श्रीमती सरला कांकरिया-जलगाँव	(49)	श्रीमती सुमिता बोरा-धुले	(49)
विजेन्द्र जैन-पांवडेरा	(49)	अणची धारीवाल-पाली	(49)
बाबूलाल जैन-दिगरशिवर	(49)	अरुणा जैन-होशियारपुर	(49)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	गौरव जैन-जयपुर	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	समता विकास ललवानी-सिकंदराबाद	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	उर्मिला चोरडिया-पीपाड़	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

रितिक घींया-पीपाड़	(50)	दिव्या डागा, जयपुर	(50)
पंकज गांग-जोधपुर	(49)	सुनीता बोर्डिया-उदयपुर	(49)
सुरेखा भण्डारी-पिंपलगाँव	(49)	माधुरी जैन-बूंदी	(49)
नीति संघवी-बदनावर	(49)	श्वेता जैन-कोटा	(49)
श्वेता लोढ़ा-दुर्ग	(49)	सुनीता जैन-हिण्डौन	(49)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:-कविता सुनील डागा-जयपुर, शशि गांधी-जोधपुर, सुनीता नवलखा-कोटा, सौं. उषा पी. जैन--धुलिया, प्रवीण एन. बरड़िया-धुलिया, गुंजन आय जैन-धुलिया, उषा श्री श्रीमाल-पाली, सौ. मंगला सिंघवी-शिवनगर, नथमल कोठारी-बालोद, सौ. प्रमीला पोखरणा-धुले, कलावती

चौरडिया–जलगांव, श्रीमती सुशीला रांका–जलगांव, श्रीमती प्रतिभा गांधी–पुणे, मधुदेवी जैन–मसूदा, जयमाला कांकरिया–पाली, पुष्पा जैन–पाली, ए.शांतिलाल कांकरिया–पाली, मोहित जैन–पाली, वीरेन्द्र कुम्भट–जोधपुर, शैली कुम्भट–जोधपुर, किरण कुम्भट–जोधपुर, मंजू श्री सुराणा–जोधपुर, आकांक्षा प्रजापति–कोटा, अल्पा सुराणा–जोधपुर, गिरीश प्रजापति–कोटा, अरूण भंडारी–अहमदाबाद, जितेन्द्र जैन–चौथ का बरवाडा, कांता भंडारी–अहमदाबाद, महेन्द्र जैन–चौथ का बरवाडा,मनीषा सिघंवी–सूरत, कंचनदेवी जैन–बालोद, पारसमल रतनबोहरा–बालोद, सुशीला रूणवाल–पुणे, नोरतमल चंगेरिया–अजमेर, हेमलता जैन–ब्यावर, विनोद रांका–जोधपुर, लीलदेवी मेहता–पीपाड़, कल्पना धाकड़–गुडगांव, निर्मला बाफना–जोधपुर, अनिला भंडारी–ब्यावर, सुखराज दरडा–जोधपुर, नवकार लुणावत–पांचलासिद्धा, कु.आयुषी जैन–जयपुर, उपमा चौधरी–अजमेर, प्रमिला बोहरा–जैतारण, ऋषभ जैन–सुमेरगंजमंडी, नेहा जैन–कुण्डेरा, प्रियंका जैन–सवाईमाधोपुर, अरूणा पी.बैद–अमरावती, मनीष जैन–पाली, खुशी लुणावत–जोधपुर, महेन्द्रकुमार दरड़ा–जोधपुर, संगीता दरडा–जोधपुर, अरूणा कटारिया–पाली, नरेश कवाड़–पाली, पुष्पा लुणावत–पांचलासिद्धा, आर.नरेन्द्र कांकरिया–चेन्नई, कोमल पी. जैन–धुलियां, गौरव जैन–कोटा, सुमित डागा–जयपुर, शिल्पा गांधी–जोधपुर, पूर्णिमा जैन–जोधपुर, राहुल कुम्भट–जोधपुर, श्रीमती चंचल गोलेच्छा–जयपुर, श्रीमती टीना जैन–जयपुर, अंतिमा डोसी–ब्यावर, दिव्या जैन–धुले, श्रीमती लता आंचलिया–धुले, मयूरी जैन–धुले, नीलम जैन–अजमेर, श्रीमती रीना कोठारी–बालोद, शशीदेवी रतनबोहरा–बालोद, श्रीमती रचना सुरेश भडांरी–जोधपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:– विमला बाई खींवसरा–धुले, पुखराज जैन–मसूदा, कमला सेठिया–मसूदा, कविता जैन–खारघर(नवी मुंबई), पदमचंद मुणोत–जयपुर, योगिता अमित कर्णावट–अहमदनगर, हर्षला बोहरा–धुलिया, गजराज सेठिया–धनारीकलां, सरोज रूणवाल–धुले, सौ. किरण कांतिलाल जैन–मुकटी, स्नेहल जैन–मुकटी, नेणचंद बाफना–जोधपुर, कवलराज मेहता–जोधपुर, बिंदु मेहता–जोधपुर, कमला मोदी–जोधपुर, राजुल रमेशजी कोठारी–धुले, योगिता खींवसरा–मुकटी, रविन्द्र खीवंसरा–मुकटी, दर्शना खीवंसरा–मुकटी, अनिलकुमार जैन–कोटा, विनोद पालरेचा–जोधपुर, नीरा भडांरी–ब्यावर, सुशीला बेगानी–बीकानेर, जयवंत शाह–पीपलोद, वनमाला विक्रम राठौड़–धुलिया, कान्ता बैताला–जयपुर, विजयालक्ष्मी छाजेड़–धुले, सरोज बोहरा–उदयपुर, राकेश जैन–भीलवाड़ा, जयसिंह छाजेड–समदड़ी, मंजुला जैन–भीलवाड़ा, लक्ष्मीचंद छाजेड़–बालोतरा, सुनीता दुस्साज–जयपुर, हेमराज जैन–जयपुर, सौं.जवेर नरेन्द्र शाह–बेलगांव, नीर कवाड़–पाली, निर्मला बरडिया–बोदवड़, उषा चौरडिया–दिल्ली, दीपमाला सिंघवी–पाली, वंदना पुनमिया–पाली, मोनिका गोलेछा–ब्यावर, पुष्पा गोलेछा–ब्यावर, रीतू बेगानी–जोधपुर, सुनील सकलेचा–जोधपुर, चांदनी मेहता–पीपाड़, संदीप जैन–जोधपुर, जया खिवंसरा–जोधपुर, नवरतन–जोधपुर, अभिषेक महता–अजमेर, आरती कवाड़–धुले, रूपल जैन–भीलवाड़ा, कु. शिल्पा जैन–शंभूपुरा, सीमा लुंकड़–धवा, कु.शिल्पा जैन–रतकूडियां, धर्मेश पूनमिया–पाली, मनीषकुमार जैन–पाली, दीपिका कांकरिया–जोधपुर, शोभा कवाड़–जोधपुर, पल्केश कटारिया–पाली, सौ. अनीता दुग्गड़–धुलियां, श्रीमती हेमलता जैन–कुशतला, श्रीमती संगीता जैन–कुशतला, प्रियंका जैन–कुशतला, गरिमा जैन–कोटा, लोकेश जैन–ब्यावर, श्रीमती अश्विनी आनन्द जैन–जालना, हेमलता कोठारी–धुले, अजय अरूण कुमार भंडारी–अहमदाबाद, संजय अरूण कुमार भंडारी–अहमदाबाद, श्रीमती अर्चना कोठारी–बालोद, श्रीमती सीमा जैन–हा.बोर्ड, सवाईमाधोपुर, रूचिका लूणावत–जोधपुर, संगीता जैन–जोधपुर।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–अर्पित जैन–जोधपुर, सुनंदा सुभाष लोढ़ा–धुलिया, सौं. कंचन कोचर–धुलिया, शोभादेवी गोठी–बालोतरा, हीरा रमेश कर्नावट–अहमदनगर, बसंती गांधी–चन्द्रपुर, श्रीमती युगल रांका–अहमदनगर, मधुबाला–आचीणा, मोहिनी देवी–आचीणा, सुमेर वैद–आचीणा, मोहनलाल जैन–अजमेर, निर्मला भलगट–चन्द्रपुर, आशा अग्रवाल–जयपुर, सुनीता कोटड़िया–शहादा, विमला भंडारी–भंडारा, मुन्नालाल भंडारी–जोधपुर, हेमलता सेठिया–धनारी, पारसमल बाघमार–बालोतरा, दर्शिका टाटिया–जलगांव, त्रिलोकचंद जैन–आचीणा, सुशीलाबाई खींवसरा–मुकटी, कंचन लोढ़ा–नासिक, पद्मा एस. मुणोत–भडांरा, सुरेश भंवरलाल मुणोत–भंडारा, चदंनमल पालरेचा–जोधपुर, मधुमतिशाह–पीपलोद, मनीषा चौपड़ा–जोधपुर, ज्योतिप्रकाश जैन–चौरू, दीपक भंसाली–डोंडीलहरा, प्रकाशचंद जैन–डोंडीलहरा, चमेली जैन–डोंडीलहरा, सरला भंसाली–डोंडीलहरा, संदीप भंसाली–डोंडीलहरा, अमित पारख–राजनांदगांव, निशा लुकंड़–कोटा,किरण बाघमार–हैदराबाद, रेणु बोहरा–दिल्ली, दशरथमल चौरडिया–बैंगलोर, कल्पेश जैन–धवा,संगीता मेहता–जोधपुर,सरोज नाहर–दिल्ली,आर.चन्द्रा बोथरा–चैन्नेई,सुशीला हीरावत–जयपुर, राजेन्द्र कोठारी–जोधपुर, शशि जैन(गूगल्या)–ग्वालियर, प्रियंका जैन–जयपुर, रीमा जैन–लुधियाना,

प्रवीणचंद जैन–हिण्डौन, प्रियंका जैन–जयपुर, पल्लवी जैन–जोधपुर, चंद्रिका मेहता–जोधपुर, राखी लोढ़ा–भायंदर, ए.इंदिरा बाघमार–हैदराबाद, प्रीति सिंघवी–ब्यावर, कुणाल मेहता–जोधपुर, आशा जैन–हा.बो. सवाईमाधोपुर, राजेश लुणावत–आचीणा, पायल धारीवाल–जोधपुर, विकास जैन–चेन्नई, नीलू जैन–लुधियाना, कु.दीपा बाघमार–फत्तेपुर, मीनाक्षी छाजेड़–समदड़ी, पुनीता जैन–करौली, अनीता जैन–स. मा., आयुष जैन–ब्यावर, विपुलकुमार जैन–जोधपुर, सुबोध मोहनोत–नवसारी, महेन्द्र लुणावत–इंदौर, रोहन जैन–इंदौर, प्रवीण जैन–आचीणा, श्रीमती दीप्ति भडांरी–जोधपुर, विनीता जैन–हा.बोर्ड,सवाईमाधोपुर, श्रीमती उज्ज्वला जैन–जोधपुर।

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-वनिता जैन–ब्यावर, सौ. शारदा एच.मुथा–लासूर स्टेशन, अरुणा फिरौदिया–भंडारा, शीतल बंब–लासुर स्टेशन, निर्मलकुमार सेठिया–धनारीकलां, कंचनबाई बंब–लासुर स्टेशन, शशिकांता जैन–भरतपुर, ज्योति जैन–हिण्डौन, शांतिलाल महात्मा–सेंती, निर्मला गादिया–आगरा, ललिथा जैन–रामकोट, मयंक लुंकड़–कोटा, सुधा डागा–बीकानेर, उषा जैन–कोटा, पुष्पा गांधी–जोधपुर, पारसचंद जैन–भरतपुर, रमणलाल छाजेड़–देवपुर धुले, प्रकाश जैन–हैदराबाद, बाबूलाल जैन–गोपालगढ़, नैतिक ओस्तवाल–पीपाड़, विमलादेवी जैन–कोटा, सीमा जैन–कोटा, राज जैन–दिल्ली, विजयमल मेहता–जोधपुर, निशा जैन–अलीगढ़, टीना मेहता–दूदू, शारदा बाघमार–मेडतासिटी, दीपक कटारिया–भीलवाड़ा, सुमतचंद जैन–हिण्डौन, ज्योति जैन–हिण्डौन, मनीषा जैन–हिण्डौन, प्रतिभा जैन–हिण्डौन, आरती जैन–होशियारपुर, सीमा कटारिया–भीलवाड़ा, रमेश कुमार बोहरा–बाणावर, राजेश्वरी बोहरा–बाणवर, धर्मेन्द्र जैन–हा.बो.सवाईमाधोपुर, आर.राजेश्वरी बोहरा–बाणावर, प्रीति जैन–जोधपुर, रीटा कोठारी–राजसमंद, मनीषा एस.गोगड़–बेल्होंगल, सुमन जैन–बजरिया, कृति जैन–जयपुर, श्रीमती सरोज खाबिया–मैसूर, संगीता खाबिया–मैसूर, संगीता जैन–मैसूर, सुनील जैन–मैसूर, कल्पना जैन–दूदू, प्रमिला कांकरिया–जोधपुर, विनोद कांकरिया–अहमदाबाद, नीतू सेठ–जयपुर।

45 या उससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-ललिता लुणावत–जोधपुर, विमलराणुलाल कोचर–नासिक, पिस्ता गोलेच्छा–जयपुर, मनीला पारख–जयपुर, मंजुला बसंतकुमार जैन–भायंदर, नीतू जैन–बूँदी, शशि कटारिया–भीलवाड़ा, शोभा कोठारी–धुले, हेमंत डागा–बूँदी, चित्रा डागा–बूँदी, शैली भडांरी–बैंगलोर, श्रेहा पारख–बोरीवली, संतोष पोखरना–दूदू, प्रेमलता चौधरी–भीलवाड़ा, विजयलक्ष्मी मुणोत–जयपुर, मंजू कास्टिया–कोलकाता, विमला मादरेचा–भीलवाडा, रामपति जैन–हिण्डौनसिटी, ईशीता जैन–होशियारपुर, गुणमाला जैन–सैंथी, गुणमाला जैन–सूरवाल, शिमला जैन–बोरीवली, राजुल निर्मल कोठारी–बनीपार्क, गुणमाला जैन–चित्तौडगढ़, कांता खींवसरा–बडनेरा, स्मिता कांकरिया–जायखेड़ा, अलका शाह–उज्जैन, रोहिता जैन–उज्जैन, उषा भडांरी–दुर्गापुरा, प्रेमलता लोढ़ा–जयपुर, माया जैन–जयपुर, देवीलाल भाणावत–कानोड़, राजकुमारी लोढ़ा–जयपुर, रमिला कर्नावट–वणी, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, शकुंतला खीवसरा–मांडल, बसंता सकलेचा–नरड़ाणा, अंकित जैन–बड़ौदाकान, निर्मला सुराणा–बीकानेर, सुरेशचंद जैन–खेरली, बबीता जैन–जयपुर, गोतममल गांग–जोधपुर, नीरज जैन–हरसाना, विवेक जैन–हरसाना, त्रिलोकचंद जैन–जयपुर, प्रियंका बाघमार–मेडतासिटी, रजनी जैन–सवाईमाधोपुर, रक्षिता मेहता–जोधपुर, नीलम मेहता–जोधपुर, यश कोठारी–राजसमंद, प्रमोद कोठारी–राजसमंद, मोनिका देशलहरा–सिकंदराबाद, शोभा सुराना–चेन्नई, प्रवीण सुराणा–चेन्नई, कविता कोठारी–अजमेर, पूनमचंद राणुलाल जैन–शहादा, निकिता कांकरिया–नागौर, नीलम कांकरिया–नागौर, प्रिया चौधरी–भीलवाड़ा, आसी जैन–नदबई, संजय बाफना–जोधपुर, निर्मला बाफना–जोधपुर, कुशलचंद बाफना–जोधपुर, चित्रा जैन–आलनपुर, स्वीटी गोलेछा–ब्यावर, नरेश जैन–नदबई, ममता जैन–नदबई, दिलीप जैन–सवाईमाधोपुर, इन्द्रप्रसाद जैन–सवाईमाधोपुर, प्रियंका गोगड़–सोंदती, गरिमा चौधरी–चित्तौड़गढ़, अशोक कवाड़–चेन्नई, दिलरूप चंद भंडारी–जोधपुर, कविता पारख–बोरीवली, रमेश भण्डारी–जोधपुर, उर्मिला कांकरिया–जोधपुर, राकेश कांकरिया–जोधपुर, अमित अशोक जैन–धुले, दीक्षा जैन–नदबई, रेखा सुराणा–जोधपुर, सुश्री कृतिका एस.गांधी–पीपाड़, सरिता एस.गांधी–पीपाड़शहर, सुनीता बाफना–महामंदिर, पायल जैन–जोधपुर, अलका मेहता–जोधपुर, मनीषा भडांरी–जोधपुर, रक्षिता जैन–सूरवाल, श्रीमती अमीता राजेश जैन–इंदौर, सरोज जैन–बोरीवली, सौ. संगीता रवीन्द्र छाजेड़–चालीसगांव, रूबी जैन–बडौदाकान, डॉ.एम.के. जैन–खेरली, अजय अरूणकुमार भंडारी–अहमदाबाद, श्रीमती नीलम चीपड़–दूदू, दीपेश जैन–अलवर, दिनेश जैन–जोधपुर, वीनू भंडारी–पीपाड़, मनीषा धारीवाल–जोधपुर, किस्मत लुणावत–पीपाड़, श्रीमती रीतू लोकेन्द्र मोदी–खानपुरावास, हेमलता जैन–बडौदाकान, प्रमीला मेहता–दूदू, जयश्री राजेन्द्र गुंदेचा–कसबे सुकेणा।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (24) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. नारी	नवम्बर/8	2. गुरु-भक्ति	दिसम्बर/96
3. अध्यात्म	अक्टूबर/36	4. मानव	नवम्बर/14
5. कर्त्तव्य	अक्टूबर/15	6. वेदना	दिसम्बर/36
7. छज्जीवणिया	नवम्बर/43	8. करुणा	अक्टूबर/52
9. शुभ-संकल्प	दिसम्बर/6	10. प्रतिक्रमण	नवम्बर/63
11. धर्म	दिसम्बर/46	12. कटोरा	अक्टूबर/38
13. थोभ	नवम्बर/57	14. पूर्व	अक्टूबर/19
15. अहंकार	दिसम्बर/13	16. पुद्गल	अक्टूबर/5
17. अजीवक्रिया	नवम्बर/10	18. मानसिक	अक्टूबर/25
19. एषणा	दिसम्बर/45	20. अगृहीत	नवम्बर/13
21. वैराग्य	अक्टूबर/10	22. ममता	दिसम्बर/31
23. स्वस्तिक	अक्टूबर/45	24. बुद्बुदे	अक्टूबर/54
25. वैयक्तिक	नवम्बर/32	26. आचार्य हरिभद्र	नवम्बर/27
27. कन्फ्यूशस	अक्टूबर/71	28. आचार्य हस्ती	दिसम्बर/14
29. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ	अक्टूबर/56	30. गौतम स्वामी	दिसम्बर/79
31. 10	नवम्बर/7	32. 3	अक्टूबर/28
33. 3	दिसम्बर/9	34. 25	नवम्बर/33
35. 8	अक्टूबर/44	36. 48	दिसम्बर/79
37. 13.01.1911	नवम्बर/85	38. 96	नवम्बर/16
39. 98.4	अक्टूबर/69	40. 15	नवम्बर/15
41. गलत	अक्टूबर/8	42. गलत	दिसम्बर/27
43. गलत	नवम्बर/6	44. सही	नवम्बर/11
45. गलत	नवम्बर/15	46. सही	नवम्बर/2
47. गलत	दिसम्बर/78	48. सही	नवम्बर/67
49. गलत	दिसम्बर/18	50. गलत	अक्टूबर/24

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म चेतना वर्ष'

आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता

आचार्य श्री हस्ती का व्यक्तित्व बहुआयामी था और कृतित्व भी। आगममर्मज्ञ, इतिहास मनीषी, अध्यात्मयोगी, समाज-सुधारक और कुशल प्रवचनकार होने के साथ-साथ वे एक श्रेष्ठ कवि भी थे। उनके द्वारा रचित गीत, भजन, पद, काव्य आदि विविध शिक्षाओं एवं अनुभूतियों से अनुप्राणित हैं। विविध विषयों पर रचित उनके काव्य जीवन में शान्ति, आनन्द और पुनीत प्रेरणाओं का संचार करते हैं। जीवन के सुख-दुःख तथा खट्टे, मीठे क्षणों में आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित गीत, भजन, पद किसी भी व्यक्ति के चित्त को आलोकित कर सकते हैं। जन-जीवन में उनके भजन चर्चित बनें एवं समाज में संस्कार-सरिता बहती रहे, इसी मंगल-भावना से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर **"आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता"** का आयोजन किया जा रहा है।

देश-विदेश में जहाँ-जहाँ भी संघ एवं संघ से सम्बद्ध संगठनों की शाखाएँ या उपशाखाएँ है वहाँ पर आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 19वें स्मृति-दिवस, द्वितीय वैशाख शुक्ला अष्टमी दिनांक 21 मई 2010 को इस प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया है। इस प्रतियोगिता में अधिक से अधिक बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ भाग लें। जैन-जैनेतर सभी आयु के लोग इसमें भाग ले सकते हैं।

प्रतिभागी को आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित कोई एक श्रेष्ठ गीत, भजन या काव्य कण्ठस्थ करना होगा तथा प्रतियोगिता के दौरान मंच पर सुर, लय और हावभावों के साथ प्रभावी प्रस्तुति देनी होगी। आचार्य श्री पर रचित भजनों, गीतों अथवा स्तुतियों को भी इसी प्रकार प्रस्तुत किया जा सकेगा। आचार्य श्री के जीवन पर रचित काव्यकृति 'मुक्ति का राही' के काव्य पद्य भी स्मरण करके प्रस्तुत किए जा सकेंगे। इस काव्यकृति में से 5-7 मिनिट की अवधि में प्रस्तुत करने योग्य चयनित पदों को लय सहित प्रस्तुत किया जा सकेगा। आचार्य हस्ती रचित रचना की प्रस्तुति को प्राथमिकता रहेगी। प्रतियोगिता समिति द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ निर्णायकों द्वारा अंक दिये जायेंगे तथा प्रत्येक शाखा में तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने वालों को क्रमशः 1100/-, 800/-, 500/- रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे। कम से कम 20 प्रतिभागी होने पर किसी भी शाखा पर प्रतियोगिता आयोजित कराई जा सकेगी। बड़ी शाखाओं में न्यूनतम 30

प्रतिभागी होने चाहिए। सभी स्थानों पर विजेता रहे प्रतिभागी की एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता आयोजित कराई जाएगी। समापक प्रतियोगिता में विजेता घोषित होने वाले को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित भजन, गीत आदि निम्नांकित पुस्तकों में उपलब्ध हैं- (1) गजेन्द्र पद मुक्तावली-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित, फोन नं. 0141-2575997 (2) नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर से उपलब्ध, फोन नं. 0291-2636763 (3) भजन की अनेक पुस्तकों में भी संकलन।

जो शाखाएँ या उपशाखाएँ इस प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहती हैं वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित करें। प्रतियोगिता के लिए सूचना 15 अप्रेल 2010 तक निम्नांकित पते पर प्रेषित करना आवश्यक है -

विरदराज सुराणा, मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, मो. 9314012415

ईमेल- jinvani@yahoo.co.in, sgpmandal@yahoo.in

HAPPINESS

Ms. Meenu Surana

1. If you cannot be a pencil to write anyone's happiness, try at least to be a nice rubber to erase everyone's sorrows. This is the essence of life.
2. Happiness is a perfume, you can not spread on others without getting a few drops on yourself, so be happy to make others happy.
3. Everyone desires happiness. No one wants pain, but it's not possible to get a rainbow without a little rain.
4. Happiness is like a radio station broadcasting all the time! you just have to learn how to tune in and receive it properly.
5. Life is a book of mystries, you never know which page will bring a good twist in the story, so keep on reading, because happiness comes when it is most unexpected.

-Surana Ki Badi Pole, Nagaur-341001(Raj.)

जिनवाणी विशेषाङ्क

विषय- गुरु-गरिमा (श्रमण-जीवन)

जिनवाणी पत्रिका के विशेषाङ्कों की गौरवमयी परम्परा रही है। उसी शृंखला में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की जन्म-शताब्दी एवं अध्यात्म-चेतनावर्ष के अवसर पर गुरु-गरिमा (श्रमण-जीवन) विशेषाङ्क प्रकाशित किए जाने का निर्णय किया गया है।

भारतीय परम्परा में गुरु का विशेष महत्त्व अंगीकृत है तथा श्रमण-श्रमणी को गुरु के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। तीर्थंकर, गणधर, आचार्य एवं उपाध्याय भी श्रमण के रूप में गुरु ही हैं। आचार्य हस्ती एक महान् श्रमण थे तथा सद्गुरु की विशेषताओं से सम्पन्न थे। अध्यात्म-चेतना वर्ष में आध्यात्मिक जागरण हेतु गुरु एवं श्रमण-जीवन के महत्त्व से परिचित बनें, इसी आशय से जिनवाणी का यह विशेषाङ्क श्रमण-जीवन एवं गुरु महिमा को समर्पित है।

प्रज्ञाशील सन्तप्रवरों/साध्वियों, विश्रुत विद्वानों/ विदुषियों स्वाध्यायी पाठकों से गवेषणापूर्ण, विश्लेषाणात्मक, विचारात्मक एवं मर्मोद्घाटक आलेखों/ रचनाओं के प्रेषण हेतु विनम्र निवेदन है। आपके योगदान से ही यह विशेषाङ्क विशिष्ट सामग्री से समृद्ध बन सकेगा। आप अपनी रचनाएँ 30 अप्रेल, 2010 तक प्रेषित कर अनुगृहीत करें। आपकी सुविधा हेतु कतिपय विषय प्रस्तावित हैं-

प्रस्तावित विषय-सूची

1. गुरु का स्वरूप : जैन परम्परा में
2. गुरु का स्वरूप : संस्कृत वाङ्मय में
3. जैन परम्परा में श्रमण का स्वरूप
4. श्रमण की प्रमुख विशेषताएँ
5. आचार्य का स्वरूप एवं महिमा
6. उपाध्याय का स्वरूप एवं महिमा
7. पंच महाव्रत
8. गुरु की प्रमुख विशेषताएं
9. दशवैकालिक में श्रमण-जीवन
10. आचारांग सूत्र में श्रमण-जीवन
11. उत्तराध्ययन में श्रमण-जीवन
12. सूत्रकृताङ्ग में श्रमण-जीवन
13. ईर्या एवं भाषा समिति
14. एषणा समिति
15. पंचाचार
16. श्रमण-जीवन में संयम
17. प्रमत्तसंयत एवं अप्रमत्तसंयत
18. ज़ीवन में गुरु का महत्त्व

19. श्रमण-जीवन की श्रेष्ठता
20. सर्वहिंसाविरमण
21. सर्वमृषाविरमरण
22. सर्व-अदत्तादानविरमण
23. सर्व-मैथुनविरमण
24. सर्व-परिग्रहविरमण
25. श्रमण एवं श्रमणी के आचार में भेद
26. संलेखना-संथारा
27. रात्रि-भोजन-विरमण का महत्त्व
28. श्रावकोपयोगी श्रमणाचार
29. त्यागी गुरु
30. आचार्य हस्ती में गुरु-तत्त्व
31. श्रमण की मर्यादाएँ
32. श्रमण-जीवन में सावधानियाँ
33. आध्यात्मिक साधना और श्रमणाचार
34. आचार्य हस्ती का श्रमण-जीवन
35. श्रमण का गुणस्थानों में आरोहण
36. Guru : A light in life
37. त्रिगुप्ति का महत्त्व
38. श्रमणोचार : प्रमुख प्रश्नोत्तर
39. श्रमण में गुरु के गुण
40. गुरु होने का अर्थ
41. जैन पुराणों में गुरु का महत्त्व
42. अप्रमत्तता और श्रमण जीवन
43. मूलाचार में श्रमण-जीवन
44. श्रमण की समाचारी
45. श्रमण के परीषह
46. श्रमण की निरवद्य चिकित्सा
47. तीर्थंकर में गुरुतत्त्व
48. श्रमण की समत्व-साधना
49. युवापीढ़ी को आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता
50. श्रमणों एवं श्रावकों का पारस्परिक सम्बन्ध
51. स्थानाङ्ग सूत्र में श्रमण-जीवन
52. श्रमण-श्रमणी की चर्या एवं कुल का महत्त्व
53. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्रमणाचार की महत्ता
54. आदान निक्षेपण एवं परिष्ठापनिका समिति
55. अध्यात्मिक दृष्टि से गुरु का स्वरूप
56. प्राकृत वाङ्मय में गुरु का स्वरूप
57. अप्रभ्रंश साहित्य में गुरु का स्वरूप एवं महत्त्व
58. वैदिक परम्परा में गुरु का स्वरूप एवं महत्त्व
59. श्रेष्ठ श्रमणों की जीवन झांकी
60. श्रमण के परीषह
61. संघ उन्नयन में श्रमण की भूमिका

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

सुचरित्रम्- आचार्य विजयराज जी, सम्पादक- शान्तिचन्द मेहता, ***प्रकाशक***- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्तक्रान्ति जैन श्रावक संघ, 279-ए, नवकार भवन, सेक्टर-3, हिरणमगरी, उदयपुर-313002, अन्य ***प्राप्तिस्थान***- नवकार भवन, मेवाड़ी गेट के बाहर, ब्यावर-305901 ***पृष्ठ***- 32+580, ***मूल्य*** 200 रुपये, ***प्रथम संस्करण*** - 2009

मानवीय व्यक्तित्व की उच्चता उसके चरित्र से आंकी जाती है। जब मानवीय मूल्यों की अपेक्षा पदार्थ-जगत् को अधिक महत्त्व दिया जाता है तो व्यक्ति चारित्रिक पतन का शिकार होता है। चरित्र-निर्माण में व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए हितावह आचार्य नानेश के शिष्य आचार्य विजयराज जी ने चरित्र-निर्माण की दिशा में प्रस्तुत ग्रन्थ 'सुचरित्रम्' में प्रेरणाप्रद विचारों का गुम्फन किया है। 42 अध्यायों में निबद्ध यह ग्रन्थ आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष सबके लिए उपयोगी है। युवाओं के लिए उसमें विशेष सामग्री संजोयी गयी है। चरित्र-निर्माण में सम्यक् सोच की महती भूमिका होती है। सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञानपूर्वक चारित्र में चरण बढ़ाने पर उच्चतम विकास को प्राप्त किया जा सकता है। आचार्य विजयराज जी ने उस व्यक्ति को महत्त्व दिया है जो सदाचार के स्वरूप को जानता, पहचानता है तथा तदनुसार आचरण करता है। चरित्र-निर्माण की प्रक्रिया सतत चलनी चाहिए। इसके लिए विशिष्ट अभियान भी आवश्यक है। इस अभियान के आचार्य श्री की दृष्टि में तीन चरण हो सकते हैं- (1) चरित्रहीनता का उन्मूलन (2) अहिंसक जीवनशैली का निर्माण तथा (3) सत्य से साक्षात्कार।

जीवन के उन्नयन में चारित्रिक-निर्माण किस प्रकार उपयोगी हो सकता है तथा उस दिशा में किस प्रकार आगे बढ़ा जा सकता है, इसका विभिन्न आयामों एवं परिप्रेक्ष्यों से विचार प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है। इसके पूर्व प्रकाशित कि चरित्रम् पुस्तक का यह वृहद्रूप है।

कैंसर : एक संक्षिप्त परिचय- सुधीन्द्र गेमावत एवं डॉ. अरुण चौगुले, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017, दूरभाष 0141-2524827 एवं अध्यक्ष, जयपुर कैंसर रिलीफ सोसायटी, 3-न-3, जवाहर नगर, जयपुर-302004, दूरभाष-0141-2651973, ***पृष्ठ***-113, ***मूल्य***-150 रुपये, ***संस्करण***-प्रथम 2009

कैंसर एक घातक रोग है। यह कोशिकाओं अथवा कोष्ठकों **(Cells)** की अनावश्यक एवं अनियन्त्रित वृद्धि के कारण उत्पन्न होता है। इस वृद्धि का प्रभाव टिश्यू, नाड़ियों, धमनियों तथा लिम्फेटिक्स पर भी होने लगता है, जो शरीर के लिए घातक है। कैंसर के कई कारण होते हैं। इनमें रहन-सहन, खान-पान, जलवायु, तम्बाकू, गंदगी आदि अनेक कारण सम्भव हैं। कैंसर का प्रारम्भ होते ही चिकित्सा करना श्रेष्ठ है, किन्तु देरी से पता चलने के पश्चात् चिकित्सा होना दुःसाध्य हो जाता है। कैंसर छुआछुत का रोग नहीं है। कैंसर तेजी से बढ़ सकता है अथवा यह 5 से 40 वर्ष तक सुप्त भी रह सकता है। प्रस्तुत पुस्तक कैंसर से सम्बन्धित समस्त आवश्यक जानकारी देती है। कैंसर के प्रकार, परीक्षण, इलाज, इलाज के पार्श्व प्रभाव, उपचार की सहायक पद्धतियों, कैंसर से बचाव आदि का उल्लेख किया गया है। भारत में कैंसर उपचार की सुविधाओं की सूची भी दी गई है तथा व्यक्ति को सजगता की सीख दी गई है। हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तकों के अभाव को यह पुस्तक दूर कर सबको सामान्य एवं प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत करती है।

आपका स्वास्थ्यः आपके हाथ- वैद्य सम्पतराज मेहता (आयुर्वेदाचार्य), ***प्रकाशक***- वैद्य सम्पतराज मेहता स्मृति चिकित्सा केन्द्र, 268 ए, मेहता मेन्शन, चौथी 'बी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2434695, ***पृष्ठ***- 160, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं, अगस्त 2009

वैद्य सम्पतराज मेहता की स्मृति में उनके द्वारा संकलित विचारों को पुस्तक के रूप में प्रकाशन का कार्य उनके सुपुत्रों श्री भरत मेहता एवं बसन्त मेहता द्वारा किया गया है। वे दोनों आयुर्वेदरत्न हैं। पुस्तक में सामान्य एवं गम्भीर रोगों के सरल उपचार के साथ घरेलू नुस्खे भी दिए गये हैं। औषधियों के गुणधर्म भी बताए गए हैं।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 10 जनवरी 2010 को आयोजित कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 10 अप्रेल 2010 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

49305, 49704, 51430, 51438, 51664, 51859, 52329, 52330, 52488, 52604, 53803, 53827, 54056, 54064, 54439, 54446, 54909, 55377, 55862, 56894, 57120, 57273, 57274, 57275, 57276, 57279, 57280, 57330, 57331, 57335, 57522, 57642, 57650, 57657, 58276, 58384, 58423, 58659, 58735, 58913, 58915, 58916, 59353, 59494, 60001, 60079, 60111, 60151, 60286, 60978, 60988, 60990, 61013, 61026, 61030, 61072, 61258, 61307, 61316, 61322, 61324, 61344, 61360, 61520, 61521, 61558, 61572, 61573, 61584, 61894, 61900, 61907, 61912, 61913, 61931, 61937, 61938, 62205, 62432, 62443, 62446, 62550, 62564, 62942, 62986, 62988, 63174, 63262, 63273, 63352, 63705, 63914, 63971, 63985, 64000, 64013, 64035, 64162, 64184, 64255, 64602, 64719, 64840, 64854, 65464, 65753, 65791, 65843, 65999, 66084, 66090, 66096, 66108, 66114, 66115, 66123, 66125, 66133, 66134, 66138, 66162, 66163, 66165, 66167, 66168, 66169, 66170, 66174, 66178, 66182, 66190, 66191, 66209, 66246, 66249, 66250, 66251, 66252, 66257, 66271, 66272, 66273, 66274, 66281, 66294, 66299, 66301, 66317, 66319, 66321, 66322, 66326, 66327, 66335, 66336, 66338, 66339, 66340, 66341, 66342, 66343, 66353, 66356, 66357, 66358, 66359, 66360, 66361, 66362, 66364, 66365, 66366, 66378, 66379, 66390, 66392, 66393, 66395, 66396, 66398, 66404, 66406, 66407, 66410, 66414, 66415, 66426, 66429, 66447, 66464, 66466, 66467, 66474, 66475, 66479, 66480, 66484, 66485, 66487, 66489, 66490, 66491, 66492, 66493, 66494, 66499, 66500, 66501, 66503, 66504, 66505, 66513, 66514, 66516, 66517, 66518, 66519, 66520, 66521, 66523, 66525, 66531, 66535, 66538, 66539, 66541, 66544, 66546, 66547, 66548, 66549, 66554, 66555, 66558, 66562, 66564, 66566, 66569, 66598, 66608, 66609, 66622, 66625, 66631, 66655, 66657, 66666, 66688, 66689, 66691, 66693, 66698, 66716, 66733, 66737, 66748, 66771, 66776, 66777, 66828, 66844, 66852, 66868, 66872, 66880, 66882, 66886, 66887, 66888, 66906, 66907, 66910, 66914, 66924, 66927, 66928, 66939, 66940, 66944, 66949, 66950, 66952, 66983, 66991, 66993, 66995, 67025, 67040, 67041, 67050, 67060, 67091, 67095, 67100, 67102, 67103, 67104, 67106, 67115, 67122, 67131, 67134, 67145, 67158, 67229, 67259, 67261, 67262, 67264, 67306, 67317, 67323, 67324, 67325, 67326, 67341, 67352, 67366, 67367, 67369, 67376, 67383, 67396, 67398,

67400, 67401, 67405, 67433, 67439, 67447, 67451, 67453, 67465, 67470, 67474, 67485, 67496, 67509, 67512, 67535, 67540, 67554, 67567, 67568, 67571, 67574, 67581, 67582, 67587, 67588, 67589, 67590, 67591, 67598, 67601, 67603, 67604, 67607, 67654, 67656, 67657, 67658, 67666, 67667, 67669, 67670, 67673, 67681, 67686, 67687, 67688, 67689, 67692, 67701, 67708, 67719, 67721, 67723, 67725, 67726, 67727, 67730, 67733, 67740, 67741, 67747, 67750, 67755, 67758, 67764, 67765, 67770, 67771, 67772, 67773, 67774, 67775, 67776, 67777, 67778, 67779, 67781, 67782, 67783, 67784, 67785, 67786, 67787, 67788, 67789, 67790, 67791, 67792, 67793, 67794, 67795, 67796, 67797, 67798, 67799, 67802, 67803, 67804, 67809, 67842, 67847, 67848, 67851, 67866, 67869, 67870, 67871, 67873, 67874, 67875, 67876, 67878, 67879, 67880, 67881, 67882, 67883, 67884, 67885, 67899, 67901, 67902, 67907, 67909, 67910, 67922, 67929, 67932, 67934, 67935, 67936, 67942, 67944, 67945, 67948, 67952, 67955, 67956, 67958, 67960, 67961, 67968, 67972, 67974, 67975, 67978, 67980, 67985, 67986, 67987, 67989, 67995, 67996, 67997, 68001, 68003, 68007, 68009, 68013, 68015, 68016, 68019, 68020, 68021, 68023, 68025, 68027, 68029, 68030, 68032, 68033, 68036, 68047, 68054, 68057, 68060, 68061, 68062, 68063, 68064, 68066, 68067, 68068, 68071, 68073, 68074, 68077, 68080, 68083, 68093, 68094, 68097, 68099, 68128, 68136, 68147, 68158, 68170, 68179, 68183, 68185, 68187, 68197, 68198, 68202, 68203, 68204, 68208, 68212, 68214, 68215, 68216, 68217, 68218, 68219, 68220, 68221, 68222, 68223, 68224, 68226, 68227, 68228, 68234, 68239, 68240, 68244, 68248, 68253, 68255, 68261, 68263, 68269, 68277, 68282, 68283, 68284, 68287, 68288, 68289, 68320, 68321, 68322, 68324, 68348, 68350, 68363, 68364, 68372, 68373, 68374, 68375, 68376, 68377, 68393, 68396, 68405, 68406, 68411, 68419, 68420, 68421, 68422, 68423, 68430, 68431, 68432, 68433, 68439, 68441, 68442, 68443, 68446, 68459, 68460, 68471, 68480, 68487, 68494, 68501, 68526, 68528, 68533, 68536, 68537, 68538, 68540, 68541, 68542, 68550, 68554, 68570, 68574, 68576, 68577, 68580, 68581, 68583, 68584, 68585, 68586, 68589, 68590, 68591, 68592, 68593, 68594, 68595, 68596, 68609, 68619, 68621, 68644, 68661, 68670, 68684, 68690, 68697, 68698, 68699, 68702, 68703, 68705, 68707, 68708, 68709, 68712, 68714, 68715, 68722, 68724, 68750, 68753, 68754, 68772, 68773, 68774, 68779, 68785, 68789, 68791, 68794, 68795, 68796, 68802, 68805, 68809, 68810, 68817, 68820, 68826, 68827, 68828, 68841, 68843, 68845, 68849, 68861, 68873, 68876, 68881, 68882, 68885, 68886, 68887, 68890, 68893, 68912, 68925, 68927, 68930, 68931, 68932, 68938, 68939, 68940, 68944, 68945, 68953, 68959, 68962, 68965, 68967, 68972, 68975, 68977, 68987, 68988, 68989, 68990, 68995, 68996, 68998, 69001, 69002, 69007, 69012, 69018, 69020, 69022, 69037, 69039, 69047, 69061, 69063, 69074, 69100, 69109, 69110, 69111, 69112, 69113, 69117, 69128, 69132, 69145, 69146, 69147, 69148, 69153, 69155, 69157, 69158, 69166, 69169, 69175, 69177, 69178, 69179, 69180, 69186, 69187, 69205, 69219, 69220, 69221, 69226, 69232, 69233, 69235, 69238, 69239, 69241, 69244, 69248, 69249, 69253, 69254, 69255, 69256, 69257, 69258, 69261, 69264, 69265, 69266, 69267, 69269, 69270, 69273, 69274, 69275, 69286, 69287, 69288, 69289, 69292, 69293, 69301, 69302, 69303, 69311, 69312, 69314, 69323, 69339, 69340, 69346, 69351, 69361, 69372, 69379, 69383, 69384, 69385, 69387, 69388, 69389, 69403, 69408, 69409, 69410, 69411, 69414, 69416, 69418, 69421, 69424, 69429, 69432, 69453, 69454, 69458, 69470, 69475, 69484, 69485, 69497, 69505, 69521, 69551, 69552, 69554, 69562, 69587, 69589, 69596, 69597, 69609, 69612, 69613, 69645, 69646, 69656, 69657, 69661, 69664, 69666, 69667, 69672, 69673, 69675, 69678, 69681, 69688, 69695, 69697, 69700, 69703, 69704, 69705, 69706, 69708, 69710, 69713, 69714, 69716, 69718, 69722, 69723, 69725, 69742, 69743, 69744, 69748, 69756, 69757, 69760, 69771, 69775, 69776, 69777, 69778, 69779, 69781, 69796, 69806, 69824, 69832, 69833, 69835, 69854, 69864, 69866, 69867, 69876, 69877, 69879, 69880, 69883, 69911, 69916, 69918, 69926, 69928, 69929, 69934, 69935, 69945, 69946, 69949, 69952, 69953, 69954, 69956, 69957, 69974, 69984, 69986, 69987, 69990, 69991, 69992, 69999, 70007, 70023, 70026, 70032, 70035, 70042, 70044, 70054, 70055, 70063, 70074, 70076, 70083, 70084, 70090, 70092, 70095, 70102, 70108,

70109, 70116, 70117, 70123, 70135, 70138, 70140, 70142, 70151, 70157, 70158, 70159, 70160, 70161, 70162, 70164, 70166, 70168, 70170, 70171, 70182, 70189, 70196, 70197, 70198, 70200, 70201, 70203, 70205, 70206, 70207, 70208, 70209, 70210, 70213, 70216, 70221, 70226, 70238, 70239, 70244, 70245, 70247, 70249, 70250, 70253, 70256, 70258, 70259, 70280 (Total Student Count:998)

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

49098, 49619, 49627, 49805, 50111, 50278, 50279, 51283, 51288, 51290, 51291, 51294, 51296, 51297, 51299, 51305, 51306, 51415, 51417, 51419, 51421, 51422, 51423, 51424, 51425, 51427, 51428, 51429, 51431, 51432, 51434, 52047, 52049, 52054, 52055, 52056, 52057, 52058, 52085, 52089, 52114, 52781, 53143, 53983, 54057, 54065, 54371, 54642, 54982, 55321, 55378, 55521, 55663, 55902, 56201, 56555, 56599, 56896, 57014, 57087, 57216, 57250, 57267, 57291, 57313, 57326, 57327, 57332, 57333, 57334, 57336, 57337, 57339, 57344, 57347, 57405, 57437, 57452, 57520, 57521, 57617, 57640, 57641, 57644, 57648, 57651, 57653, 57659, 57661, 57662, 57700, 57723, 57724, 57729, 57731, 57732, 57733, 57759, 57774, 57793, 57827, 57833, 57843, 57979, 57980, 58103, 58108, 58109, 58292, 58294, 58392, 58397, 58630, 58631, 58662, 58666, 58668, 58673, 58681, 58682, 58684, 58721, 58722, 58754, 58763, 58768, 58775, 58777, 58783, 58839, 58895, 58896, 59093, 59112, 59113, 59114, 59121, 59135, 59396, 59398, 59421, 59483, 59490, 59588, 59624, 59654, 59669, 59670, 59691, 59695, 59727, 59857, 59880, 59887, 59889, 59893, 59944, 59979, 60005, 60013, 60019, 60029, 60061, 60063, 60065, 60105, 60186, 60234, 60271, 60297, 60315, 60332, 60335, 60806, 60822, 60886, 60897, 60906, 60974, 61009, 61084, 61087, 61096, 61108, 61147, 61173, 61182, 61327, 61330, 61386, 61391, 61410, 61424, 61505, 61529, 61555, 61556, 61557, 61565, 61567, 61569, 61587, 61588, 61593, 61595, 61598, 61601, 61614, 61622, 61641, 61736, 61749, 61753, 61769, 61826, 61827, 61837, 61851, 61864, 61870, 61885, 61927, 61929, 61932, 61934, 61967, 61987, 61994, 61996, 62017, 62019, 62022, 62027, 62099, 62131, 62139, 62174, 62186, 62193, 62233, 62235, 62238, 62239, 62260, 62263, 62265, 62266, 62271, 62272, 62274, 62277, 62281, 62286, 62290, 62309, 62388, 62397, 62398, 62401, 62406, 62419, 62434, 62435, 62448, 62452, 62453, 62504, 62513, 62523, 62524, 62525, 62526, 62527, 62543, 62660, 62727, 62863, 62887, 62900, 62951, 62973, 62989, 63006, 63012, 63034, 63042, 63046, 63068, 63083, 63090, 63115, 63162, 63171, 63180, 63182, 63189, 63212, 63213, 63216, 63254, 63266, 63443, 63447, 63448, 63452, 63453, 63454, 63455, 63458, 63460, 63462, 63686, 63687, 63702, 63758, 63764, 63765, 63766, 63784, 63816, 63830, 63920, 63926, 63945, 63950, 64007, 64022, 64036, 64132, 64312, 64322, 64447, 64449, 64450, 64504, 64576, 64594, 64595, 64615, 64662, 64664, 64665, 64687, 64689, 64700, 64701, 64712, 64713, 64729, 64734, 64735, 64752, 64844, 64856, 64932, 64936, 64950, 65004, 65006, 65038, 65040, 65043, 65046, 65086, 65091, 65150, 65205, 65243, 65267, 65292, 65335, 65338, 65340, 65372, 65383, 65422, 65424, 65430, 65431, 65432, 65438, 65442, 65444, 65454, 65455, 65457, 65461, 65467, 65476, 65479, 65480, 65556, 65579, 65623, 65655, 65739, 65782, 65825, 65826, 65830, 65853, 65856, 65895, 65899, 65914, 65931, 65935, 65951, 65960, 65973, 65977, 65998, 66031, 66068, 66069, 66072, 66091, 66095, 66116, 66328, 66381, 66383, 66384, 66389, 66401, 66411, 66448, 66449, 66458, 66460, 66497, 66498, 66511, 66512, 66528, 66550, 66580, 66629, 66632, 66672, 66677, 66786, 66829, 66830, 66831, 66832, 66835, 66845, 66901, 66903, 66954, 66956, 67005, 67012, 67068, 67070, 67152, 67160, 67162, 67164, 67165, 67175, 67232, 67263, 67267, 67279, 67314, 67329, 67330, 67354, 67368, 67408, 67409, 67417, 67420, 67452, 67475, 67476, 67477, 67478, 67497, 67580, 67612, 67621, 67623, 67627, 67671, 67761, 67814, 67829, 67913, 67914, 67919, 68010, 68042, 68044, 68084, 68085, 68086, 68087, 68088, 68146, 68148, 68171, 68190, 68229, 68230, 68231, 68278, 68281, 68345, 68349, 68371, 68407, 68424, 68425, 68481, 68482, 68498, 68508, 68517, 68647, 68648, 68672, 68678, 68737, 68741, 68787, 68790, 68797, 68800, 68862, 68895, 68900, 68907, 69066, 69086, 69119, 69208, 69209,

69211, 69252, 69268, 69283, 69304, 69433, 69435, 69438, 69439, 69441, 69582, 69583, 69585, 69593, 69595, 69616, 69671, 69715, 69746, 69766, 69780, 69786, 69798, 69836, 69843, 69846, 69865, 69870, 69885, 69886, 69902, 69909, 69919, 70009, 70056, 70086, 70089, 70107, 70124, 70125, 70183, 70190, 70211, 70220, 70274, 70275 (Total Student Count:586)

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

49803, 49804, 49814, 49825, 49866, 50207, 50263, 50282, 50283, 50285, 50899, 50901, 50904, 51111, 51227, 51228, 51894, 52007, 52132, 52626, 52789, 52888, 53150, 54027, 54544, 54546, 55524, 55664, 55785, 55791, 56237, 56304, 56485, 56626, 56993, 56994, 56995, 57008, 57018, 57034, 57092, 57094, 57112, 57113, 57124, 57215, 57236, 57293, 57319, 57341, 57490, 57664, 57668, 57669, 57670, 57713, 57734, 57814, 57818, 57860, 57863, 57875, 58096, 58160, 58288, 58435, 58436, 58437, 58438, 58440, 58446, 58447, 58448, 58449, 58450, 58452, 58454, 58455, 58456, 58458, 58501, 58546, 58549, 58553, 58555, 58578, 58579, 58580, 58588, 58591, 58606, 58616, 58636, 58638, 58641, 58642, 58671, 58686, 58689, 58693, 58695, 58700, 58701, 58704, 58706, 58707, 58710, 58711, 58714, 58726, 58727, 58732, 58765, 58766, 58769, 58771, 58772, 58779, 58780, 58781, 58792, 58794, 58799, 58800, 58823, 58826, 58901, 58902, 58904, 59124, 59362, 59422, 59423, 59425, 59428, 59449, 59451, 59460, 59479, 59566, 59570, 59578, 59630, 59638, 59690, 59736, 60066, 60094, 60146, 60195, 60318, 60350, 60361, 60423, 60530, 60534, 60558, 60814, 60825, 60833, 60908, 61027, 61098, 61151, 61244, 61348, 61376, 61377, 61393, 61395, 61409, 61491, 61492, 61495, 61504, 61522, 61523, 61528, 61530, 61531, 61532, 61537, 61609, 61611, 61612, 61615, 61616, 61645, 61726, 61766, 61824, 61829, 61856, 61865, 61869, 61871, 61921, 61923, 61942, 61946, 61947, 62029, 62074, 62127, 62152, 62297, 62299, 62414, 62457, 62509, 62517, 62518, 62587, 62603, 62650, 62656, 62658, 62746, 62841, 62842, 62864, 62866, 62867, 63017, 63059, 63069, 63071, 63072, 63108, 63347, 63348, 63358, 63359, 63360, 63361, 63492, 63663, 63769, 63772, 63773, 63783, 63819, 63820, 63877, 64049, 64050, 64063, 64064, 64084, 64088, 64128, 64133, 64350, 64353, 64362, 64375, 64376, 64436, 64456, 64458, 64465, 64467, 64468, 64470, 64471, 64473, 64474, 64476, 64491, 64509, 64510, 64513, 64514, 64515, 64517, 64518, 64596, 64625, 64647, 64772, 64784, 64830, 64876, 64878, 64914, 64917, 64949, 64957, 64960, 64974, 65047, 65055, 65154, 65157, 65197, 65275, 65296, 65345, 65350, 65353, 65355, 65357, 65360, 65399, 65426, 65428, 65429, 65447, 65544, 65546, 65638, 65698, 65710, 65794, 65799, 65835, 65889, 65897, 65969, 66029, 66035, 66070, 66076, 66110, 66150, 66156, 66158, 66228, 66412, 66413, 66551, 66794, 66814, 66841, 66847, 67007, 67069, 67282, 67335, 67347, 67351, 67375, 67377, 67410, 67412, 67422, 67473, 67479, 67480, 67481, 67482, 67491, 67493, 67501, 67510, 67628, 67660, 67731, 67815, 67886, 67915, 68031, 68046, 68164, 68193, 68232, 68233, 68235, 68236, 68237, 68241, 68259, 68279, 68354, 68358, 68360, 68370, 68378, 68400, 68427, 68447, 68624, 68659, 68660, 68700, 68727, 68770, 68806, 68852, 69005, 69069, 69070, 69071, 69073, 69108, 69129, 69168, 69183, 69184, 69185, 69284, 69285, 69359, 69443, 69444, 69445, 69511, 69516, 69522, 69537, 69540, 69576, 69577, 69600, 69604, 69615, 69711, 69988, 69997, 70031, 70034, 70122, 70177, 70212, 70219, 70243, 70276 (Total Student Count:427)

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

49823, 49824, 52675, 53986, 53993, 53998, 54128, 54550, 54552, 54960, 54961, 55495, 56067, 57028, 57036, 57097, 57129, 57505, 57506, 57557, 57558, 57559, 57666, 57679, 57682, 57710, 57736, 57739, 57808, 57846, 57984, 58175, 58177, 58377, 58401, 58439, 58465, 58486, 58554, 58556, 58557, 58558, 58559, 58560, 58562, 58571, 58572, 58573, 58575, 58593, 58594, 58599, 58600, 58601, 58643, 58644, 58645, 58647, 58968, 58969, 58970, 58973, 59079, 59166, 59702, 59708, 59715, 59836, 59896, 59989, 60077, 60106, 60339, 60365, 60367, 60450, 60453, 60892, 60893, 60894, 60895, 60957, 61041, 61415,

61417, 61419, 61428, 61538, 61574, 61648, 61830, 61943, 61944, 61954, 61976, 61977, 61978, 62030, 62057, 62077, 62154, 62158, 62159, 62163, 62173, 62180, 62218, 62412, 62439, 62604, 62757, 62849, 62850, 62906, 62908, 62935, 62937, 62977, 62978, 62979, 63032, 63073, 63074, 63075, 63256, 63501, 63514, 63629, 63659, 63660, 63792, 63833, 64082, 64284, 64484, 64590, 64597, 64650, 64755, 64758, 64956, 64979, 64982, 65073, 65252, 65285, 65531, 65539, 65596, 65644, 65771, 65887, 65907, 65970, 66000, 66022, 66036, 66037, 66111, 66118, 66119, 66120, 66121, 66135, 66140, 66180, 66196, 66232, 66345, 66347, 66633, 66683, 66684, 66765, 66967, 67009, 67074, 67309, 67359, 67360, 67378, 67413, 67415, 67456, 67624, 67661, 67816, 67860, 67887, 67888, 67889, 67890, 67917, 68049, 68050, 68051, 68238, 68285, 68337, 68338, 68369, 68408, 68495, 68663, 68666, 68701, 68824, 68853, 68902, 69098, 69122, 69144, 69295, 69370, 69450, 69526, 69529, 69544, 69712, 70094, 70202, 70242, 70252, 70281 (Total Student Count:224)

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

49826, 50268, 50269, 50579, 51033, 52133, 52179, 52593, 52594, 52595, 52597, 52598, 52629, 53127, 53967, 54001, 54534, 54553, 54554, 54555, 55330, 55364, 55367, 55368, 55369, 55671, 55680, 55682, 55932, 56594, 56598, 56977, 57127, 57130, 57222, 57356, 57500, 57501, 57503, 57740, 57847, 57892, 58092, 58296, 58402, 58404, 58441, 58466, 58490, 58718, 58975, 58978, 58982, 58984, 59024, 59326, 59585, 59627, 59739, 59747, 59764, 59941, 60372, 60406, 60458, 60575, 60799, 60813, 60910, 61047, 61431, 61432, 61540, 61720, 61842, 62031, 62032, 62416, 62417, 62418, 62420, 62421, 62423, 62425, 62427, 62578, 62608, 62610, 62611, 62697, 62754, 62769, 62851, 62852, 62936, 62996, 63076, 63077, 63078, 63079, 63080, 63081, 63082, 63085, 63406, 63407, 63408, 63516, 63517, 63794, 63838, 64189, 64374, 64442, 64485, 64498, 64541, 64606, 64654, 64766, 64767, 64928, 64962, 64981, 64984, 64986, 64988, 64990, 65016, 65021, 65022, 65246, 65398, 65583, 65603, 65709, 65740, 65871, 65893, 65972, 66122, 66187, 66583, 66585, 66719, 66821, 66825, 67173, 67336, 67337, 67338, 67361, 67495, 67625, 67677, 67679, 68245, 68340, 68382, 68391, 68565, 68775, 68799, 68830, 68855, 68858, 68865, 68968, 69015, 69115, 69170, 69182, 69461, 69888, 69960, 69983, 70093, 70097, 70222, 70277, 70282 (Total Student Count: 181)

जैन धर्म विशारद (छठी)

49831, 53071, 53128, 53973, 54201, 57261, 57262, 57296, 57297, 57298, 57384, 57385, 57562, 57676, 57812, 57902, 57989, 58098, 58374, 58383, 58389, 58405, 58407, 58467, 58468, 58469, 58470, 58495, 58624, 58717, 58773, 58962, 59064, 59594, 59754, 59757, 59945, 60115, 60116, 60295, 60376, 60409, 60696, 60699, 60700, 60961, 61353, 61435, 61437, 61541, 61610, 61729, 61873, 61918, 61961, 61962, 61963, 62442, 62486, 62678, 62679, 62700, 62701, 62706, 62719, 62783, 62787, 62789, 62915, 62930, 63503, 63504, 63505, 63506, 63507, 63837, 63854, 63875, 64194, 64388, 64445, 64539, 64963, 64993, 65262, 65554, 65610, 65726, 66020, 66253, 66254, 66416, 66552, 66808, 67285, 67300, 67301, 67339, 67340, 67362, 67379, 67459, 67665, 68397, 68544, 68563, 68803, 68863, 68919, 68920, 69097, 69114, 69230, 69462, 69465, 69701, 69721, 70278, 70279 (Total Student Count: 119)

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

53131, 53798, 53802, 54048, 55685, 56777, 57133, 57263, 57299, 57697, 57699, 57757, 57778, 58380, 59139, 59445, 59768, 60036, 60298, 60377, 60535, 60962, 61993, 62069, 62250, 62825, 62873, 62938, 63093, 63261, 64140, 64141, 64202, 64289, 64395, 64405, 64542, 64546, 64548, 64550, 64656, 64760, 64930, 65337, 65541, 65560, 65562, 65632, 65937, 66081, 66545, 67075, 67147, 67319, 67320, 67416, 67462, 67859, 68318, 68626, 68921, 69094, 69201, 69466, 69468, 69469, 69559, 69578, 69899, 70008, 70010, 70040 (Total Student Count: 72)

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

52186, 54130, 55877, 57742, 57848, 57935, 58100, 58339, 59374, 59888, 60382, 61439, 61797, 61823, 61861, 61986, 62429, 62460, 63025, 64478, 64551, 64553, 64554, 64556, 64557, 64657, 64763, 64785, 64799, 64801, 65558, 65559, 65892, 66349, 66387, 66849, 67645, 68052, 68346, 69150, 69982, 70052, 70067 (Total Student Count:43)

परिणाम रोका गया

57264, 60139, 60140, 60143, 61329, 61333, 63248, 64738, 64739, 65734, 66001, 67872, 67877, 70072, 57537, 57538, 58159, 58680, 61079, 60773, 64649, 68242, 58453, 58552, 65898, 56849, 61840, 64973 (Total Student Count:28)

परीक्षा निरस्त की गई

Centre Code : 600 (यवतमाल), 626 (सावनेर)

आवेदक	केन्द्र	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
7318	243	4341	2650	61.04%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 14 तक की आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें–

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-0291-2630490

www.jainratnaboard.com, Email: info@jainratnaboard.com

10 जनवरी 2010 की परीक्षा का परिणाम (Result) देखने एवं 1 अगस्त 2010 की परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए बोर्ड की वेबसाइट www.jainratnaboard.com का उपयोग कर सकते हैं।

सुशीला बोहरा	राजेश कर्णावट	धर्मचन्द जैन
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार
9414133879	9414128925	9351589694

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की अस्थायी वरीयता सूची

(10 जनवरी 2010 परीक्षा)

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 10 जनवरी 2010 को आयोजित कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षा की अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है।

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
67433	मनी जैन	जम्मू	99	प्रथम
68940	शीतल पारख	गोविन्द नगर (नासिक)	98.5	द्वितीय
69037	मुमुक्षु अक्षिता जैन	दिल्ली	98	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

59121	हेमा कटारिया	ऊटी	99.25	प्रथम
66829	अंतिमा भंसाली	चेन्नई	97.5	द्वितीय
66832	पूजा बरमेचा	चेन्नई	96.5	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

58588	सलोनी जैन	जम्मू	99.75	प्रथम
58780	राखी सांखला	देवलगांव मही	99.5	द्वितीय
61609	चन्द्रा कानूंगा	सिवाना	99.5	द्वितीय
67479	शमा बोथरा	चाकण (पूना)	99	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

54960	खुशबू बागरेचा	हुबली	98	प्रथम
58594	रेणुका जैन	जम्मू	97.5	द्वितीय
58593	सरिता जैन	जम्मू	97	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

65972	शिल्पा बागरेचा	बैंगलोर	96.5	प्रथम
64485	अक्षय जैन	महावीर नगर (स.मा.)	95	द्वितीय
52594	प्रभा मारू	बारां	94	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

63503	मंजुला सोलंकी	पुणे	99	प्रथम
62701	सारिका बच्छावत	कोलकाता	98	द्वितीय
69097	मीनाक्षी मेहता	मदनगंज	97	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

53131	प्रीति बद्धानी	सदर, नागपुर	97.5	प्रथम

64548	शोभा चोरडिया	जालना	96.5	द्वितीय
69094	धनवन्ती राखेचा	ऊटी	96	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

68052	कन्हैयालाल जैन	भीलवाड़ा	96.5	प्रथम
64557	शोभा जैन	जालना	95	द्वितीय
64556	भारती श्रीश्रीमाल	जालना	94	तृतीय

सुशीला बोहरा — संयोजक
राजेश कर्नावट — सचिव
धर्मचन्द जैन — रजिस्ट्रार

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान : जयपुर
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : विरदराज सुराणा
4. प्रकाशक का नाम : विरदराज सुराणा
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
   दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार
   जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम : डॉ. धर्मचन्द जैन
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी
   हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
   दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार
   जयपुर-302003 (राज.)

मैं विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2010

हस्ताक्षर-विरदराज सुराणा
प्रकाशक

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 मार्च, 2010)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	: सीमान्त क्षेत्र बाड़मेर में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	: धर्मनगरी पाली में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 10	: सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: लाखन कोटड़ी, अजमेर विराज रहे हैं। अजमेर के उपनगरों में विचरण की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	: विदर्भ क्षेत्र में धर्म-प्रभावना करते हुए मध्यप्रदेश में प्रवेश कर पीपरवानी, सीबरोह, पिरोडी, कटंगी होते हुए बालाघाट की ओर विहार चल रहा है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	: औद्योगिक नगरी सूरत के विभिन्न उपनगरों में धर्मप्रभावना कर रहे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	: सवाईमाधोपुर के विभिन्न क्षेत्र फरसते हुए गंगापुर सिटी पधारे। पल्लीवाल क्षेत्रों को फरसना संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	: क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ विराजित हैं।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	: पाली-मारवाड़ में सुख शांतिपूर्वक विराजित हैं।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	: मेड़ता सिटी में धर्म-प्रभावना कर रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	**अरसीकेरा से दोड्डबालापुर पधारे हैं। बैंगलोर की ओर विहार संभावित है।**
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	**नागौर से पांचला सिद्धा पधारे हैं।**
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	**गोटन में विराजित हैं।**
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	**यवतमाल से नेर पधारे हैं।**

आचार्यप्रवर के विराजने से बाड़मेर में अध्यात्म-चेतना का अभूतपूर्व उत्साह

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 एक दशक पश्चात् वीरभूमि राजस्थान को सिंचित करने पधारे हैं। पाली-जोधपुर, बाड़मेर-बालोतरा जैसे क्षेत्रों ने समय-समय पर गुरुचरण-सरोजों में अपनी-अपनी भावपूर्ण विनती तो रखी ही, गुरु सेवा के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए क्षेत्र फरसने की पुरजोर प्रार्थना सेवा में रखी। पालनपुर से परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के चिन्तन में परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा जी के स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में पाली-जोधपुर की ओर बढ़ने का मानस बन रहा था कि बालोतरा के जागीरदार परिवार ने अपनी कुलदीपिका सुश्री ट्विंकल एवं सुश्री वर्षा सालेचा की भागवती दीक्षा बालोतरा में करवाने की भावना रखी। फिर बाड़मेर-बालोतरा सहित सिवांची पट्टी के क्षेत्र फरसने की विनती के चलते परमपूज्य आचार्यप्रवर ने जालोर- बाड़मेर की ओर बढ़ने का संकेत किया तभी से थार नगरी बाड़मेर के मूल सुज्ञ श्रावकों के साथ ही बाड़मेर के वे सुज्ञ श्रावक जो राजस्थान से बाहर रहते हैं, सत्संग-सेवा और संत-समागम के सुयोग से लाभ उठाने की भावना से गुरुचरण सेवा में समुपस्थित होने लगे। सिवांची पट्टी के ग्रामों के भक्तजन गुरुचरण सेवा में पहुँच अपनी भावपूर्ण विनती के साथ कल्पते काल तक विराजने की प्रार्थना कर रहे हैं। आचार्यश्री के बाड़मेर में मंगल-प्रवेश के शुभावसर पर जिला कलेक्टर श्री रवि जी जैन, श्री राजेन्द्र जी कुम्भट सहायक कमिश्नर कस्टम,

श्री राजेन्द्रकुमार जी मुणोत आयकर अधिकारी आदि गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर भक्ति-भावना प्रदर्शित की। सांचौर में श्री माणकचन्द जी अन्याव-अहमदाबाद, श्री पुखराज जी बोकडिया-सांचौर एवं श्री मिलमल जी बोथरा सांचौर ने आचार्यश्री के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए थे। बाड़मेर में भी श्री केवलचन्द जी गोलेच्छा, श्री लूणकरण जी गोलेच्छा, पद्मश्री श्री मगराज जी जैन, श्री मानमल जी मांडोत, श्री मोहनलाल जी कुंकु चौपड़ा ने सदार शीलव्रत के खंद किए हैं।

आचार्यप्रवर के बाड़मेर विराजने से आबाल-वृद्धजन ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप के साथ साधना-आराधना में सन्नद्ध हैं। आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव के कारण व्रत-नियम अंगीकृत करने की भावना भी श्रावक-श्राविकाओं में उत्तरोत्तर बढ़ रही है। दूरस्थ क्षेत्रों के श्रद्धालु भी दर्शन-वन्दन और सेवा-भक्ति की भावना से गुरुचरण सेवा में निरन्तर पहुँच रहे हैं। नागौर मूल के सुश्रावक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, जलगाँव विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, पीपाड़ संघाध्यक्ष श्री हस्तीमल जी बोहरा, सवाईमाधोपुर संघमंत्री श्री बाबूलाल जी जैन, जोधपुर से संघ संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, श्री रावलचन्द जी चौपड़ा, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री कनकराज जी कुम्भट सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं संघसेवी श्रावकों ने बाड़मेर पहुँचकर दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

फाल्गुनी चौमासी के होने से विभिन्न क्षेत्रों में रत्नसंघ के पूज्य चारित्रात्माओं के आगामी चातुर्मास की भावना श्रीसंघों के साथ गुरुभ्राताओं की बनी हुई है एतदर्थ आचार्य श्री की सन्निधि में विनतियाँ रखी जा रही हैं। जोधपुर, पाली-मारवाड़, नागौर, भोपालगढ़, पीपाड़ शहर, गोटन जैसे अनेकानेक ग्राम-नगरों के साथ-साथ पल्लीवाल-पोरवाल जैसे क्षेत्रों की भी विनति बराबर चल रही है। बाड़मेर वासी महावीर जयन्ती तक विराजने का आचार्यप्रवर से बार-बार आग्रह-अनुरोध कर रहे हैं, वहीं जिले के अन्यान्य ग्राम-नगर भी घर आई गंगा से लाभ उठाने की भावना से अपने-अपने क्षेत्र की भावपूर्ण विनती गुरुचरणों में रख रहे हैं।

बाड़मेर श्रीसंघ आगत स्वधर्मी भाई-बहिनों की आतिथ्य-सेवा में पलक-पांवड़े बिछाये हुए हैं। गोलेच्छा, लुणिया, बांठिया, चौपड़ा परिवारों के साथ सभी

जन चतुर्विध संघ-सेवा में सन्नद्ध हैं।

सम्पर्क सूत्र-(1) श्री दिनेश जी लुणिया-अध्यक्ष, लुणिया ट्रांसपोर्ट कम्पनी, राठी धर्मशाला के पीछे, बाड़मेर (राज.) 344001, फोन-02982-230301, 9829792201 (2) श्री जितेन्द्र जी बांठिया-मंत्री, मैसर्स विमलकुमार महेन्द्रकुमार, लक्ष्मी बाजार, बाड़मेर (राज.), फोन- 9929760675

उपाध्यायप्रवर के पाली पदार्पण से बना धर्म-ध्यान का सुरम्य वातावरण

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पाली स्थित सुराणा मार्केट के सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराजने से पालीवासियों को दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा का निरन्तर लाभ मिल रहा है। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नोत्तर, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ दया-संवर, उपवास-पौषध, आयंबिल-एकासन एवं आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के कारण त्याग-तप के प्रतिदिन प्रत्याख्यान हो रहे हैं। एक ओर जहाँ उपाध्यायप्रवर की मृदु एवं सौम्य वाणी से लोग शीतलता का अनुभव कर रहे हैं, वही मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी के प्रभावी प्रवचनों से मधुरता एवं प्रभावी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

व्रत-नियमों की श्रद्धा समर्पित करने में जहाँ पाली मूल के भक्त सन्नद्ध हैं, वही समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघ व श्रद्धालु भी उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से प्रत्याख्यान अंगीकार करने में पीछे नहीं हैं। पाली श्रीसंघ की सेवा-भक्ति अनुकरणीय है साथ ही आगत श्रीसंघों का आतिथ्य-सत्कार का सुन्दर रूप भी अनुमोदनीय है। पाली श्रीसंघ उपाध्यायप्रवर से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होने तक विराजने की पुनः पुनः प्रार्थना करता आ रहा है।

सम्पर्क सूत्र- श्री रूपकुमार जी चौपड़ा, पाली-09414122304, श्री ताराचन्द जी सिंघवी, पाली-02932-250021

'कर्म-सिद्धान्त वारिधि' प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में तत्त्वज्ञान एवं कर्म-सिद्धान्त में विशेष रुचि रखने वाले महानुभावों के लिए कर्म-सिद्धान्त वारिधि नामक द्विवर्षीय

पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। कर्म सिद्धान्त वारिधि पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अध्ययन हेतु पंचदिवसीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 8 फरवरी से 12 फरवरी 2010 तक सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में आयोजित किया गया। इस शिविर में चेन्नई, मुम्बई, जयपुर, दुर्ग, पीपाड़, सवाईमाधोपुर, अहमदनगर, जोधपुर आदि के 16 महानुभावों ने कर्म सिद्धान्त सम्बन्धी अध्ययन किया। अध्यापन कार्य में डॉ. सुषमा जी सिंघवी-उदयपुर, प्रोफेसर धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगाँव, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर एवं श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन-जयपुर का विशेष योगदान रहा।

शिविर में साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि साध्वीमण्डल का भी पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक श्री पदमचन्द जी मुणोत, शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा एवं वीतराग ध्यान केन्द्र की संयोजक श्रीमती शान्ता जी मोदी ने भी भाग लिया। शिविर में कर्मग्रन्थ भाग 1, 2, 3 व 4, द्रव्यानुयोग का कर्म अध्ययन तथा तत्त्वार्थसूत्र की सर्वार्थसिद्धि टीका पर आधारित अध्याय 6 व 8 का अध्ययन करवाया गया।

-सुशीला बोहरा, संयोजक

निबंध प्रतियोगिताओं हेतु प्रविष्टियों की अन्तिम तिथि 28 मार्च की गई

जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष में स्थानीय समिति एवं करुणा क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में **'मानवीय आहार-शाकाहार'** पर निबंध प्रतियोगिता का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन किया गया है। इस निबंध प्रतियोगिता में सभी आयु जाति-वर्ग के लोग भाग ले सकते हैं। निबन्ध की सीमा 2500 शब्द रहेगी। निबंध हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में मौलिक व प्रामाणिक होना चाहिए। इसी प्रकार श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित **'भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध'** निबन्ध प्रतियोगिता हेतु भी प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। इसकी शब्द सीमा 2000 शब्द है। निबंध भेजने की अंतिम तिथि 28 मार्च, 2010 कर दी गई है। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार- 3000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-1500 रुपये, तृतीय पुरस्कार 1000 रुपये एवं 10 सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक 500 रुपये प्रदान किये जायेंगे। 'मानवीय आहार शाकाहार' विषय पर निबंध भेजने का पता- *श्री*

जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (आ.प्र.) पी. शांतिलाल गुन्देचा, 2-2-1075/20/A/7, तिलक नगर X Road, हैदराबाद-500013 (आ.प्र.), फोन: 9247199931, 93911-00974 । 'भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध' विषय पर निबंध भेजने का पता- *श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (आ.प्र.) मोनिका देशलहरा, प्लॉट न. 20, कार्तिक इन्कलिव, डाइमंड पाइंट के पास, सिखविलेज- सिकन्द्राबाद-09 (आ.प्र.), फोन : 093945-88300, 09440576314*

-श्रीपाल देशलहरा

हैदराबाद में 'नारी : धर्म की धुरी' विषयक संगोष्ठी आयोजित

आचार्य हस्ती जंन्म-शताब्दी समिति (आ.प्र.) के द्वारा 21 फरवरी 2010 को राजस्थानी स्थानक संघ भवन में ''आचार्य हस्ती का कथनः नारी धर्म की धुरी'' विषय पर **चेन्नई के डॉ. अशोक कवाड़** ने संगोष्ठी में कहा कि संस्कारवान नागरिकों का निर्माण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह कार्य धर्मपरायण बहिनें और माताएँ बखूबी कर सकती हैं। उन्होंने पारिवारिक सुख-शांति के लिए सामूहिक प्रार्थना का महत्त्व प्रतिपादित किया तथा गर्भावस्था के समय धर्म-साधना और पवित्र विचारों की प्रेरणा की।

पत्रकार रामसिंह जी 'उदय' ने कहा कि नारी अहिंसा, करुणा, शांति एवं क्षमा की प्रतीक है तथा नारी-सुलभ सद्गुणों से संसार को बचाया जा सकता है। **उदयपुर के साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग** ने अपने वक्तव्य में कहा कि नारी ममता, समता और क्षमता की त्रिवेणी होती है। ममता से वह नई पीढ़ी का निर्माण करती है, समता से समाज व परिवार में एकता की स्थापना करती है तथा क्षमता से संकटों में भी अडिग रहती है। नारी के ये तीन गुण सबको जीने की राह दिखाते हैं। डॉ. धींग ने एक राजस्थानी गीत भी सुनाया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शताब्दी समिति के कार्याध्यक्ष सुरेन्द्र लुणिया ने स्वागत भाषण दिया। कल्पना सुराणा ने मंगलाचरण किया और नारी गौरव पर गीत प्रस्तुत किया। अलका चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

संगोष्ठी में केन्द्रीय समिति की ओर से डॉ. अशोक कवाड़ द्वारा 'मानवीय आहार शाकाहार' पोस्टर का लोकार्पण किया। संगोष्ठी के पश्चात् समिति की बैठक में डॉ. अशोक कवाड़ ने केन्द्रीय स्तर पर शताब्दी वर्ष पर हो रहे

कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। *-श्रीपाल देशलहरा, क्षेत्रीय प्रधान*

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर

जयपुर- सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए संस्थान विगत 36 वर्षों से कार्यरत है। इस वर्ष भी 10वीं अथवा 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सत्र 2010-2011 में प्रवेश दिया जायेगा। यह संस्थान संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन कराने के साथ विद्यालयीय, महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय अध्ययन में नियमित प्रवेश के साथ छात्रों के व्यावहारिक अध्ययन पर भी पूरा ध्यान देता है। यहाँ से निकले अनेक प्रतिभासम्पन्न छात्र अच्छे स्थानों एवं पदों पर कार्य कर रहे हैं। प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, फोन नं., धार्मिक योग्यता एवं पूर्व के दो वर्षों की अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ संलग्न कर आवेदन-पत्र प्रेषित करें। *-विजय मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302020, मो. 9462322197*

श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ की 30वीं वर्षगांठ पर पुरस्कार वितरण एवं अभिनन्दन समारोह

बैंगलोर- आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ की 30वीं वर्षगांठ पर 24 जनवरी 2010 को पुरस्कार वितरण एवं स्वाध्यायी अभिनन्दन-समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्यअतिथि थे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि परमाराध्य गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की मंगल-प्रेरणा से तीन दशक पूर्व इस असाम्प्रदायिक स्वाध्याय संघ की स्थापना हुई थी। आज यह स्वाध्याय संघ बहुआयामी एवं बहुउद्देशीय एक विशाल वटवृक्ष बन गया है। संघ के माध्यम से सैकड़ों सक्रिय स्वाध्यायी तैयार हुए हैं। यह हर्ष का विषय है कि 15 से 25 वर्ष के अनेक किशोर युवा भाई-बहिन स्वाध्यायी बनकर सेवा देने जाते हैं। बोर्ड की

धार्मिक परीक्षाओं में छोटे-छोटे बालक-बालिकाएँ भी भाग लेते हैं तथा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हैं। श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल जिनका त्याग-तप, स्वाध्यायमय जीवन बोलता है, पूज्य आचार्य श्री द्वारा 30 वर्ष पूर्व प्रदत्त जिम्मेदारी को अब तक बखूबी निभा रहे हैं। इस संघ के माध्यम से अन्य गतिविधियों में (1) मासिक एवं पत्राचार योजना चलती है, जिसमें गत वर्ष 1552 सदस्यों ने ज्ञानार्जन किया। (2) स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड से इस वर्ष 1294 विद्यार्थियों ने ज्ञानार्जन किया। (3) बाल संस्कार योजना में सैकड़ों बालक-बालिकाओं ने धार्मिक शिविरों में भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। (4) संघ की ओर से सदस्यों के लिए स्वाध्याय-सुमन मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। समारोह में अच्छी उपस्थिति थी।

आचार्यश्री नानेश स्मृति समता पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

आचार्य श्री नानेश स्मृति समता पुरस्कार श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा दो वर्ष में दिया जाता है। यह पुरस्कार आचरण आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समतादर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो जाता है वही व्यक्ति इस पुरस्कार का अधिकारी होता है। पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल आदि प्रदान किये जाते हैं। पुरस्कार आवेदन की अंतिम तिथि 15 अप्रेल 2010 है। आवेदन-पत्र नियमावली सहित प्राप्त करने के लिए सम्पर्क सूत्र- *श्री शांतिलाल सांड, संयोजक-श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005 (राज.), फोन नं. 0151-2544867, 3292177*

संक्षिप्त समाचार

अरसीकेरे- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में दिनांक 31 जनवरी 2010 को अरसीकेरे में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 80 शिविरार्थियों ने भाग लिया। युवक-युवतियों ने सामूहिक रूप से अरसीकेरे के 40 किमी. की परिधि में विहार सेवा देने का संकल्प किया और सप्ताह में सामूहिक सामायिक करने का भी संकल्प लिया। अरसीकेरे में महासती मण्डल के राग-द्वेष नहीं रखने सम्बन्धित प्रवचन से प्रभावित होकर

स्थानीय श्रीसंघ ने 6 फरवरी को बैठक बुलाकर लम्बे समय से चल रहे परस्पर मतभेद को मिटाकर मधुर सम्बन्ध स्थापित किए। इसी तरह समाज के व्यक्तियों ने सामूहिक भोज में जमीकंद का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया तथा भोजन में 25 पदार्थों तक सीमित करने की मर्यादा की। शिविर में अनेक बच्चों ने टी.वी. नहीं देखने एवं अंडे से बनी वस्तुएँ नहीं खाने का संकल्प ग्रहण किया।

इन्द्रगढ़- आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में सुमेरगंजमण्डी में निःशुल्क चिकित्सा शिविर 24 जनवरी 2010 को आयोजित हुआ। शिविर में कान, नाक, गला, सिर, मुख एवं कैंसर रोग के परामर्श तथा जांच हेतु जयपुर के विशेषज्ञ चिकित्सक आमंत्रित थे। चिकित्सकों ने आधुनिक उपकरणों एवं नवीन तकनीक द्वारा लगभग 400 रोगियों की जांच कर उन्हें निःशुल्क औषधि प्रदान की। -पारसकुमार जैन, अध्यापक, इन्द्रगढ़

उदयपुर- श्री विनय भाणावत ने अपने सुपुत्र चि. धीरज के विवाह में दहेज के रूप में मात्र एक रुपया एवं श्रीफल लेकर विवाह का आदर्श उपस्थित किया। उन्होंने यह प्रेरणा अपने समधी श्री गहरीलाल जी वया, मुम्बई से ग्रहण की।

बेगूँ (चित्तौड़गढ़)- शासनप्रभाविका मेवाड़सिंहनी महासती श्री यशकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में 17 फरवरी 2010 को मुमुक्षु गुंजन पालड़ेचा ने 23 वर्ष की वय में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की है।

भरतपुर- गोपालगढ़ मौहल्ला, भरतपुर में नवनिर्मित रत्न स्वाध्याय भवन का उद्घाटन 25 फरवरी 2010 को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा द्वारा सफेद रिबन की गांठ खोलकर किया गया। इस अवसर पर श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजू जी सुराणा-बैंगलोर ने श्राविकाओं को आयम्बिल व्रत की साधना प्रारम्भ करने की प्रेरणा की। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा ने युवकों का मार्गदर्शन किया।

पुणे- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिश्रेष्ठ श्री प्रेममुनि जी म.सा., श्री जितेशमुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं विदुषी महासती श्री सुवर्णप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 10 दिवसीय जीवन-जागृति शिक्षा संस्कार शिविर 19 से 28 अप्रेल 2010 तक तालेरा गार्डन, मार्केट यार्ड, पुणे-411037 में आयोजित है। 10 से 25 वर्ष तक के छात्र-छात्राएँ शिविर हेतु श्री महेन्द्र गांधी, 9822844455 से सम्पर्क करें।

अकोला (मेवाड़)- श्री मधु ज्ञान-प्राप्ति ज्योति सेवा केन्द्र द्वारा 2008 में आयोजित सामायिक सूत्र प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है।

-राजकुमार तातेड़, 9214546113

बधाई/चुनाव

जोधपुर- प्रोफेसर (डॉ.) सोहनराज तातेड़ को न्यू एज इंटरनेशनल विश्वविद्यालय

यू.एस.ए. द्वारा डी.लिट. (शिक्षा) उपाधि प्रदान की गई तथा राष्ट्रीय समता स्वतंत्रता मंच ने ''राष्ट्रीय समरसता एक्सीलेन्सी एवार्ड'' से सम्मानित किया गया। पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझनूं-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके डॉ. तातेड़ सम्प्रति जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर हैं।

जयपुर- श्रीमती बबिता जैन ने राजस्थान विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र

से 'सराक आचार : श्रावकाचार-इतिहास और पुरातत्त्व के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. पी.सी. जैन, निदेशक-जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के निर्देशन में पूरा किया।

जोधपुर- श्री अमित जी भण्डारी सुपुत्र श्रीमती सरला-श्री राजेश जी भण्डारी (सचिव-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर) की एच.डी.एफ.सी. बैंक, जोधपुर में डिप्टी मैनेजर पद से ब्रांच मैनेजर पद पर पावटा ब्रांच में पदोन्नति हुई है।

नागपुर- सुश्री मयूरी पुत्री श्री नरेन्द्रकुमार कटारिया ने राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

नागपुर विद्यापीठ द्वारा वर्ष 2009 में आयोजित स्नातक केमिकल इंजीनियरिंग परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आप जगत काकाजी से विश्रुत श्री मोहनलाल जी कटारिया की पौत्री एवं शासन सेवा समिति के सदस्य श्री महेन्द्रकुमार जी कटारिया की भतीजी हैं। सुश्री मयूरी के जीवन पर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. का प्रभाव है और वे नित्य कई नियम ग्रहण करती हैं। वर्तमान में पूना में

स्थित Thermax कम्पनी में कार्य हेतु अनुबंधित है।

पीपाड़ सिटी- आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस के दिन रूपासती महिला मण्डल व बहू-मण्डल के संयुक्त चुनाव हुए, जिसमें पुष्पा मेहता अध्यक्ष, रेखा लुणावत उपाध्यक्ष, आशा जी ओस्तवाल मंत्री, स्नेहलता जी मुथा सहमंत्री तथा वैजयन्ती जी कटारिया कोषाध्यक्ष मनोनीत हुई हैं।

बजरिया- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बजरिया-सवाईमाधोपुर के 31 जनवरी 2010 को सम्पन्न चुनावों के अनुसार श्री गणपतलाल जी जैन (धणोली) को अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन (बरवाड़ा) को उपाध्यक्ष, श्री रूपनारायण जी जैन को मंत्री, श्री महेन्द्रकुमार जी जैन (सूरवाल) को सहमंत्री तथा श्री प्रेमचन्द जी जैन (पचाला) को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

सिरसा- सिरसा श्री संघ का प्रधान श्री प्रेम कुमार नाहटा को बनाया गया। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ उपप्रधान-श्री जनकराज जैन, उपप्रधान-श्री अजय कुमार जैन, महासचिव- श्री वेदप्रकाश जैन, सचिव- श्री मनीत कुमार जैन, खजांची-श्री जनकराज बंसल, प्रेस प्रवक्ता- श्री ललितकुमार जैन को नियुक्त किया गया।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती बिदामदेवी जी बाफना का

24 फरवरी 2010 को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका थीं। ज्ञानक्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। बाफना परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

सूरत- तपस्विनी, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कंचनकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री

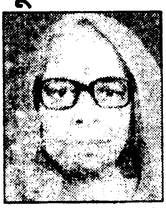

बालचन्द जी श्रीश्रीमाल का 68 वर्ष की वय में संलेखना संथारापूर्वक 29 फरवरी 2010 को समाधिमरण हो गया। आपने 24 जनवरी को महासती शांतिकंवर जी म.सा. से तिविहार संथारे के तथा 29 जनवरी को महासती सुशीलाकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान किए। अन्तिम तीन दिनों में उन्होंने

दीक्षित होने की भावना भी सबके समक्ष प्रकट की। आपका जीवन सहज, सरल, कर्त्तव्यनिष्ठ भावनाओं से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री सम्पतराज जी श्रीश्रीमाल, पुत्रियाँ श्रीमती लाडकंवर जी रांका, श्रीमती पिस्ता देवी जी भलावत, श्रीमती सुशीलादेवी जी संचेती, श्रीमती मंजूदेवी जी चोरडिया तथा सुपौत्र राजकमल व अक्षय का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अमलनेर- तप-आराधिका, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सुमनबाई जी धर्मपत्नी

श्री ज्ञानमल जी कोठारी का 68 वर्ष की वय में आयम्बिल व्रत में 3 फरवरी 2010 को निधन हो गया। आप अपने सौहार्द स्वभाव और आत्मीयपूर्ण व्यवहार से सबका मन जीत लेती थीं। आपने 43 वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य का नियम लिया। आपके रात्रि-भोजन त्याग, जमीकंद एवं लिलोती आदि का त्याग था। आपने एक साथ 500 आयम्बिल किए, 250 उपवास, 5 पचोला, 2 चोले, 20 तेले, 32 बेले, एकान्तर तप आदि दीर्घ तपस्याएँ की। आप वीरपिता श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल की बहिन थी।

जयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीचन्द जी गोलेच्छा पुत्र स्व. श्री सिरहमल जी

गोलेच्छा का 79 वर्ष की वय में 5 फरवरी 2010 को निधन हो गया। आपने पर्युषण पर्व पर स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ प्रदान की थीं। आप अपने पीछे पुत्र श्री निर्मल कुमार और दिलीप कुमार गोलेच्छा का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- संघ-अनुरागी सुश्रावक श्री सम्पतराज जी लोढ़ा का 24 फरवरी 2010

को देहावसान हो गया। आप ज्ञानक्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। सादा जीवन उच्च विचार की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहते थे।

केकड़ी- समाज के प्रेरक स्तम्भ, वयोवृद्ध सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी लोढ़ा का 22 जनवरी 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती भंवरबाई धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्द जी कोठारी का

स्वर्गवास 8 फरवरी 2010 को हो गया। आपका जीवन कर्मठ सेवाभावना, विनम्रता आदि गुणों से सुरभित था। आपका सम्पूर्ण परिवर गुरु भगवन्तों के प्रति समर्पित था। आप अपने पीछे पुत्र श्री त्रिलोकचन्द जी, मोहनलाल जी, झबरचन्द जी, अभयकुमार जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- श्रीमती चंचलदेवी खींचा धर्मपत्नी श्री जौहरीलाल जी खींचा का

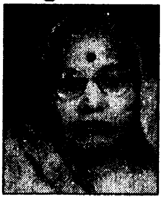

हृदयगति रुकने से 82 वर्ष की वय में 19 जनवरी 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका थीं और विपश्यना ध्यान की वर्षों से साधिका रहीं। आप श्री एन.के.खींचा, अतिरिक्त निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग राजस्थान की माताजी थीं।

जलगाँव- सरलमना सुश्रावक श्री जवरीलाल जी कांकरिया पुत्र श्री मगराज जी

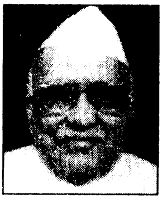

कांकरिया का 22 जनवरी 2010 को 92 वर्ष की वय में 38 घंटे के चौविहार संथारापूर्वक समाधिमरण हुआ। आपका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय संयम व समर्पण का प्रतीक था तथा सरलता, मानवता, सहिष्णुता, उदारता आदि गुणों से ओतप्रोत था। आपकी सभी संत-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे सुसंस्कारित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जलगाँव- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पदमावती जी लुंकड़ धर्मपत्नी स्व. श्री

नथमल जी लुंकड़ (पूर्व अध्यक्ष-श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ, जलगाँव) का 90 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आप धर्मप्रेमी, सेवाभावी, मृदुभाषी, वात्सल्यमूर्ति श्राविका थीं। आप नियमित सामायिक, त्याग, प्रत्याख्यान के साथ स्वाध्याय भी करती थीं। आपके नाम से सौ. पदमावती लुंकड़ कन्याशाला स्थापित है, जिसमें 1200 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

701 श्री दिलीप जी सिसोदिया, पुरानी धान मंडी, भीलवाड़ा (राजस्थान)
702 श्री मीठालाल जी भंसाली, श्री नाथ बिल्डिंग, सुल्तान पेट, बेंगलोर (कर्नाटक)
703 श्री संजीव जी कोठारी, हरी मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
704 श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, मालगोदाम रोड़, बाड़मेर (राजस्थान)
705 श्रीमती लीना महेन्द्र जी जैन, चिपलुन (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12407 Shri Devang N Shah ji, Kawadiguda, Hyderabad (A.P.)
12408 Shri H. Vimal Chand ji Pitaliya, Secunderabad(A.P.)
12409 Shri Hitesh Kumar ji Chonodiya, Secunderabad (A.P.)
12410 Shri Sumat Kumar ji Dafariya, Secunderabad (A.P.)
12411 Smt. V.Kiran ji Bagmar,Himayat Nagar,Hyderabad (A.P.)
12412 Shri Rajendra ji Nahar, Alwal, Secunderabad (A.P.)
12413 Shri Dilip Kumar ji Dhariwal,Malak pet,Hyderabad (A.P.)
12414 Shri Navratanji Karnawat,PanBazar,Secunderabad (A.P.)
12415 Shri KishoreChandji Jogad,ChatriNaka,Hyderabad (A.P.)
12416 Shri MahaveerChandji Daga,Turab Nagar,Hyderabad (A.P.)
12417 Shri Ganeshmalji Pitalia, Murseerabad, Hyderabad(A.P.)
12418 Shri DhanpatRajji Balghat,Mylargadda,Secunderabad (A.P.)
12419 Shri VinodKumar ji Munot,Sulthan Bazar, Hyderabad (A.P.)
12420 Shri Rakesh ji Lunawat, Sai Colony, Hyderabad (A.P.)
12421 Shri Ashwin ji Golecha, Barijara Hills, Hyderabad (A.P.)
12422 Shri Rajesh Kumar ji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
12423 Shri Sanjay Kumar ji Kothari, Malakpet, Hyderabad (A.P.)
12424 Shri Manak Chand ji Anchalia, Secunderabad (A.P.)
12425 Shri Prem Chand ji Bagmar, Kachiguda, Hyderabad (A.P.)
12426 Shri Jayanti Lal ji Jain,Pot Market, Secunderabad (A.P.)
12427 Shri D. K. Jain ji, Bughambas pet, Hyderabad (A.P.)
12428 Shri Sampat Raj ji Munot, Pot Market, Secunderabad (A.P.)
12429 Shri Sanjay ji Mehta, Bank Street, Koti, Hyderabad (A.P.)
12430 Shri Premchandji Barmecha,Issamia Bazar,Hyderabad(A.P.)

12431 Shri Rajesh Kumar ji Tated, Hyderabad (A.P.)
12432 Smt. ShantiDevi ji Chhajed,Sulthan Bazar,Hyderabad (A.P.)
12433 Shri Poonam Chand ji Kotecha, Hyderabad (A.P.)
12434 Shri Ashok Kumar ji Singhvi, Malakpet, Hyderabad (A.P.)
12435 Shri Sumer Chand Lodha, Gowliguda, Hyderabad (A.P.)
12436 Shri Prakash Chand ji Lodha, Hyderabad (A.P.)
12437 Shri ManishKumarji Kothari,M.G.Road,Hosur (Karnataka)
12438 Shri Sunil Kumar ji Kothari, Bangalore (Karnataka)
12439 Smt. Sobha ji Tated,Sikh Village, Secunderabad (A.P.)
12440 Shri Mohanlal ji Kankaria, Hyderabad (A.P.)
12441 Shri RameshChandji Taprawat, Himayat Nagar, Hyderabad
12442 Shri Shantilal ji Badola, Moosapet, Hyderabad (A.P.)
12443 Shri Amit Kumar ji Jain, Yousufguda, Hyderabad (A.P.)
12444 Shri Koshal Chand ji Chordia, Shop No. 9, Hyderabad (A.P.)
12445 Shri SurendarKumarji Gandhi,Akbar Bagh,Hyderabad(A.P.)
12446 Shri Ashok Kumar ji Nabriya,Chaitanypuri,Hyderabad(A.P.)
12447 Shri Arvind Kumar ji Bhandari,Nallakunta,Hyderabad (A.P.)
12448 Shri Sunil Kumar ji Kothari, Hyderabad (A.P.)
12449 Shri Vinay Kumar ji Aambad, Kadra Bagh, Jalana(M.H.)
12450 Shri AshokChandji Tated,Farhat Nagar,Hyderabad (A.P.)
12451 Shri Indermal ji Chopra, Huderguda, Hyderabad (A.P.)
12452 Shri Ramesh Chand ji Gandhi, Murseerabad, Hyderabad
12453 Shri AbhayKumar ji Chordia,Begum Bazar,Hyderabad (A.P.)
12454 Shri Nawalkishore ji Bafna,Tilak Nagar,Hyderabad (A.P.)
12455 Shri MahandraKumar ji Nabriya,Malakpet,Hyderabad (A.P.)
12456 Shri Babulal ji Pokarna,Ram Nagar Cross Road, Hyderabad
12457 Shri Lalit Kumar ji Gugalia, Kothapet Village, Hyderabad
12458 Shri Karanmal ji Ramwat, Esamiya Bazar, Hyderabad
12459 Shri Amar Chand ji Singhi, Kachiguda, Hyderabad (A.P.)
12460 Shri MohanLal ji Deshlahara,Tar Bund, Secunderabad(A.P.)
12461 Shri Anand Raj ji Bagmar,Himayat Nagar,Hyderabad (A.P.)
12462 Shri Teekam Chand ji Kothari, ABIDS, Hyderabad (A.P.)
12463 Shri Praveen Kumar ji Lunawat, Secunderabad (A.P.)
12464 Smt. Kalpna ji Surana, RTC X Road, Hyderabad (A.P.)

12465 Shri Ramesh ji Jain, Jublli Hills, Hyderabad (A.P.)
12466 श्री अनुपम जी सोनी, 194, भगवती नगर प्रथम, करतारपुरा, जयपुर (राजस्थान)
12467 Shri D. K. Jain ji, T. Nagar, Chennai (Tamilnadu)
12468 Shri Swaroop Chand ji Lalwani, Chennai (Tamilnadu)
12469 Shri J. Motilal ji Jain, Chennai (Tamilnadu)
12470 श्री बंशीलाल जी मुणोत, मालीपुरा, रालेगाँव, यवतमाल (महाराष्ट्र)
12471 श्रीमती कनीनिका जैन,110 गायत्री नगर ए,महारानी फार्म,दुर्गापुरा, जयपुर (राजस्थान)
12472 श्री वत्सल जी मोदी, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान)
12473 श्री अनुपम जी मेहता, गुलाब नगर, खेमे का कुआँ, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12474 श्री नेमीचन्दजी ललवानी,दिग्विजय नगर,खेमे का कुआँ,पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12475 श्री अभय जी जैन, दिग्विजय नगर, खेमे का कुआँ, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12476 सौ. सूचिता जी पारख, गोलछा मार्ग, सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)
12477 Smt. Pratibha ji Jain, Andheri (West) Mumbai (M.H.)
12478 श्री रिखबराज जी जैन (कांकरिया), क्लॉथ मर्चेन्ट, भाटापारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)
12479 श्री शांतिलाल जी कांकरिया, सहेली कलेक्शन, बोरसी रोड, आदर्श नगर, दुर्ग (छ.ग.)
12480 डॉ. प्रकाश जी हींगड़, शुगन निवास, 24, रेजीडेन्सी रोड़, उदयपुर (राजस्थान)
12481 श्री कैलाशचन्द जी मोदी, शाहपुरा मौहल्ला, सांखला गली, ब्यावर, अजमेर (राज.)
12482 श्री विमलचन्द जी छाजेड़, 3-त-60, रतन दुग्गड़ मार्ग, जवाहर नगर, जयपुर (राज.)
12483 Shri Birdhi Chand ji Lodha, Golwad, Navsari (Gujrat)
12484 श्री गौतम जी बेढा, ओसवाल अपार्टमेन्ट, एच.एम. रोड, जामनगर (गुजरात)
12485 श्री नरेन्द्र चन्द्र जी चतुर्वेदी, गोर्वधन विला, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, उदयपुर (राज.)
12487 Shri Aditya ji Kankaria, Banglore (Karnataka)
12488 Shri Champa Lal ji Lodha, Chennai (Tamilnadu)
12489 श्री प्रवीण कुमार जी बाफणा, गुरु हस्ती कृपा, अम्बिका नगर, पालनपुर (गुजरात)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12404 श्री माँगीलाल जी मूथा, होली धडा रोड, पीपाड़सिटी, जोधपुर (राजस्थान)
12405 सौ. नितल जी नाहर, लोढ़ा भवन कॉलोनी, सटाणा रोड, मालेगाँव, नाशिक (महाराष्ट्र)
12406 श्री शान्तिलाल जी जैन, ओसवाली मौहल्ला, किशनगढ़-मदनगंज, अजमेर (राज.)
12486 श्रीमती शकुन्तला जी जैन, नरसिंह कॉलोनी, वार्ड नं. 18, गंजखेरली, अलवर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

2100/- श्री वर्धमान जी कोठारी, कोटा, अपनी सुपुत्री सौ.कां. निधि संग कुणाल (सुपुत्र श्री अरूण कुमार जी लोढ़ा, मूल निवासी जोधपुर, हाल मुकाम अहमदाबाद) का शुभविवाह 6 फरवरी, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1111/- श्री हेमन्त कुमार जी जैन, चित्तौड़गढ़, श्री केवलचन्द जी-श्रीमती मनोहर देवी जी जैन (पारख), अजीत कॉलोनी-जोधपुर द्वारा आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1111/- श्रीमती ज्ञानकंवर भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री अजीतराज जी भण्डारी, जोधपुर, अपने पड़पौत्र भाविक भण्डारी सुपुत्र श्रीमती चन्द्रिका-प्रवीण भण्डारी (सुपौत्र श्रीमती उषा-पदमराज भण्डारी) के जन्मोत्सव पर स्वर्ण-निसरनी चढ़ने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री सौभाग्यमल जी, धर्मचन्द जी जैन, कुश्तला-सवाईमाधोपुर, श्री सुरेशचन्द जी जैन के पंचायत समिति, सवाईमाधोपुर के डॉयरेक्टर पद पर निर्वाचित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती उर्मिला-सुन्दरलाल जी सालेचा, जोधपुर, अपने सुपुत्र चि. सुर्मिल संग सौ. कां. स्वाति का शुभ विवाह 16 फरवरी, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री शीतल प्रसाद जी, राहुल जी जैन, हिण्डौनसिटी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन-वन्दन एवं सेवा में उपस्थित होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती आनन्द कंवर जी सुराणा, ब्यावर, श्री कैलाशचन्द जी सुराणा की पावन स्मृति में भेंट।

1100/- वीरपिता श्री बस्तीमल जी अमित कुमार जी श्री श्रीमाल, शिमोगा महासती श्री संगीता जी म.सा. के दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सरस्वतीबाई जी तालेड़ा, कोप्पल, सप्रेम भेंट।

1000/- श्री विश्वम्भरनाथ जी मोदी, राजेन्द्रनाथ जी मोदी, भूपेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, श्री इन्द्रनाथ जी मोदी की पुण्यतिथि पर भावांजलि स्वरूप भेंट।

1000/- श्री विश्वम्भरनाथ जी मोदी, राजेन्द्रनाथ जी मोदी, भूपेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, श्रीमती सरदारकंवर जी मोदी की पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप भेंट।

1000/- श्री मदनलाल जी पारख, मैसर्स शांति मेडिकल स्टोर्स, पो. अतरिया बाजार, जिला-राजनांदगांव(छत्तीसगढ़), सप्रेम भेंट।

916/- अध्यक्ष-श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ, भड़गाँव सप्रेम भेंट।

555/- श्री महेन्द्रमल जी श्रीमती ललिता जी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, चि. अभिषेक जी एवं प्रियदर्शनी जी गांग की शादी की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

511/- श्री शांतिचन्द जी कांतिचन्द जी बोहरा, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री आसुलाल जी बोहरा (सिहंपोल) की 7 मार्च शीतला सप्तमी को 19वीं पुण्यतिथि पर भेंट।

501/- श्री चंचल जी, निर्मल जी, विमल जी भण्डारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के जोधपुर में दर्शन लाभ लेने की खशी में भेंट।

501/- श्री पदमराज जी श्रीमती विमला जी सुराणा (जोधपुर वाले), जयपुर, अपने वैवाहिक जीवन के दिनांक 28/02/2010 को 49 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री पदमराज जी सुराणा (जोधपुर वाले), जयपुर, श्रीमती सोहनकँवर जी भंडारी धर्मपत्नी स्व. श्री हुकमराज जी भंडारी का दिनांक 25/01/2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- लड्डूलाल जी हरकचन्द जी जैन (चौरू वाले), सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. मुकेश कुमार जी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री लड्डूलाल जी रतनलाल जी जैन (कुस्तला वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री राजेश जी जैन के शुभविवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजेश जी भण्डारी-सरला जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री अमित जी भण्डारी की **HDFC BANK,** पावटा शाखा जोधपुर में ब्रांच मैनेजर पद पर पदोन्नति होने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री मदनलाल जी मैनाबाई जी बैद, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त के शताब्दी जन्म-दिवस पर पालनपुर में पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री मदनलाल जी मैनाबाई जी बैद, चेन्नई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का शताब्दी वर्ष आध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाये जाने पर एवं सन् 2010 नूतन वर्ष पर मांगलिक श्रवण के उपलक्ष्य में।

500/- श्री सज्जनराज जी बिदामकँवर जी सांखला, बैंगलोर, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि संत वृन्द के शताब्दी वर्ष पर पालनपुर में दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री निर्मल कुमार जी दिलीप कुमार जी गोलेच्छा, जयपुर, श्री मोतीचन्द जी गोलेच्छा पुत्र स्व. श्री सिरहमल जी गोलेच्छा का दिनांक 5/02/2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

500/- श्री शांतिलाल जी, बुद्धिप्रकाश जी, जितेश कुमार जी जैन (एण्डवा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर चि. पदम का शुभविवाह सौ.कां. मोहिनी के संग दिनांक 07/02/2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- देवेन्द्रनाथ जी मोदी-श्रीमती कमला जी मोदी, जोधपुर, अपनी सुपौत्री लोरी सुपुत्री श्री लोकेन्द्रनाथ मोदी-ऋतु जी मोदी के जन्म दिनाँक 31.01.2010 के शुभ प्रसंग पर भेंट।

500/- श्रीमत ऋषभा जी कर्नावट एवं दिलीप महेन्द्र जी कर्नावट, जयपुर, श्रीमान् जसवन्तमल जी कर्नावट की दिनांक 12.02.2010 को 22वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ को प्राप्त साभार

50000/- श्री पी.एस. सुराणा, चेन्नई, सहायतार्थ।

2000/- श्री ओसवाल जैन संघ, तिवरी, पर्युषण सहायतार्थ।

आगामी पर्व

चैत्र कृष्णा 14	रविवार	14.03.2010	चतुर्दशी
चैत्र कृष्णा 30	सोमवार	15.03.2010	पक्खी
चैत्र शुक्ला 7	सोमवार	22.03.2010	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 8	मंगलवार	23.03.2010	अष्टमी
चैत्र शुक्ला 13	रविवार	28.03.2010	भगवान महावीर जन्म कल्याणक
चैत्र शुक्ला 14	सोमवार	29.03.2010	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 15	मंगलवार	30.03.2010	आयंबिल ओली पूर्ण
प्र. वैशाख कृष्णा 8	मंगलवार	06.04.2010	अष्टमी
प्र. वैशाख कृष्णा 14	मंगलवार	13.04.2010	चतुर्दशी एवं पक्खी

आचार्य हस्ती की प्रेरणा से स्थापित असाम्प्रदायिक सामायिक एवं स्वाध्याय संघों की गतिशीलता

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा द्वारा श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित होने के अनन्तर उनके द्वारा अभिव्यक्त विचार)

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. दक्षिण भारत में पधारने और विचरण करने वाले प्रथम स्थानकवासी आचार्य थे। दक्षिण भारत तथा दक्षिण भारतीय धर्म-पिपासुओं के लिए यह बड़े ही सौभाग्य की बात रही कि अत्यन्त विषम विहार तथा अगणित परीषहों को सहते हुए आचार्य श्री का दक्षिण भारत में पधारना हुआ। अपने प्रवास में उन्होंने जगह-जगह असाम्प्रदायिक सामायिक-स्वाध्याय संघों की स्थापना की प्रेरणा दी। उन संघों में श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ ने विशेष प्रगति की है; ऐसा मुझे इस संघ की निरन्तर बढ़ती हुई उत्साहवर्द्धक गतिविधियों को देखकर लगता है। इससे पता चलता है कि आचाय श्री हस्ती के अनन्त उपकारों का आकलन हमें संघीय सीमाओं के बाहर भी करना चाहिए। उनके सम्प्रदायातीत व साधनामय व्यक्तित्व के चुम्बकीय प्रभाव और प्रेरणा से देशभर में अनेक सामायिक, स्वाध्याय, ज्ञान-ध्यान, सेवा और साधना के प्रकल्प गतिमान हैं। शताब्दी वर्ष में उनका लेखा-जोखा करना भी संघ, समाज व जैन एकता की दृष्टि से आवश्यक है।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

● Excellent Bond Strength ● Greater resistance to Corrosion ● Superior Weldability ● Excellent Ductility and High Bendability ● Uniform properties throughout length ● Enhanced Resistance to Fire ● Ability to withstand Earthquakes ● Bigger savings in steel consumption (almost 18%) ● Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

IS:1786 ISI

SURANA™ TMT RE-BARS — yes, the best

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

Prithvi Exchange®

Authorized Dealer II

BEST RATES IN INDIA

WESTERN UNION MONEY TRANSFER

* Send Money abroad
* Drafts / Swift / TT...

- We buy and sell Foreign Currencies, Travellers Cheques and Prepaid Foreign Currency Cards at attractive prices.
- We do Fund Transfer abroad - T.T.Swift etc.
- We issue Foreign Currency drafts.
- We deal in more than hundred currencies.
- Free Door Step Service.
- Western Union Money Transfers.
- Travel Insurance.

Chennai :	Bangalore :	Hyderabad :	Goa :
(044) - 4343 4242	(080) - 22103267	(040) - 2341 4333	(0832) - 2231 190
2855 3185	22103714	2341 4777	2425 212

For online rates 24x7 - www.prithvifx.com

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि ''Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund'' योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
3. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
4. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
5. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
6. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
7. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
8. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
9. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B. Budhmal Bohra
No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) • Tel. 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 3 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मार्च, 2010 ★ चैत्र, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

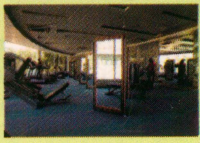

Other Projects:

- Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
- Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**

H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131

Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।